



नेपाल सरकार
वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालय
वन विभाग



कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि, २०७३

(वन विभागका महानिर्देशकबाट स्वीकृत मिति २०७३/५/२०)



भाद्र, २०७३

बिषय सूची

| | |
|---|----|
| परिचय | १ |
| १. सामुदायिक तथा कबुलियती वन विकास कार्यक्रम..... | ४ |
| क) कबुलियती वन कार्यक्रम | ४ |
| १.१. बहुउद्देश्यीय जडीबुटीको वृक्षारोपण | ४ |
| १.२. बाँस/निगालो राईजोम रोपण तथा वितरण | ४ |
| १.३. एक क्लष्टर एक उत्पादन: अमृसो, भूईकटहर, अलैची, बाँस तथा अन्य गैरकाष्ठ वनपैदावार..... | ४ |
| १.४. गैरकाष्ठ वन पैदावार विरुवा खरिद तथा रोपण अनुदान सहयोग (निगालो, बाँस, तेजपात, ओखर, अम्रिसो, आदि) | ४ |
| १.५. संजालहरूलाई अनुदान सहयोग..... | ४ |
| १.६. कबुलियती वन समूहको विधान, कार्ययोजना तथा जीविकोपार्जन सुधार योजना तयारी | ४ |
| १.७. कबुलियती वन समूहको विधान तथा कार्ययोजना पुनरावलोकन (जीविकोपार्जन सुधार योजना समेत)..... | ५ |
| १.८. ग्रामीण पूर्वाधार/भू-संरक्षण सामग्री सहयोग | ५ |
| १.९. डालेघाँसको वीड खरिद, रोपण तथा वितरण | ५ |
| १.१०. एम.आई.एस.निर्माण तथा अपग्रेड..... | ५ |
| १.११. नवीनतम कार्यक्रम | ५ |
| १.१२. वृत्तचित्र उत्पादन | ५ |
| १.१३. समूह/समितिका पदाधिकारीहरूलाई नेतृत्व विकास र लेखा तालिम | ५ |
| १.१६. कबुलियती वनमा जग्गा विकास तालिम (किसानलाई ४ दिने)..... | ६ |
| १.१७. जडीबुटी/गैरकाष्ठ वन पैदावार विरुवा खेती विस्तार तथा व्यवस्थापन तालिम (किसान) - जिल्लास्तरमा | ६ |
| १.१८. कबुलियती वनमा जग्गा विकास पुनर्ताजगी तालिम तथा जग्गा विकास कार्यक्रम..... | ६ |
| १.१९. आयआर्जन तथा सीप विकास तालिम (माहुरीपालन तथा धार निर्माण, बायोब्रिकेट, बाँस-निगालो, अल्लो/अन्य) | ६ |
| १.२०. कबुलियती वन संजालसशक्तिकरण..... | ६ |
| १.२१. वन व्यवस्थापन तालिम (किसान, स्थलगत, २ दिने) | ६ |
| १.२२. कार्यक्रम समन्वय बैठक (केन्द्र, जिल्ला, क्लष्टर)..... | ६ |
| १.२३. कार्यक्रम कार्यदल बैठक (केन्द्र, जिल्ला)..... | ६ |
| १.२४. सामाजिक परिचालनमा संलग्नहरूको द्वैमासिक बैठक..... | ६ |
| १.२५. अनुगमन, मूल्यांकन र सफलताको कथा संकलन तथा पुस्तिका प्रकाशन | ७ |
| १.२६. वार्षिक प्रतिवेदन तथा बोस र आदि प्रकाशन..... | ७ |
| १.२७. समूहको तथ्यांक संकलन तथा एमआईएसमा अपलोड | ७ |
| १.२८. कबुलियती वन राष्ट्रिय पुरस्कार..... | ७ |
| १.२९. उत्कृष्ट समूह पुरस्कार..... | ७ |
| १.३०. कबुलियती वन क्षेत्र, क्लष्टर, समूहको पहिचान र गठन | ७ |
| १.३१. सामाजिक परिचालन सेवा (समूह परिचालनको अनुदान सहयोग) | ७ |
| १.३२. सामाजिक परिचालन सुपरिवेक्षण (जिल्ला सुपरभाईजरबाट)..... | ८ |
| १.३३. निश्क्रिय तथा पुराना समूह शसक्तिकरण अनुदान..... | ८ |
| १.३४. प्राविधिक सहयोग सेवा (वन प्राविधिक सहायकबाट)..... | ८ |
| १.३५. कबुलियती वन सहकारी गठन, संचालन र अनुदान | ८ |
| १.३६. आयआर्जन, सीप तथा उद्यम विकास (सकृय समूह) | ९ |
| १.३७. समूहको वचत तथा परिचालन सेवा (ग्रामीण वित्त सहायकबाट)..... | ९ |
| १.३८. पशु स्वास्थ्य सेवा तथा वंश सुधार सहयोग | ९ |
| १.३९. घाँस विकास तथा डालेघाँस रोपण | ९ |
| १.४०. अनफार्म आयआर्जनको लागि अनुदान सहयोग | ९ |
| १.४१. खोरिया फाँडानी क्षेत्रमा नमूना आयआर्जन कार्यक्रम..... | ९ |
| १.४२. चितवन राष्ट्रिय निकुन्ज/पर्सा वन्यजन्तु आरक्षको मध्यवर्ती क्षेत्रमा भएका कबुलियती वन व्यवस्थापन..... | ९ |
| १.४३. जिल्लास्तरीय सरोकारवालाको सहभागितामा अनुगमन..... | ९ |
| १.४४. कार्यक्रम समन्वयको लागि संयुक्त अनुगमन (केन्द्रस्तर)..... | १० |
| १.४५. कार्यक्रम समन्वयको लागि संयुक्त अनुगमन (जिल्लास्तर)..... | १० |
| १.४६. जीविकोपार्जन सुधार योजना कार्यान्वयन सहयोग समूह अनुदान (रु.५०,०००/- प्रति समूह, प्रस्तावना अनुसार)/लघु उद्यम विकास तथा आयआर्जन).... | १० |

| | |
|--|----|
| क) सामुदायिक वन कार्यक्रम..... | १० |
| १.४७. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह गठन, दर्ता, कार्ययोजना तयारी तथा वन हस्तान्तरण प्रक्रियामा सहजीकरण..... | १० |
| क. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह गठन तथा दर्ता प्रक्रियामा सहजीकरण..... | १० |
| ख. सामुदायिक वन कार्ययोजना तयारी तथा वन हस्तान्तरण प्रक्रियामा सहजीकरण | १० |
| १.४८. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको कार्ययोजना नवीकरणमा सहयोग (गरीब, महिला र दलित लक्षित जलवायु परिवर्तन अनुकूलन योजना) | १० |
| १.४९. वैज्ञानिक वन व्यवस्थापनको अवधारणा सहित सामुदायिक वनको कार्ययोजना पुनरावलोकन | ११ |
| क. सामुदायिक वन क्षेत्र छनौट | ११ |
| ख. सामुदायिक वन व्यवस्थापन कार्ययोजना तयारी (परिमाजन), स्वीकृति तथा कार्यान्वयन | ११ |
| १.५१. कार्ययोजना कार्यान्वयन (Management Field Operation etc) (२१५.४०.१८४) | १२ |
| अनुगमन तथा प्रगति प्रतिवेदन | १२ |
| लागत अनुमान तथा खर्च गर्ने तरिका | १२ |
| १.५२. सामुदायिक वन भित्र कबुलियती वन समूह गठन, प्रविधि हस्तान्तरण तथा आयमूलक कार्यक्रममा सहयोग (प्याकेज कार्यक्रम) | १२ |
| १.५३. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहका विपन्न वर्गलाई आयमूलक कार्यमा सहयोग | १३ |
| १.५४. सामुदायिक वन कार्ययोजनाको प्राविधिक परीक्षण (क्षेत्रीय वन निर्देशनालय मार्फत)..... | १३ |
| १.५५. सामुदायिक वन र निजी आवादी छुट्टयाई सिमांकन गर्ने | १३ |
| १.५६. समुदायमा आधारित सिमसार व्यवस्थापन (प्याकेज)..... | १३ |
| १.५७. नमुना (नतिजा तथा विधि) प्रदर्शनी प्लट स्थापना (TSI/SLI) | १४ |
| १.५८. समुदायमा आधारित वन व्यवस्थापन तथा सम्बर्द्धन सम्बन्धी सामग्री/औजार खरिद (वस्तुगत र नगद अनुदान)..... | १४ |
| १.५९. एक सामुदायिक वन एक उद्यम विकास कार्यक्रम..... | १४ |
| १.६०. सामुदायिक वनमा जडीवुटी खेती विस्तार | १४ |
| १.६१. सामुदायिक वनमा पर्यापर्यटन विकास सहयोग प्याकेज | १४ |
| १.६२. हरित रोजगारमुखी उद्यम विकास/लघु उद्योग विकास सहयोग | १५ |
| १.६३. चौडापाते वनमा रुपान्तरण (Forest Conversion) | १५ |
| १.६४. वाँस व्यवस्थापन कार्यक्रम..... | १५ |
| १.६५. जडीवुटी पहिचान तथा उपयोगिता सम्बन्धी तालिम | १५ |
| १.६६. सामुदायिक वन व्यवस्थापन स्थलगत अभ्यास..... | १५ |
| १.६७. वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन अभ्यास/ दिगो वन व्यवस्थापन स्थलगत कोचिङ | १५ |
| १.६८. स्कूल वन हरियाली विकास कार्यक्रम | १५ |
| १.६९. जडीवुटी दिगो संकलन, भण्डारण तथा प्रशोधन तालिम | १६ |
| १.७०. गैरकाष्ठ वन पैदावार व्यवस्थापन तथा उद्यम विकास तालिम..... | १६ |
| १.७१. अल्लो र खोटो संकलन एवं व्यवस्थापन तालिम..... | १६ |
| १.७२. वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन प्रचार प्रसार सामग्री निर्माण | १६ |
| १.७३. इलाका/सेक्टर स्तरिय सामुदायिक वन अन्तर्क्रिया तथा योजना तर्जुमा गोष्ठी | १६ |
| १.७४. वार्षिक योजना तर्जुमा गोष्ठी..... | १६ |
| १.७५. जिल्लास्तरीय प्रगति समीक्षा बैठक..... | १६ |
| १.७६. लैङ्गिक तथा सामाजिक समावेशीकरण प्रवर्धन तालिम (१५ जना २ दिने)..... | १७ |
| १.७७. रेकर्ड किपिङ, तथा लेखा सुदृढीकरण कोचिङ..... | १७ |
| १.७८. सामुदायिक वन द्रन्ड व्यवस्थापन गोष्ठी | १७ |
| १.७९. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको विधान तथा कार्ययोजना कार्यान्वयन अनुशिक्षण तथा सहयोग..... | १७ |
| १.८०. सामुदायिक वन भित्र कबुलियती वन कार्ययोजना कार्यान्वयन अनुशिक्षण | १७ |
| १.८१. सामुदायिक वन समन्वय तथा अन्तर्क्रिया बैठक | १७ |
| १.८२. टिम बिल्डिङ गोष्ठी | १७ |
| १.८३. महिला वन प्राविधिकहरुबीच अन्तर्क्रिया | १८ |
| १.८४. जिल्लाबाट संचालन भएका सम्पूर्ण कार्यक्रमहरुको वार्षिक प्रगति पुस्तिका प्रकाशन | १८ |
| १.८५. वन वातावरण, वन्यजन्तु एवं जैविक विविधता सम्बन्धी विभिन्न दिवस, महोत्सव तथा समारोह | १८ |
| १.८६. सामुदायिक वनको वुलेटिन तयारी तथा प्रकाशन..... | १८ |
| १.८७. सामुदायिक वनको आधार र सूचकांकहरु उत्पादन तथा प्रकाशन..... | १८ |
| १.८८. सा.व.मा वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन कार्यविधि/निर्देशिका तयारी तथा प्रकाशन | १८ |
| १.८९. सामुदायिक तथा कबुलियती वन उपभोक्ताहरुमा संचालित उद्यमहरुको सर्भेक्षण तथा अध्यावधिक (Inventory and documentation)..... | १८ |
| १.९०. सामुदायिक वनमा भएको वृक्षारोपणको तथ्याङ्क अध्यावधिक..... | १९ |

| | |
|---|----|
| १.११. सामुदायिक वनको तथ्यांक व्यवस्थापन सहजीकरण | १९ |
| १.१२. सा.व.अन्तर्राष्ट्रियस्तर अध्ययन केन्द्र स्थापना सम्भाव्यता अध्ययन | १९ |
| १.१३. सा.व.को वैज्ञानिक व्यवस्थापनबाट उत्पादन भएका काठ दाउरा घाटगद्दी निर्माण व्यवस्थापन तारवार सहित | १९ |
| १.१४. सा.व. पत्रकारिता पुरस्कार | १९ |
| १.१५. कार्यक्रम कम्पाईल/पुनरावलोकन/पृष्ठपोषण/कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि तयारी | १९ |
| १.१६. गणेशमान सिंह पुरस्कार | १९ |
| १.१७. उत्कृष्ट सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह पुरस्कार..... | १९ |
| १.१८.सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको अनुगमन र निरीक्षण..... | २० |
| १.१९. सञ्चालित कार्यक्रमको निरीक्षण तथा पृष्ठपोषण | २० |
| १.१००. फर्निचर (दराज, सोफासेट, कुर्सी, टेबुल) तथा उपकरण (जि.पि.एस, कम्प्युटर, फ्याक्स, प्रिन्टर) आदि खरिद..... | २० |
| २. राष्ट्रिय वन विकास तथा व्यवस्थापन कार्यक्रम | २१ |
| २.१.जलजला क्षेत्र व्यवस्थापन कार्यक्रम (रोल्या)..... | २१ |
| २.२. रामारोशन क्षेत्र व्यवस्थापन कार्यक्रम..... | २१ |
| २.३. (क) पश्चिम पहाड भूपरिधिस्तरीय कार्यक्रमको सम्भाव्यता अध्ययन..... | २१ |
| २.४. जिल्ला वन कार्यालय भवन, आवास भवन तथा सेक्टर एवम इलाका भवन निर्माण (अधुरो भवन पूरा गर्ने र कम्पाउण्ड वाल निर्माण समेत)..... | २१ |
| २.५. औजार तथा उपकरण खरिद एवं वितरण | २१ |
| २.६. धार्मिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक स्थलमा संरचना निर्माण तथा हरियाली विकास (वनस्पति सूचना केन्द्र समेत)..... | २२ |
| २.७. वन ईजलास ब्यवस्थापन | २२ |
| २.८. वन अतिक्रमण हटाई व्यवस्थापन | २२ |
| २.९. आखेटोपहार संरक्षण, भण्डारण तथा व्यवस्थापन | २३ |
| २.१०. चक्ला वन व्यवस्थापन कार्ययोजना कार्यान्वयन | २३ |
| २.११. सल्लेरी वन व्यवस्थापन कार्ययोजना कार्यान्वयन (धनकुटा)..... | २३ |
| २.१२. साभेदारी/चक्ला वन कार्ययोजना तयारी तथा कार्यान्वयन..... | २३ |
| २.१३. साभेदारी वन व्यवस्थापन (कार्ययोजना तयारी, सघन वैज्ञानिक व्यवस्थापन, कार्ययोजना कार्यान्वयन)..... | २३ |
| २.१४. सिमसारको अध्ययन प्रतिवेदन छपाई तथा प्रकाशन..... | २४ |
| २.१५. सिमसार क्षेत्रको संरक्षण तथा व्यवस्थापन..... | २४ |
| २.१६. सिमसार क्षेत्रको कार्यक्रम कार्यान्वयन सहजीकरण..... | २४ |
| २.१७. संरक्षित वन व्यवस्थापन कार्ययोजना तयारी (IEE अध्ययन) र सिगासे क्षेत्र संरक्षित वन समेत | २४ |
| २.१८. धनुषाधाम संरक्षित वन कार्यक्रम | २४ |
| २.१९.पंचासे क्षेत्रको उपजलाधार व्यवस्थापन कार्ययोजना कार्यान्वयन..... | २४ |
| २.२०. संरक्षित वन व्यवस्थापन कार्ययोजना कार्यान्वयन | २५ |
| २.२१. समुदायमा आधारित संरक्षणमुखी वन व्यवस्थापन तथा जैविक विविधता संरक्षण..... | २५ |
| क) वृक्षारोपण कोचिड..... | २५ |
| ख) चोरी शिकारी नियन्त्रणका लागि सुराकी परिचालन | २६ |
| ग) विद्यालय स्तरमा नयाँ इको क्लब गठन, परिचालन र सञ्चालन सहयोग..... | २६ |
| घ) सामुदायिक वनमा विपन्न तथा गरिबमुखी आयआर्जन कार्यक्रम सञ्चालन | २६ |
| ड) खाली पर्ति, सडक किनारा, सामुदायिक वनमा वृक्षारोपण..... | २६ |
| च) समारोह सञ्चालन | २६ |
| २.२२. वैकल्पिक उर्जा, पूर्वाधार विकास, संस्कृति संरक्षण, सुशासन एवं क्षमता अभिवृद्धि कार्यक्रम | २६ |
| २.२३. संरक्षित वन कार्यक्रम प्रवर्धन..... | २६ |
| २.२४. संरक्षित वन कार्यक्रम संचालन सम्बन्धी खर्च | २६ |
| २.२५. साभेदारी, संरक्षित वन, ब्लक फरेष्ट लगायत कार्ययोजना कार्यान्वयन सहजीकरण तथा अनुगमन (केन्द्र) | २६ |
| २.२६. जिल्ला वनक्षेत्र समन्वय समिति (DFSCC) स्थापना, संचालन तथा सुदृढीकरण | २६ |
| २.२७. ढलापडा काठ दाउरा संकलन तथा व्यवस्थापन | २७ |
| २.२८. वन डढेलो व्यवस्थापन तथा नियन्त्रण कार्यक्रम | २७ |
| २.२८.१.वन डढेलो नियन्त्रण तथा व्यवस्थापन योजना कार्यान्वयन | २७ |
| २.२८.२. आगलागी नियन्त्रण सम्बन्धी सचेतना कोचिङ्ग तथा सञ्जाल निर्माण तथा सुरक्षानिकायसंग समन्वय, परिचालन | २७ |
| २.२८.३. अग्निनियन्त्रण सम्बन्धी सामग्री, उपकरण तथा सामान खरिद तथा वितरण | २८ |
| २.२८.४. वन डढेलो नियन्त्रण, सचेतना, तथा अग्नि रोधक सामग्री व्यवस्थापन तालिम (समूहस्तर, कर्मचारीस्तर)..... | २८ |
| २.२८.५. Forest Fire Control Roomव्यवस्थापन | २८ |
| २.२८.६. जिल्ला स्तरमा सरोकारवालाहरूसंग अन्तर्क्रिया..... | २९ |
| २.२८.७. जिल्ला स्तरमा सेना प्रहरी प्रशासन, नागरिक समाजसंगको समन्वय तथा सहकार्यमा डढेलो नियन्त्रण..... | २९ |

| | |
|---|----|
| २.२८.८. गांउवस्ती नजिक डढेलो जोखिमयुक्त वन क्षेत्रको Burning material व्यवस्थापन..... | २९ |
| २.२८.९ वन डढेलो नियन्त्रण कार्यमा प्रभावकारी भूमिका निर्वाह गर्ने समूह, संस्था, निकायलाई पुरस्कृत गर्ने | २९ |
| २.२८.१० वन डढेलो सम्बन्धी प्रचार प्रसार (एफ.एम, स्थानीय पत्रिका)..... | २९ |
| २.२८.११ वन डढेलो सम्बन्धी प्रचार प्रसार (पम्पलेट, डिस्क्ले)..... | २९ |
| २.२८.१२ अग्नी रेखा निर्माण/सफाई/मर्मत | २९ |
| २.२८.१३ डढेलो नियन्त्रणका लागि सुख्खा वन क्षेत्रमा पानी पोखरी निर्माण तथा ताल तलैया संरक्षण..... | २९ |
| २.२८.१४ डढेलो नियन्त्रणका लागि सुराकी/स्वयंसेवक परिचालन..... | २९ |
| २.२९. सशस्त्र वन रक्षक प्रशिक्षक तथा चोरी नियन्त्रण तालिम | २९ |
| २.३०. गोष्ठी तथा कार्यशाला (वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन तालिम समेत)..... | ३० |
| २.३१. वन अपराधको सूचना संकलन | ३० |
| २.३२. अतिक्रमण नियन्त्रण समन्वय समिति/सुरक्षा निकाय बैठक तथा अन्य संस्थागत समन्वय र सरोकारवालासंग सहजीकरण | ३० |
| २.३३. मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व व्यवस्थापन सहयोग तथा वन्यजन्तु उद्धार | ३० |
| २.३४. समुदायमा आधारित सालक/समुदायमा आधारित रेडपाण्डा संरक्षण कार्यक्रम | ३० |
| २.३५. रेडपाण्डा संरक्षण कार्यक्रम | ३० |
| २.३६. संरक्षण, प्रचारप्रसार अभियान (लिमी) | ३० |
| २.३७. Data Backup and share system (कम्प्युटरमा Backup system जडान गर्ने)..... | ३० |
| २.३८. अनुगमन तथा मूल्यांकन प्रतिवेदन तयारी | ३० |
| २.३९. पर्यटकीय क्षेत्र प्रवर्धन कार्यक्रम | ३० |
| २.४०. अतिक्रमण तथा चोरीनिकासी नियन्त्रणकालागि गस्ती परिचालन | ३१ |
| २.४१. टिमुर संरक्षण तथा व्यवस्थापन | ३१ |
| २.४२. वन व्यवस्थापन कार्ययोजना कार्यान्वयन | ३१ |
| २.४३. वन वन्यजन्तु सम्बन्धी मुद्दाको अनुसन्धान, तहकिकात तथा मुद्दा दायरी | ३१ |
| २.४४. जिल्लाको अतिक्रमण क्षेत्रको तथ्यांक अध्यावधिक गर्ने | ३१ |
| २.४५. सहभागीतामूलक अतिक्रमण, चोरी कटान तथा चोरी शिकार नियन्त्रण | ३१ |
| ३. वृक्ष सुधार, वृक्षारोपण तथा निजी वन कार्यक्रम | ३२ |
| ३.१. विरुवा उत्पादन (विभिन्न प्रकारका रुख, काष्ठ तथा बहुउपयोगी प्रजाति) | ३२ |
| ३.२. ठूलो विरुवा उत्पादन (५ इन्च र ८ इन्च वा ४ इन्च र ७ इन्चको पोलिब्याग) | ३२ |
| ३.३. उच्च प्रविधियुक्त नर्सरी स्थापना तथा स्तरोन्नति | ३२ |
| ३.४. नर्सरी मर्मत, सुदृढीकरण र व्यवस्थापन | ३२ |
| ३.५. एक घर एक रुख कार्यक्रम | ३२ |
| ३.५.१. स्थान र घरघुरी छनौट | ३३ |
| ३.५.२. विरुवा उत्पादन, खरिद | ३३ |
| ३.५.३. विरुवा ढुवानी | ३३ |
| ३.५.४. वृक्षारोपण क्षेत्रमा होर्डिङ्ग बोर्ड | ३३ |
| ३.५.५. अनुगमन, अभिलेखीकरण तथा प्रतिवेदन तयारी | ३३ |
| ३.६. एक गाउँ एक वन कार्यक्रम | ३४ |
| ३.६.१. विरुवा उत्पादन र खरिद | ३४ |
| ३.६.२. विरुवा ढुवानी | ३४ |
| ३.६.३. वृक्षारोपण गरिने क्षेत्रको पहिचान, छनौट एवं सिमाना निर्धारण | ३४ |
| ३.६.४. सरोकारवालाहरूको छलफल र अन्तरक्रिया | ३५ |
| ३.६.५. वृक्षारोपण (वारवेर, गोडमेल, पुनरोपण, संरक्षण अनुदानसमेत) | ३५ |
| ३.६.६. गत आर्थिक वर्षहरूमा भएको वृक्षारोपणको गोडमेल, पुनरोपण, संरक्षण र व्यवस्थापन | ३६ |
| ३.७. एक नगर अनेक उद्यान कार्यक्रम तथा वनस्पति उद्यान निर्माण | ३६ |
| ३.७.१. कार्यक्रम संचालन गर्न जग्गा पहिचान | ३६ |
| ३.७.२. कार्ययोजना तयारी | ३६ |
| ३.७.३. विरुवा उत्पादन/खरिद, ढुवानी, वृक्षारोपण र संरक्षण | ३७ |
| ३.७.४. अनुगमन, अभिलेखीकरण र प्रतिवेदन | ३७ |
| ३.७.५. होर्डिङ्ग बोर्ड | ३७ |
| ३.८. नदी तथा सडक किनारा वृक्षारोपण | ३७ |
| ३.९. सात (७) प्रदेशमा फलफूल जंगल स्थापना | ३७ |
| ३.१०. सामाजिक परिचालक तयारी कोचिड तथा परिचालन | ३७ |
| ३.११. तालिम तथा गोष्ठी | ३८ |
| ३.११.१. वन सामाजिक परिचालकलाई अभिमुखीकरण तालिम | ३८ |
| ३.११.२. नर्सरी नाइके तालिम | ३८ |

| | |
|--|----|
| ३.११.३. निजी वन प्रवर्द्धनको लागि सञ्जाल निर्माण तथा क्षमता अभिवृद्धि तालिम..... | ३८ |
| ३.१२. स्कूल वन हरियाली कार्यक्रम | ३८ |
| ३.१३. निजी वन विकास तथा दर्ता प्रोत्साहन र प्रचार प्रसार..... | ३८ |
| ३.१३.१. निजी वन सञ्जाल गठन तथा संस्थागत सहयोग..... | ३८ |
| ३.१३.२. निजी वन दर्ता प्रोत्साहनका लागि प्राविधिक सहयोग..... | ३९ |
| ३.१३.३. निजी वन दर्ता गर्न लाग्ने राजस्व खर्च अनुदान..... | ३९ |
| ३.१३.४. निजी वन प्रोत्साहन पुरस्कार..... | ३९ |
| ३.१४. नदी उकास जग्गामा बाँस, निगालो, अम्रिसो, नेपियर, डालेघाँस तथा अन्य आयआर्जनका विरुवा रोपण तथा संरक्षण | ३९ |
| ३.१५. नदी उकास व्यवस्थापन तथा वृक्षारोपण (सम्बन्धित खोला कमला, रतुवा र बक्राहा) | ३९ |
| ३.१६. भूकम्प प्रभावित क्षेत्रहरूमा जमिनको स्थायित्वको लागि बाँस रोपण | ३९ |
| ३.१७. उद्यम विकास अनुदान सहयोग | ३९ |
| ३.१८. उन्नत वन बीउ आयात/आपूर्ति..... | ३९ |
| ३.१९. निजी नर्सरी स्थापनाका लागि अनुदान..... | ४० |
| ३.२०. निजी नर्सरीबाट विरुवा खरिद | ४० |
| ३.२१. निजी वन प्रवर्द्धनका लागि प्रचारप्रसार सामाग्री | ४० |
| ३.२२. निजी वनको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन पुस्तिका तयारी तथा प्रकाशन | ४० |
| ३.२३. एन्ड्रोइड डिभाईसमा जि.आइ.यस. अनुप्रयोग सम्बन्धी अभिमुखीकरण तालिम | ४० |
| ३.२४. राष्ट्रिय वन सम्बर्धन गोष्ठी..... | ४० |
| ३.२५. प्रचार प्रसार सामाग्री उत्पादन प्रसारण | ४० |
| ३.२६. वेब नक्सांकन निर्देशिका/कार्यविधि तयार गर्ने | ४० |
| ३.२७. सवै किसिमको वनहरूको स्रोत सर्वेक्षण तथ्यांक विश्लेषण गर्ने वेब एप्लीकेसन तयार गर्ने..... | ४१ |
| ३.२८. सा.व., क.व. सभ्भेदारी वन, सरकारी वनको Spatial डाटाबेसलाई वेब प्रकाशन गर्ने | ४१ |
| ३.२९. नापी भएको नक्साको आधारमा वन सिमानाको अनलाईन डिजिटल नक्शा प्रकाशन गर्ने..... | ४१ |
| ३.३०. पारिस्थितिकीय प्रणालीमा आधारित अनुकूलन सम्बन्धी अध्ययन तथा अनुसन्धान..... | ४१ |
| ३.३१. सामूहिक निजी वन नमुना विकास अनुदान..... | ४१ |
| ३.३२. निजी वनको डाटाबेस अपडेट | ४१ |
| ३.३३. वन दशक प्रसार द्वैमासिक प्रकाशन सहयोग..... | ४१ |
| ३.३४. आइ.टि.विज्ञ परामर्श सेवा खरिद | ४१ |
| ४. जडीबुटी विकास कार्यक्रम..... | ४२ |
| ४.१. नर्सरी निर्माण | ४२ |
| ४.२. लोक्ता, अल्लो, अग्रेली तथा अन्य लघु वनपैदावर खेती व्यवस्थापनमा सहयोग | ४२ |
| ४.३. जडीबुटी विरुवा उत्पादन..... | ४२ |
| ४.४. जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ विरुवा रोपण/पुन:रोपण सहयोग (समुदायलाई जडीबुटी विरुवा रोपणमा सहयोग)..... | ४३ |
| ४.५. निजी जग्गामा रोपणका लागि कृषक/उद्यमी/गरिव/विपन्न वर्गलाई जडीबुटी विरुवा रोपणमा सहयोग | ४३ |
| ४.६. जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ विरुवा रोपणमा गोडमेल तथा हुर्काए बापतको रकम अनुदान..... | ४४ |
| ४.७. सकटापूर्ण अवस्थामा पुगेका जडीबुटी प्रजातिको वासस्थान संरक्षण (In-situ conservation)..... | ४४ |
| ४.८. पकेट क्षेत्र पहिचान/प्राविधिक सहायता प्रदान/Contract Farming/पकेट क्षेत्र सुदुढीकरण | ४४ |
| ४.९. जडीबुटी नमुना प्लट मर्मत तथा सञ्चालन..... | ४४ |
| ४.१०. जडीबुटी खेतीकर्ता समूह गठन र रोपण क्षेत्रको सम्भौता र कार्यान्वयन | ४४ |
| ४.११. जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ वन पैदावारको खेती, संकलन तथा व्यवसायमा संलग्न व्यक्तिहरूको संजाल निर्माण तथा सुदुढीकरण..... | ४५ |
| ४.१२. एक पकेट क्षेत्रमा एक प्रजातिको व्यवसायीकरण | ४५ |
| ४.१३. जडीबुटी सूचना केन्द्र विकास कार्यक्रम | ४५ |
| ४.१४. गैरकाष्ठ वन पैदावारमा आधारित वन उद्यम विकास सहयोग..... | ४५ |
| ४.१५. सूचना प्रवाह तथा पारदर्शिता सवलीकरण | ४५ |
| ४.१६. तालिम/गोष्ठी/कोचिङ्ग/बैठक | ४५ |
| ४.१७. फोकल टिमको बैठक (जिल्ला स्तर)..... | ४५ |
| ४.१८. पकेट क्षेत्रस्तरीय फोकल टिमको बैठक | ४६ |
| ४.१९. कार्यक्रम कम्पाइल/पुनरावलोकन/ पृष्ठपोषण/कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि तयारी..... | ४६ |
| ४.२०. प्राकृतिक जडीबुटीहरूको वासस्थान संरक्षण, संकलन तथा नियमन | ४६ |
| ४.२१. पकेट क्षेत्रमा जडीबुटी खेती विस्तार..... | ४६ |
| ४.२२. जडीबुटी उद्यम/प्रशोधन प्लाण्ट तथा भण्डारण केन्द्र स्थापना तथा सञ्चालन | ४७ |

| | |
|--|----|
| ४.२३. जडीबुटी सम्बन्धी अनुगमन, समन्वय, प्रचार प्रसार..... | ४७ |
| ४.२४. व्यवसायी, विज्ञ तथा लगानीकर्ता संयुक्त अवलोकन भ्रमण, अन्तर्क्रिया | ४७ |
| ४.२५. महत्वपूर्ण जडीबुटी प्रजातिको स्टार्टस अध्ययन..... | ४७ |
| ४.२६. उच्च हिमाली जडीबुटी संकलन/प्रशोधन केन्द्र स्थापना | ४८ |
| ४.२७. जडीबुटी उद्यम स्थापना (अन्य)..... | ४८ |
| ५. नेपाल व्यापार एकीकृत रणनीति (वन कार्यक्रम)..... | ४९ |
| ५.१. माउ रुख पहिचान र किटान (तेजपात) | ४९ |
| ५.२. नमुना नतिजा तथा विधि प्रदर्शनीप्लेट स्थापना(TSI/SLI) | ४९ |
| ५.३. संजालहरूलाई अनुदान सहयोग..... | ४९ |
| ५.४. जडीबुटी भण्डारण अनुदान सहयोग..... | ४९ |
| ५.५. जडीबुटी बजारीकरण अनुदान सहयोग..... | ४९ |
| ५.६. फोकल टिम गठन | ४९ |
| ६. वन्यजन्तु संरक्षणका लागि क्षेत्रीय सहयोग प्रवर्धन | ५० |
| ६.१. बासस्थान प्रवर्धन हुने किसिमको वन व्यवस्थापन र पुनरोत्पादन संरक्षण/वृक्षारोपण कार्यक्रम | ५० |
| ६.२. अपराधी तथा सन्दिग्ध व्यक्तिहरूको विस्तृत डाटा बेस (सम्भव भएमा फोटो समेत) अध्यावधिक गर्ने..... | ५० |
| ६.३. घाइते वन्यजन्तु संरक्षण तथा पुनः स्थापना कार्यक्रम | ५० |
| ६.३.१. केज निर्माण | ५० |
| ६.३.२. वन्यजन्तुको लागि पानी पोखरी निर्माण | ५० |
| ६.३.३. आकस्मिक उपचार तथा आहार खर्च | ५० |
| ६.३.४. वन्यजन्तु उद्धार | ५० |
| ६.४. मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व व्यवस्थापन..... | ५० |
| ६.५. वन्यजन्तु अपराध नियन्त्रण सम्बन्धी युवाहरूको संजाल निर्माण तथा परिचालन | ५१ |
| ६.६. आखेटोपहार संरक्षण, भण्डारण तथा व्यवस्थापन | ५१ |
| ६.७. सुराकी परिचालन र जानकारी खरिद..... | ५१ |
| ६.८. वनजन्य अपराध, सूचना, दसी प्रमाण संकलन, अनुसन्धान तथा मुद्दा दायरी | ५१ |
| ६.९. समन्वय बैठक..... | ५१ |
| ६.१०. वन्यजन्तु संरक्षण प्रोत्साहन पुरस्कार..... | ५१ |
| अनुसूची-१ | ५२ |
| अनुसूची:-२..... | ५३ |
| अनुसूची:-३..... | ५४ |
| अनुसूची:-४ | ५५ |

परिचय

देशको भण्डै ४५ प्रतिशत भू भागमा फैलिएको वन क्षेत्र मुलुकको सवैभन्दा ठूलो प्राकृतिक सम्पदा हो । वन क्षेत्र एकातिर कृषि प्रणालीको आधारस्तम्भ, जलस्रोतमा आधारित उर्जा विकासको आधार तथा स्वच्छ पानीको मुहान, औद्योगिक कच्चा पदार्थको स्रोत, पर्यटकीय गन्तव्य तथा जैविक विविधताको भण्डार हो भने अर्कातिर भौतिक पूर्वाधार विकास निर्माणलाई स्थायित्व प्रदान गर्दै विपद् न्यूनीकरण तथा जलवायु परिवर्तनका नकारात्मक असरबाट जोगाउन समेत यसले महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गर्दै आएको छ । ग्रामीण क्षेत्रमा बसोबास गर्ने समुदायको दैनिक जीवनयापनका लागि नभई नहुने घाँस, दाउरा, काठ, जडीबुटी, गैरकाष्ठ वन पैदावार र वातावरणीय सेवाहरु वन क्षेत्रबाट प्राप्त भईरहेका छन् । वनक्षेत्रले अझै पनि करिब ७० प्रतिशत जनतालाई खाना पकाउने दाउरा र भण्डै ४० प्रतिशत पशु आहारा उपलब्ध गराउँदै आएको छ । वनक्षेत्रबाट प्रत्यक्ष रुपमा वार्षिक करिब दुई अर्ब राजस्व संकलन हुनुका साथै अमूल्य अप्रत्यक्ष सेवाहरु निरन्तर उपलब्ध हुँदै आएको छ ।

नेपालले अपनाएको सामुदायिक वन, गरिबका लागि कबुलियती वन र साभेदारी वनजस्ता समुदायमा आधारित वन व्यवस्थापन पद्धति, संरक्षित क्षेत्र व्यवस्थापन प्रणाली, जलाधार व्यवस्थापन तथा भू परिधि स्तरको व्यवस्थापन कार्यहरु राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा अत्यन्त सफल कार्यक्रमका रुपमा परिचित छन् । हालसम्म १९.६५ लाख हेक्टर वनक्षेत्र (करिब ३३ प्रतिशत) लाई समुदायको सक्रिय सहभागितामा व्यवस्थापन र उपयोग गर्न करिब २९,५०० स्थानीय समूहलाई हस्तान्तरण गरिएको छ । जैविक विविधता संरक्षणको दृष्टिकोणले महत्वपूर्ण क्षेत्रहरुलाई संरक्षित क्षेत्र तथा संरक्षित वनको स्थापना गरी विश्वकै दुर्लभ र महत्वपूर्ण बन्जन्तु, विविध परिस्थितिकीय प्रणाली र जैविक विविधताको संरक्षण गरिदै आएको छ । संरक्षित क्षेत्रको संरक्षण एवं व्यवस्थापनका लागि संरक्षित क्षेत्र वरिपरि मध्यवर्ती क्षेत्र घोषणा गरी जनसहभागितामा आधारित विभिन्न कार्यक्रम संचालन गरिदै आएका छन् । भू-परिधि स्तरीय संरक्षणको अवधारणा अनुरूप संरक्षण मैत्री विकासलाई संस्थागत गर्ने विभिन्न प्रयासहरु पनि गरिएका छन् ।

नेपाल सरकारको त्रिवर्षीय योजना, वन सम्बन्धी सार्वजनिक नीति एवम् बजेट तथा कार्यक्रम मार्फत वन विभागको मुख्य उद्देश्य र कार्यहरुलाई मूर्तरुप दिन यस विभाग अन्तर्गतका ७४ वटा जिल्ला वन कार्यालयहरुबाट सालबसाली रुपमा विभिन्न कार्यक्रमहरु संचालित छन् । वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालय मार्फत अंगीकार गरिने नीति तथा कार्यक्रमहरुलाई प्रभावकारी रुपमा कार्यान्वयन गर्न वन विभाग तथा अन्तरगतका जिल्ला वन कार्यालयहरुको ठूलो भूमिका रहेकोछ । यी कार्यक्रमहरुबाट वन विभागकापरिलक्षित उद्देश्यहरु पूरा गर्नको लागि मुख्य रुपमा वनको संरक्षण, दिगो व्यवस्थापन र सदुपयोगमा टेवा पुग्ने कार्यक्रमहरु जस्तै राष्ट्रिय वन विकास तथा व्यवस्थापन कार्यक्रम, सामुदायिक तथा कबुलियतीवन विकास कार्यक्रम, जडीबुटी विकास कार्यक्रम, वृक्ष सुधार, वृक्षारोपण तथा निजी वन कार्यक्रम, बन्जन्तु संरक्षणका लागि क्षेत्रीय सहयोग प्रबर्द्धन कार्यक्रम, नेपाल व्यापार एकीकृत रणनीति कार्यक्रम र बहुसरोकारवाला वन कार्यक्रमहरु संचालनमा रहेका छन् । प्रस्तुत कार्यक्रमहरु मार्फत सरकारद्वारा व्यवस्थित वनको वैज्ञानिक व्यवस्थापन, सामुदायिक र साभेदारी वनद्वारा स्थानीय जनताको जीविकोपार्जनमा सुधार, चक्ला वनको उत्पादकत्वमा वृद्धि, धार्मिक वन र संरक्षित वनको विकास, निजी एवम् सार्वजनिक जग्गामा वन विकास, अग्नि नियन्त्रण, वनमा हुने अतिक्रमण तथा चोरी शिकारी नियन्त्रण जस्ता विषयहरुको सम्बोधन भई वन कर्मचारीहरुको क्षमता अभिवृद्धि र जिल्ला वन कार्यालयहरुको भौतिक संरचना विकासमा समेत जोड पुग्ने विश्वास लिईएको छ ।

विगतका वर्षहरुमा कार्यक्रम/आयोजना पिच्छे फरक फरक कार्यविधि जारी गरिएकोमा नेपाल सरकारको आ. व. २०७१/७२ को बजेट वक्तव्यमा उल्लेख भएका नीति तथा कार्यक्रमहरुलाई वन विभाग अन्तरगतका निकायहरुले एकिकृत तथा प्रभावकारी रुपमा कार्यान्वयन गर्न सहयोग पुरयाउने उद्देश्यले वन विभागले “**वन विभाग अन्तरगत संचालित कार्यक्रमहरुको कार्यान्वयन कार्यविधि, २०७१**”देखि एकीकृत रुपमा तयार तथा स्वीकृत गरी जारी गरिएको छ । यस कार्यविधिमा अस्पष्ट भएका वा द्विविधा भएका विषयमा प्रचलित सार्वजनिक खरिद ऐन २०६३, सार्वजनिक खरिद नियमावली २०६४, आर्थिक कार्यविधि ऐन २०५५ र आर्थिक कार्यविधि नियमावली २०५६, जिल्ला दररेट र वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालयबाट स्वीकृत नर्मस प्रयोग गर्न सकिनेछ । संचालनरत कार्यक्रमहरुको नियमित अनुगमन गरी मासिक एवम् चौमासिक रुपमा विभागमा प्रतिवेदन पेश गर्नुपर्नेछ । साथै कार्यक्रम सम्पन्न भए पश्चात विस्तृत प्रतिवेदन पेश गर्नुपर्नेछ । यस्ता प्रतिवेदनमा कार्यक्रम संचालनको प्रारम्भिक अवस्थादेखि सम्पन्न भएको अवस्थाका फोटो डकुमेण्टेशन र स्थलगत रुपमा संकलन गरिएका जि. पि. एस. का तथ्यांक एवम् जि. आई. एस. नक्शासमेत समावेश गर्नुपर्नेछ । साथै आवधिक प्रगतिका सूचक र खर्च विवरण समेत समावेश गर्नुपर्नेछ । यस कार्यविधिमा वन विभागबाट संचालित विभिन्न कार्यक्रमहरुमा समावेश भएका साभ्ना क्रियाकलापहरुलाई एउटै क्षेत्र (Theme) मा राखी कार्यान्वयन गर्ने तरिका र खर्च एवम् प्रगति सम्बन्धी विवरणहरु समावेश गर्नेगरी प्रस्तुत गरिएको छ । यस बाहेक साभ्ना नभएका क्रियाकलापहरुलाई छुट्टै शीर्षकमा राखिएको छ । यसर्थ जिल्लामा संचालित विभिन्न कार्यक्रमहरुमा समावेश भएका क्रियाकलापहरु यी साभ्ना Theme मा उल्लेख भए अनुसार कार्यान्वयन गर्नुपर्नेछ ।

आ.व.२०७३/७४ मा वन विभाग अन्तर्गत ६ वटा वन विकास कार्यक्रमहरु संचालन हुन्छन् ।

१) सामुदायिक तथा कबुलियती वन विकास कार्यक्रम

विगत तीन दशक अर्थात् वन क्षेत्रको गुरुयोजना लागू भए देखि नै नेपाल सरकारको पहिलो प्राथमिकताको कार्यक्रम वा (P1) कार्यक्रमको रूपमा विगतमा विभिन्न अन्तर्राष्ट्रिय दाताहरूको आर्थिक सहयोग समेतमा ७४ वटै (मुस्ताङ्ग बाहेक) जिल्लाहरूमा सामुदायिक वन विकास कार्यक्रम संचालन हुँदै आईरहेको छ । शुरुमा वनको संरक्षण गरी स्थानिय जनताको वन पैदावारको दैनिक आधारभूत आवश्यकता पूरा गर्ने ध्येयका साथ संचालित यो कार्यक्रम क्रमशः गरिवी न्यूनिकरण, जीविकोपार्जनमा सुधार, सुशासन, जलवायु परिवर्तन, समावेशीताका सवालहरूलाई सम्बोधन गर्दै आईरहेको छ । हाल करिब २० हजार समूह मार्फत १८ लाख भन्दा बढी क्षेत्रफल व्यवस्थापन भई लगभग २४ लाख स्थानिय घरधुरी लाभान्वित भई स्थानिय रोजगारीमा योगदान पुऱ्याईरहेको छ ।

कबुलियती वनको संरक्षण तथा व्यवस्थापनबाट वनको हैसियतमा सुधार तथा स्थानिय जनताको आयआर्जनमा वृद्धि गर्ने लक्ष्यका साथ यो कार्यक्रम आ.व.२०४९/५० देखि नै संचालित छ । विगतमा केही जिल्लाहरूमा संचालित यो कार्यक्रम सिकाई र सफलताको आधारमा विस्तार गरी यस आ.व. देखि ३९ जिल्लामा संचालित छ । विगतमा विभिन्न दातृ संस्थाहरूको सहयोगमा संचालन भएको यस कार्यक्रम गत आ.व. देखि महत्व दिई नेपाल सरकारको आन्तरिक श्रोतबाट संचालित छ । यस कार्यक्रमबाट ७,१७९ समूहबाट ४१,५१३ हे. वन व्यवस्थापन ६९,२४५ घरधुरी लाभान्वित भई रहेका छन् ।

यस कार्यक्रम अन्तर्गत सामुदायिक तथा कबुलियती वन समूह गठन, हस्तान्तरण तथा पुनरावलोकन, स्थलगत अभ्यास, क्षमता तथा सिप विकास तालिम, गोष्ठी तथा अन्तक्रिया, तथ्यांक संकलन तथा अध्यावधिक, सामुदायिक वनमा वैज्ञानिक व्यवस्थापन, क.व. समूहमा अन फार्मबाट आय आर्जनको लागि अनुदान सहयोग, पशु स्वास्थ्य सेवा तथा वंश सुधार सहयोग, कबुलियती वन सहकारी गठन, संचालन र अनुदान, क.वनमा वृक्षारोपण, समूहबाट उत्पादित विरुवा खरिद, वितरण तथा रोपण, बाँस निगालो राईजोम लगायत, डालेघाँस/घाँस, जडीबुटी तथा बहुउद्देशीय विरुवा खरिद तथा वितरण आदि मुख्य कार्यक्रमको रूपमा संचालन हुनेछन् ।

२) राष्ट्रिय वन विकास तथा व्यवस्थापनकार्यक्रम

नेपालको वन क्षेत्रको वैज्ञानिक ढंगबाट संरक्षण, विकास र व्यवस्थापन गर्दै काष्ठ र गैरकाष्ठ वन पैदावारको उत्पादकत्व र उत्पादन बढाएर स्थानीय र राष्ट्रिय आवश्यकता परिपूर्ति एवं विदेश निकासी गरेर स्थानीय तथा राष्ट्रिय आय बढाउन सकिन्छ । वन संरक्षण र व्यवस्थापनमा जनसहभागिता अभिवृद्धि गरी संरक्षण र विकासलाई प्रभावकारी बनाउनुका साथै यसबाट स्थानीय जनतालाई रोजगारीको अवसरहरू सृजना गरी जीविकोपार्जनमा सुधार ल्याउन योगदान पुऱ्याउन सकिन्छ । यिनै सम्भावनाहरूलाई मध्येनजर गरी वन प्रशासनको स्थापनासँगै विभिन्न कार्यक्रमहरू संचालन गर्दै वनको संरक्षण तथा विकासका कृयाकलापहरू संचालन हुँदै आईरहेका छन् ।

राष्ट्रिय वन विकास तथा व्यवस्थापन कार्यक्रम वन विभाग अन्तर्गत सरकारद्वारा व्यवस्थित वनमा संचालित छ । यस कार्यक्रम अन्तर्गत मुख्यरूपमा वन तथा जैविक विविधताको संरक्षण, वनको सम्वर्धन तथा व्यवस्थापन र वन पैदावारको सदुपयोग तथा आपूर्तिको कार्यक्रमहरू पर्दछन् । जडीबुटी कार्यक्रम लागू नभएका जिल्लाहरूमा जडीबुटी तथा अन्य गैरकाष्ठ वनपैदावारको संरक्षण तथा व्यवस्थापन समेत यसै कार्यक्रमबाट हुँदै आईरहेको छ । सबै जिल्लाहरूमा वन कार्ययोजना तयारी तथा अध्यावधिक गरी सोही अनुसारका कृयाकलाप संचालन गरिँदै आईरहेको छ । हालसम्म तराईका ११ वटा जिल्लाहरूमा २३ वटा साभेदारी वन व्यवस्थापन योजना स्वीकृत भई ६२,८२८ हेक्टर वन क्षेत्रमा व्यवस्थापन गर्ने कार्यहरू भईरहेको छ ।

३) वृक्ष सुधार, वृक्षारोपण तथा निजी वन कार्यक्रम

वन विभागको २०७१ सालमा भएको साँगठनिक पुनःसंरचना अनुसार स्थापित वन सम्वर्धन महाशाखा महत्वपूर्ण रुख प्रजातिको अनुवंशिक स्रोतको संरक्षण र उपयोग गर्ने उद्देश्यले वनेको राष्ट्रिय वन वीउ आयोजना (१९८२), वृक्षसुधार कार्यक्रम (१९९४) र वृक्षसुधार तथा वन सम्वर्धन इकाई (१९९८) कै स्तरोन्नत रूप हो ।

वन सम्वर्धन महाशाखामार्फत संचालन हुने वृक्षसुधार, वृक्षारोपण तथा निजी वन कार्यक्रम अन्तर्गत आधारभूत वृक्षसुधार कार्यक्रम जस्तै वन वीउ संकलन तथा वितरण, वन वीउ उत्पादन प्रयोगशाला संचालन, नर्सरी तथा विरुवा उत्पादन, वृक्षारोपण जस्ता कार्यक्रमहरू संचालनमा रहेका छन् । साथै, नेपाल सरकारले २०७१/७२ देखि २०८० सम्मको अवधिलाई वन दशकको रूपमा मनाउने निर्णय गरेको सन्दर्भमा उक्त कार्यक्रम यसै महाशाखामार्फत संचालित अर्को महत्वपूर्ण कार्यक्रम हो । यस कार्यक्रम एक घर एक रुख, एक गाउँ एक वन, एक नगर अनेक उद्यानलाई प्रवर्धन गर्ने लक्ष्यका साथ विविध कार्यक्रमहरू सहित संचालन गरिएको छ ।

यस महाशाखा अन्तर्गतका कार्यक्रम देशका ७४ जिल्ला वन कार्यलयहरू, ५ गोठै क्षेत्रीय वन निर्देशनालयहरू, तथा केन्द्र (वन सम्बर्धन महाशाखा) मार्फत संचालनमा छन् । वन दशक कार्यक्रम सघनरूपमा विगत २ आर्थिक वर्षमा तराईका ११ जिल्लाहरू (भूपा देखि पर्सा सम्म) मा संचालन भएकोमा आ.व. २०७३/७४ वाट तराईका १९ जिल्लामा संचालन गरिनेछ ।

४) जडीबुटी विकास कार्यक्रम

महत्वपूर्ण जडीबुटी स्रोतहरूको दीगो संरक्षण र विकासका लागि परम्परादेखि यसको संकलनवाट जीविकोपार्जन गर्दै आएका विपन्न तथा पिछडिएका वर्गलाई खेती विस्तार र उद्यम विकासमा सहभागी गराई आयआर्जनका अवसरवाट गरीबी न्यूनीकरण र समतामूलक विकासमा समेत सघाउ पुऱ्याउने सोचका साथ जडीबुटी विकास कार्यक्रम आ.व. २०६६/६७ देखि सञ्चालनमा रहेको छ । जडीबुटीको जैविक विविधता, सामाजिक र आर्थिक महत्व एवं कार्यक्रमको सम्बेदनशीलतालाई ध्यानमा राखी नेपाल सरकारद्वारा आ.व. २०६८/६९ देखि राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त (P1) कार्यक्रमको रूपमा सञ्चालन हुँदै आएको छ । विगतका वर्षहरूमा वन विभाग मातहतका १५ वटा जिल्ला वन कार्यालयहरू मार्फत कार्यक्रम सञ्चालन भईरहेकोमा यस आ.व. मा ५२ वटा जिल्लाहरूमा यो कार्यक्रम संचालनमा आउनेछ । यो कार्यक्रम जडीबुटीको बाहुल्यता रहेको मध्य तथा सुदूर पश्चिमका पहाडी तथा हिमाली जिल्लाहरूमा विशेष focus गरी सञ्चालनमा ल्याईएको छ ।

५) नेपाल व्यापार एकीकृत रणनीति वन कार्यक्रम

महत्वपूर्ण जडीबुटी तथा गैर काष्ठ वनपैदावारको दीगो संरक्षण र विकासका लागि परम्परादेखि नै यसको संकलनवाट जीविकोपार्जन निर्वाह गर्दै आएका विपन्न तथा पिछडिएका वर्गलाई खेती विस्तार र उद्यम विकासमा सहभागी गराई जडीबुटीको व्यापार व्यवसाय बढाउने र जडीबुटीको निर्यातलाई बढाई व्यापार घाटा कम गर्ने उद्देश्यका साथ आर्थिक वर्ष २०७०/७१ देखिसर्लाही र उदयपुर जिल्ला वन कार्यालयहरू मार्फत नेपाल व्यापार एकीकृत रणनीति (वन कार्यक्रम) सञ्चालन हुँदै आएको छ । साथै जडीबुटी एवं गैरकाष्ठ वन पैदावारहरूको गुणस्तर र उत्पादन परिमाणलाई प्रतिस्पर्धात्मक रूपमा अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा पहिचान गराई तिनको बिक्री मार्फत विदेशी मुद्रा आर्जन गर्ने यसको मुख्य उद्देश्य रहेको छ । जडीबुटी बिरुवा उत्पादन, माउ रुख पहिचान र किटान, निजी सार्वजनिक जग्गामा जडीबुटी रोपण अनुदान, वन उपजमा आधारित उद्यम विकास सहयोग जस्ता प्रमुख क्रियाकलापहरू यसमा समावेश गरिएका छन् ।

६) वन्यजन्तु संरक्षणका लागि क्षेत्रीय सहयोग प्रवर्धन आयोजना

बाघको वासस्थान व्यवस्थापन, नयाँ वासस्थानको पहिचान एवं विस्तार र सुधार गर्नका साथै संस्थागत रूपमा ज्ञान र क्षमता अभिवृद्धि गरी वन्यजन्तुको चोरी शिकार र अवैध व्यापार नियन्त्रण गर्ने उद्देश्यका साथ आर्थिक वर्ष २०६७/६८ देखि वन विभाग अन्तर्गतका जिल्ला वन कार्यालयहरू मार्फत सञ्चालन हुँदै आएको यो कार्यक्रम १७ जिल्लामा लागू भइरहेको छ । दक्षिण एशियामा दुर्लभ वन्यजन्तु संरक्षण र वासस्थानमा सुधार गर्नु नै वन्यजन्तु संरक्षणका लागि क्षेत्रीय सहयोग प्रवर्धन आयोजनाको लक्ष्य हो । स्वस्थ पारिस्थितिकीय प्रणालीको विकास भई सन् २०२२ मा बाघको संख्या दोब्बर पार्ने उद्देश्यलाई टेवा पुऱ्याउनु यस आयोजनाको अपेक्षित प्रतिफल हो । वन्यजन्तुको वासस्थान प्रवर्धन हुने कार्यक्रम, घाइते वन्यजन्तु संरक्षण तथा पुनः स्थापना, वन तथा वन्यजन्तु अपराध नियन्त्रण, मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व व्यवस्थापन, नियमित अनुगमन/गस्ती जस्ता प्रमुख क्रियाकलापहरू यसमा समावेश गरिएका छन् । जुन कार्यक्रमहरू चोरी शिकार तथा वन्यजन्तुको अवैध व्यापार नियन्त्रण गर्न अझ बढी उपयोगी हुनेछन् । यसवाट दुर्लभ वन्यजन्तु बाघको संरक्षणको साथसाथै समग्ररूपमा जैविक विविधताको संरक्षणमा समेत टेवा पुग्ने आशा राखीएको छ ।

१. सामुदायिक तथा कबुलियती वन विकास कार्यक्रम

क) कबुलियती वन कार्यक्रम

१.१. बहुउद्देशीय जडीवुटीको वृक्षारोपण

कबुलियती वन समूहको प्राथमिकता र उनीहरूकै सक्रिय सहभागितामा कार्ययोजना अनुसार वृक्षारोपण गरी वनको हैसियत सुधार गर्न सहभागी समूहसँग नियमानुसार विरुवा उत्पादन/खरिद सम्भौता गरी अनुदान प्रदान गरिने छ ।

गैरकाष्ठ (जडीवुटी तथा अन्य बहुउद्देशीय वन प्रजातिका) विरुवा खरिद गर्दा जिल्ला वन कार्यालय र सम्बन्धित इलाका वन कार्यालयले आवश्यक समन्वय र सहयोग गर्नु पर्नेछ । कबुलियती वन समूहको आवश्यकता र प्राविधिक छनोटमा परेका, रोपणका लागि उपयुक्त साईजका, स्थानीय वातावरणमा हुर्कन सक्ने र छिटो आयआर्जन हुने खालका विरुवाहरू छनोट गरी उत्पादन/खरिद गर्नुपर्नेछ । यसरी उत्पादन/खरिद गरिएका विरुवा कबुलियती वन/कबुलियती वन सदस्यको निजी जग्गामा रोपण गर्न सकिनेछ । कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि कबुलियती वन समूहको नाम र ठेगाना, सम्भौता भएको विरुवाको प्रजाति र संख्या, उत्पादित/खरिद विरुवा संख्या र जात, वृक्षारोपण क्षेत्रफल जस्ता विवरण संलग्न भएको प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत गर्नु पर्नेछ ।

१.२. बाँस/निगालो राईजोम रोपण तथा वितरण

बाँस, निगालोको राईजोम छनोट, खरिद, ढुवानी तथा रोपण गर्दा बहुउद्देशीय जडीवुटीको वृक्षारोपण गर्दा अपनाईने कार्यविधि अनुसार अपनाईनेछ । भूकम्पबाट क्षतिग्रस्त कबुलियती वन क्षेत्रका उपभोक्ता सदस्यको लागि प्राथमिकता दिनुपर्नेछ ।

१.३. एक क्लष्टर एक उत्पादन: अमृसो, भूईकटहर, अलैची, बाँस तथा अन्य गैरकाष्ठ वनपैदावार

एक आपसमा जोडिएका, पायक पर्ने (सामान्यतया दशसम्म) समूहहरूको एक क्लष्टर मानी एकै किसिमका पैदावार उत्पादन हुने गरी कार्य संचालन गर्नु पर्दछ । यस्ता आयमूलक कार्य संचालन गर्न आवश्यक विरुवा उत्पादन/खरिद गरी रोपण, संरक्षण गर्ने गरी अनुदान प्रदान गर्न यो कार्यक्रम सञ्चालन गरिने छ । कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात् निम्न बुदाहरू समावेश भएको प्रगति प्रतिवेदन तयार गर्नुपर्नेछ ।

- एक क्लष्टर एक उत्पादनको योजना, औचित्य
- सम्भौता गरेको कबुलियती वन समूहको नाम, ठेगाना तथा छिमेकी समूहहरूको अवस्था
- सम्भौता भएको विरुवा संख्या, उत्पादित विरुवा संख्या र जात
- वृक्षारोपण गरिएको क्षेत्रफल

कबुलियती वन समूहको उत्पादनलाई व्यवसायिक बनाउन यस कार्यक्रमको प्रस्ताव गरिएको हो । यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेटबाट क्लष्टरमा वढी भन्दा वढी क्षेत्र ढाक्ने गरी र उपभोक्ताहरूको आय आर्जनमा टेवा पुग्ने कार्यक्रममा खर्च गरिनु पर्नेछ । नमुना क्लष्टर सुदृढीकरण कार्य पनि यसै अनुसार गरिने छ । एक जिल्लामा कम्तिमा दुई वटा नमुना क्लष्टर छनोट गरी प्रदर्शनी स्थलको रूपमा विकास गर्नु पर्दछ ।

१.४. गैरकाष्ठ वन पैदावार विरुवा खरिद तथा रोपण अनुदान सहयोग (निगालो, बाँस, तेजपात, ओखर, अम्रिसो, आदि)

गैरकाष्ठ वन पैदावार विरुवा खरिद तथा रोपण गर्न विरुवा तथा राईजोम आदि छनोट, खरिद, ढुवानी तथा रोपण गर्दा बहुउद्देशीय जडीवुटीको वृक्षारोपण गर्दा अपनाईने कार्यविधि अनुसार गरिनेछ ।

१.५. संजालहरूलाई अनुदान सहयोग

कबुलियती वन संजालको संस्थागत विकास तथा क्षमता अभिवृद्धि गरी कबुलियती वन कार्यक्रमलाई देशव्यापी रूपमा सहयोग पुऱ्याउन विस्तृत योजनाको आधारमा अनुदान प्रदान गरिनेछ ।

१.६. कबुलियती वन समूहको विधान, कार्ययोजना तथा जीविकोपार्जन सुधार योजना तयारी

क्षेत्र छनोट, स्थलगत भ्रमण, सञ्चार, सर्भे तथा नक्सांकन, बैठक खाना/खाजा, भत्ता, विधान, कार्ययोजना तथा जीविकोपार्जन सुधार योजना तयारी, प्रिन्टीङ तथा वाईन्डिङमा खर्च गर्न सकिनेछ । समूहमा आवद्ध भएका घरधुरीका महिला तथा पुरुषको सहभागितामा कार्ययोजना तयार गर्नु पर्नेछ । जीविकोपार्जन सुधार योजना समावेश भएको कार्ययोजनाको पाँच प्रति तयार गर्ने रकम समेत यसै शीर्षकमा समावेश गरिएको छ । जीविकोपार्जन सुधार योजना तयार गर्दा इलाका वन कार्यालयका प्राविधिक, जे.टि.ए, समूह सहयोगी र ग्रामीण वित्तीय सहयोगीले आ-आफ्नो क्षेत्रबाट सहयोग गर्नुपर्नेछ ।

१.७. कबुलियती वन समूहको विधान तथा कार्ययोजना पुनरावलोकन (जीविकोपार्जन सुधार योजना समेत)

अवधि पुगिसकेका र कबुलियती वन समूहले पुनरावलोकनको लागि माग गरेका विधान, कार्ययोजना तथा जीविकोपार्जन सुधार योजना पुनरावलोकन गर्न यस शीर्षकको रकम खर्च गर्न सकिने। कार्य योजना नवीकरण प्रकृया तालिमको अभ्यासकै रूपमा गरिनेछ। एकदिने स्थलगत रूपमा हुने यस अभ्यासमा छनौट भएका घरधुरीका महिला पुरुष दुई जनाका दरले समावेश गराउनु पर्दछ। अन्य प्रक्रिया नयाँ कार्ययोजना तयार गर्दा अपनाईने कार्यविधि अनुसार नै गर्नुपर्नेछ।

१.८. ग्रामीण पूर्वाधार/भू-संरक्षण सामग्री सहयोग

कबुलियती वन समूहका क्लस्टर स्तरको गाउँ/वस्तीलाई लक्षित गरी साना पूर्वाधार (गोरेटो बाटो, स्कुल, वैकल्पिक उर्जा, आदि) भू-संरक्षण, पानीका मूल तथा पोखरी संरक्षण जस्ता कार्य गर्न आर्थिक अनुदान उपलब्ध गराउनेछ। यस कार्यको लागि क्लस्टरस्तरीय संजाल वा उनीहरूले छानेको कबुलियती वन समूहसँग सम्झौता गरी कार्य सम्पन्न पश्चात् समूहको खातामा रकम जम्मा गरिदिनु पर्नेछ। यसरी अनुदान उपलब्ध गराउँदा समूहको योगदान र विषयगत निकायको समन्वयलाई समेत ध्यान दिनु पर्नेछ।

१.९. डालेघाँसको बीउ खरिद, रोपण तथा वितरण

वडहर, किम्बु, काभ्रो, राईखिनियो, नेपियर, स्टाईलो आदि जस्ता स्वस्थानीय तथा परस्थानीय डालेघाँस/घाँसका बीउ, विरुवा, कटिङ्ग वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालयको स्वीकृत नर्मस् तथा जिल्ला दररेट बमोजिम उत्पादन/खरिद गरी वितरण तथा रोपणमा खर्च गर्न सकिनेछ।

१.१०. एम.आई.एस.निर्माण तथा अपग्रेड

कबुलियती वन व्यवस्थापन सूचना प्रणालीलाई अध्यावधिक, परिमार्जन तथा सुदृढ गरिनेछ। यो कार्यसेवा प्रदायक मार्फत पनि गर्न सकिनेछ। कार्य विवरण तयारी तथा सूचना संकलनका लागि भ्रमण कार्यमा पनि खर्च गर्न सकिनेछ।

१.११. नवीनतम कार्यक्रम

स्वीकृत कार्यक्रममा नतोकिएको तर जिल्लाको आवश्यकता अनुसार पहिचान गरिएको नवीन तथा सिर्जनशील कार्यलाई जिल्लाबाट नै कार्यक्रम छनौट गरी कार्यक्रम संचालन गरिनेछ।

१.१२. वृत्तचित्र उत्पादन

कबुलियती वन कार्यक्रम संचालन भएका जिल्लाहरूलाई समेट्ने गरी उत्कृष्ट तथा सफल कार्यको अनुभवी परामर्शसेवा प्रदायक मार्फत वृत्तचित्र उत्पादन गरी प्रचार प्रसार सामग्रीको रूपमा उपयोग गरिनेछ।

१.१३. समूह/समितिका पदाधिकारीहरूलाई नेतृत्व विकास र लेखा तालिम

कबुलियती वन समूहका सदस्यलाई समूहको अभिलेख व्यवस्थापन एवं ऋण तथा वचत परिचालन गर्ने कार्यमा नेतृत्व विकास गर्न तालिम दिने कार्यमा खर्च गरिनेछ।

१.१४. LFLP MIS Training

यस अन्तर्गत जिल्ला वन कार्यालयमा कार्यरत भएका कबुलियती कार्यक्रम संचालन, अनुगमन तथा रेकर्ड अध्यावधिक राख्ने र कम्प्युटर सम्बन्धी ज्ञान हासिल गरेका अधिकृत, रेन्जर, फरेष्टर, सुपरभाईजर/समूह सहयोगीलाई तीन दिनको तालिम प्रदान गर्न यो खर्च गरिनेछ।

वन विकास कार्यक्रम अन्तर्गतका केन्द्र तथा जिल्लास्तरका सबै किसिमका तालिम, गोष्ठी, अन्तक्रिया संचालन गर्दा स्वीकृत नर्मस्को अधिनमा रही संचालन गर्नुपर्नेछ। कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगति प्रतिवेदनमा निम्न बुँदाहरू अनिवार्य रूपमा समावेश गर्नु पर्नेछ :

- तालिमका विषयवस्तु, उद्देश्य, औचित्य,
- सहभागी संख्या, लिंग र तालिम अवधि,
- स्थान र मिति देखिने व्यानर सहितको सहभागीको फोटो।

१.१५. LIP Preparation Training

यस अर्न्तगत जिल्ला वन कार्यालयमा कार्यरत अधिकृत, रेन्जर, फरेष्टर, सुपरभाईजर/समूह सहयोगीलाई जीविकोपार्जन सुधार योजना सहजीकरण गर्नको लागि प्रदान गरिने चार दिने तालिममा खर्च गरिनेछ ।

१.१६. कबुलियती वनमा जग्गा विकास तालिम (किसानलाई ४ दिने)

चालु आ.व.मा हस्तान्तरण हुने/भएका कबुलियती वनका प्रत्येक परिवारका दुई जना (महिला र पुरुष) लाई कबुलियती वनको कार्यस्थलमै कबुलियती वन तथा पशु विकास कार्यक्रम सञ्चालन मार्गदर्शन, २०६६ अनुसारका सञ्चालन गर्नुपर्नेछ । तालिम सम्पन्न भएपछि कुन-कुन कार्यहरु के-कति परिमाणमा गरिएको सो को स्पष्ट उल्लेख गरी प्रतिवेदन पेश गर्नुपर्दछ ।

१.१७. जडीबुटी/गैरकाष्ठ वन पैदावार बिरुवा खेती विस्तार तथा व्यवस्थापन तालिम (किसान) - जिल्लास्तरमा

कबुलियती वन समूहको प्राथमिकताको आधारमा कार्ययोजना अनुसार जडीबुटी/गैरकाष्ठ वन पैदावार बिरुवा खेती विस्तार तथा व्यवस्थापन गर्न तीन दिनको तालिम संचालन गर्नको लागि खर्च गर्नुपर्नेछ ।

१.१८. कबुलियती वनमा जग्गा विकास पुनर्ताजगी तालिम तथा जग्गा विकास कार्यक्रम

पाँच वर्षभन्दा अगाडि हस्तान्तरण भएका कबुलियती वनका प्रत्येक परिवारका दुई जना (महिला र पुरुष) लाई कबुलियती वनको कार्यस्थलमै चार दिने जग्गा विकास तालिम कबुलियती वन तथा पशु विकास कार्यक्रम सञ्चालन मार्गदर्शन, २०६६ अनुसार गर्नु पर्नेछ । कार्य सम्पन्न भएपछि कुन-कुन कार्यहरु के-कति परिमाणमा गरिएको सो को स्पष्ट उल्लेख गरी प्रतिवेदन पेश गर्नुपर्दछ ।

१.१९. आयआर्जन तथा सीप विकास तालिम (माहुरीपालन तथा घर निर्माण, बायोब्रिकेट, बांस-निगालो, अल्लो/अन्य)

कबुलियती वन समूहहरुको प्राथमिकता र सहभागितामा आयआर्जन तथा सीप विकास तालिम संचालन गरिनेछ । माहुरीपालन, घर निर्माण, बायोब्रिकेट, बांस-निगालो, अल्लो जस्ता गैरकाष्ठ वनपैदावार विषयलाई प्राथमिकता दिनु पर्दछ । यो क्रियाकलाप अन्य सरकारी तथा गैह्रसरकारी सेवा प्रदायक बाट पनि गराउन सकिनेछ ।

१.२०. कबुलियती वन संजालसशक्तिकरण

कबुलियती वन संजालका जिल्ला/क्लष्टर/अन्तरसमूह/समूह सदस्यहरुको क्षमता अभिवृद्धि र संस्थागत सुदृढीकरणका लागि तालिम संचालन गर्नुपर्नेछ ।

१.२१. वन व्यवस्थापन तालिम (किसान, स्थलगत, २ दिने)

हुकिसकेका वन/रुख भएका र वन व्यवस्थापन तालिम प्राप्त नगरेका कबुलियती वन समूहका सदस्यलाई फिल्ड स्तरमा दुई दिने तालिम संचालन गर्ने ।

१.२२. कार्यक्रम समन्वय बैठक (केन्द्र, जिल्ला, क्लष्टर)

कार्यक्रम समन्वय समिति बैठक वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालयका सचिव, स्थानीय विकास अधिकारी र इलाका वन कार्यालयका प्रमुखले क्रमशः केन्द्र, जिल्ला र क्लष्टरको अध्यक्षता गर्नेछन् । केन्द्रमा अर्थ मन्त्रालय, राष्ट्रिय योजना आयोग, कृषि विकास मन्त्रालय, पशुपंक्षी विकास मन्त्रालय, सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रालयको प्रतिनिधित्व हुनेछ । जिल्लामा वन, महिला तथा बालबालिका, पशु विकास, कृषि, भू संरक्षण तथा अन्य विषयगत निकाय र क्लष्टरमा तत् जिल्लास्थित कार्यालयका ईलाका र गाविस स्तरीय कार्यालय प्रतिनिधि रहनेछन् ।

१.२३. कार्यक्रम कार्यदल बैठक (केन्द्र, जिल्ला)

कार्यदलको बैठकको अध्यक्षता केन्द्रमा वन विभागको महानिदेशक र जिल्लामा जिल्ला वन अधिकृतले गर्नेछन् । सदस्यहरुमा: केन्द्रमा कृषि, वन, पशु सेवा विभागका प्रमुख वा अधिकृत प्रतिनिधि र जिल्लामा तत् तत् कार्यालयका जिल्लास्थित प्रमुख वा अधिकृत प्रतिनिधि सदस्य रहनेछन् । केन्द्रमा सामुदायिक महाशाखाका प्रमुख र जिल्लामा विकास शाखाका प्रमुख सदस्य सचिव रहनेछन् । उक्त बैठकमा कार्यक्रमको सान्दर्भिकतालाई ध्यानमा राखी अन्य निकाय र विषयसँग सम्बन्धित प्रतिनिधि वा व्यक्तिलाई समावेश गर्न सकिनेछ । समितिको बैठक प्रत्येक चौमासिकमा एक पटक बस्नेछ ।

१.२४. सामाजिक परिचालनमा संलग्नहरुको द्वैमासिक बैठक

कार्यक्रम संचालनमा थप प्रभावकारिता ल्याउन सहजकर्ता तथा सामाजिक परिचालकको द्वैमासिक बैठकमा सहभागी हुनेको लागि यातयात र खाजा व्यवस्थापन गर्न खर्च गर्न सकिनेछ । बैठकमा आवश्यकता अनुसार इलाका, जिल्ला र सेक्टर वन

कार्यालयका कर्मचारीहरु, समूह सहयोगी तथा जिल्ला सुपरभाइजर संलग्न हुन सक्नेछन् । सो बैठकको प्रगतिको पुनरावलोकन प्रत्येक बैठकमा गर्नु पर्नेछ ।

१.२५. अनुगमन, मूल्यांकन र सफलताको कथा संकलन तथा पुस्तिका प्रकाशन

वार्षिक स्वीकृत कार्यक्रम कार्यान्वयनको नियमित तथा प्रभावकारी अनुगमन गरी प्रतिवेदन पेश गर्नुपर्नेछ । अनुगमनबाट प्राप्त सुभावालाई पृष्ठपोषणको रूपमा लिई कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्नुपर्नेछ । यसरी अनुगमन गर्दा कवुलियती वन कार्यक्रम लागू भएका जिल्लाहरुमा भएका सफल अभ्यासहरु संकलन प्राप्त गरी केन्द्रमा विश्लेषण सहितको पुस्तिका लेखन तथा प्रकाशन गरिनेछ । यस्तो प्रकाशनलाई वेबसाइटमा समेत राखिनेछ ।

१.२६. वार्षिक प्रतिवेदन तथा ब्रोसुर आदि प्रकाशन

कवुलियती वन कार्यक्रमलाई प्राथमिकता दिई केन्द्रमा संचालित सामुदायिक तथा कवुलियती वन विकास कार्यक्रमको वार्षिक प्रतिवेदन तयारी तथा प्रकाशन गरिनेछ । सामुदायिक तथा कवुलियती वन सम्बन्धी आधारभूत विषयवस्तुहरु समेटेर ब्रोसुर तयारी तथा छपाई गर्न यस शीर्षकको रकम खर्च गरिनेछ ।

१.२७. समूहको तथ्यांक संकलन तथा एमआईएसमा अपलोड

जिल्लास्तरमा कवुलियती वन समूहको अनुगमन गर्दा जिल्ला वन कार्यालयले भरेको अनुगमन फारमबाट प्राप्त तथ्यांक www.lflp.gov.np/dof/ मा उपलब्ध onlineMIS Software मा अपलोड पछि प्राप्त हुने रिपोर्ट जिल्ला वन कार्यालयबाट प्रकाशन हुने वार्षिक प्रतिवेदनमा प्रकाशन गर्नुपर्नेछ । विनियोजित रकम समूहको तथ्यांक संकलन, डाटा इन्ट्री र रिपोर्ट प्रकाशनको लागि खर्च गरिनेछ ।

१.२८. कवुलियती वन राष्ट्रिय पुरस्कार

जिल्लास्थित कवुलियती वन समूहहरु मध्ये निर्दिष्ट मापदण्ड र सूचकहरुको आधारमा जिल्ला वन कार्यालयले उत्कृष्ट समूह सिफारिस गरी वन विभागमा पुरस्कारको लागि पठाउने पर्नेछ । जिल्लाहरुबाट सिफारिस सहित प्राप्त समूहको निर्धारित सूचक र मापदण्डको आधारमा विभागले एक समिति गठन गरी पुनःमूल्याङ्कन गराई उत्कृष्ट तीन समूहलाई कवुलियती वन राष्ट्रिय पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र वितरण गर्नेछ । साथै सान्त्वना हुनेहरुलाई प्रशंसापत्र पनि उपलब्ध गराउन सकिनेछ ।

१.२९. उत्कृष्ट समूह पुरस्कार

तोकिएको मापदण्डको आधारमा जिल्लामा स्थापित कवुलियती वन समूह र वनको मूल्याङ्कन गरी उत्कृष्ट काम गर्ने पहिलो, दोश्रो र तेश्रो समूहलाई विनियोजित बजेटबाट पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्रदान गरिनेछ । प्रथम ७०००।-, द्वितीय ५०००।- र तृतीय ३०००।- दरले पुरस्कार प्रदान गर्नुपर्नेछ । समूह छनौटका आधारहरु देहाय बमोजिमको हुनेछन् । पुरस्कृत हुने समूहको विवरण वार्षिक प्रगति पुस्तिकामा समावेश गर्नु पर्नेछ ।

- वचत तथा ऋण परिचालनको अवस्था,
- जग्गा विकासको गुणस्तर,
- नियमित बैठक तथा रेकर्ड किपिङ्ग,
- अन्य निकायसँगको सहकार्य,
- आय आर्जनका क्रियाकलाप संचालन ।

१.३०. कवुलियती वन क्षेत्र, क्लस्टर, समूहको पहिचान र गठन

यस अन्तर्गत सम्भावित कवुलियती वनको क्लस्टर पहिचान, वन क्षेत्र निर्धारण र नक्सांकन, कवुलियती वन समूहको स्थापना गर्न आवश्यक स्थलगत भ्रमण, प्राविधिक परिचालन, सभा/बैठक/हस्तान्तरण समारोह व्यवस्थापन, कवुलियती वनको पट्टा तयारी कार्यमा खर्च गर्नु पर्नेछ । अन्तरसमूह संजाल र सहकारी गठन भै सकेका ठाउँमा पनि केही थप कवुलियती वन समूहको माग भएमा यस्ता क्षेत्रमा कार्यविधि अनुसार नयाँ समूह गठन गर्न सकिने छ ।

१.३१. सामाजिक परिचालन सेवा (समूह परिचालनको अनुदान सहयोग)

लक्षित समूहहरु मध्येबाट उनीहरुले नै संस्थागत रूपमा छानेका महिला समूह परिचालिकाहरु नै सामाजिक परिचालनका संवाहक हुनेछन् । यस्ता परिचालक संलग्न समूह वा पायक पर्ने समूहसँग जिल्ला वन कार्यालयले नियमानुसार अग्रिम सम्झौता गरी मासिक रु.८०००।- का दरले सामाजिक परिचालकको पारिश्रमिक अनुदान स्वरूप उपलब्ध गराउनु पर्नेछ ।

जिल्ला वन कार्यालय र सम्बन्धित इलाका वन कार्यालयको नियन्त्रण र सुपरिवेक्षणमा रहि सामाजिक परिचालकले निम्न कार्यहरू गर्नेछ :

- (क) कवुलियती वन समूह, जिल्ला वन कार्यालय र पशु सेवा कार्यालय लगायतका निकायको वीचमा सम्बन्ध गाँस्ने,
- (ख) समूह गठनका लागि परिचालन, उत्प्रेरणा र सहयोग गर्ने,
- (ग) बैठक व्यवस्थापन गर्न कवुलियती वन समूहलाई निरन्तर सहयोग गर्ने, नेतृत्व विकास, रेकर्ड राख्ने, वचत गर्ने र साधारण शिशु स्वास्थ्य, पोषण र सरसफाईवारे समूह सदस्यलाई ज्ञान दिने,
- (घ) इलाका तथा जिल्ला वन कार्यालयसंग समन्वय गरी समूहको लागि संचालन हुने फिल्डस्तरका कार्यहरू र तालीम तथा प्रचार प्रसार कार्यमा सहयोग गर्ने,
- (ङ) आफ्नो कार्यक्षेत्रका सबै कवुलियती वन समूहको बैठकमा भाग लिने,
- (च) कवुलियती वन समूहको अनुगमन कार्यमा इलाका वन कार्यालयलाई सहयोग गर्ने,
- (छ) विशेष गरी महिला र दलितहरूलाई सरकारी कागजात, प्रमाणपत्रहरू प्राप्त गर्न आवश्यक सहयोग गर्ने,
- (ज) साधारण लेखपढ गर्न नजान्ने सदस्यलाई प्रौढ शिक्षामा सहभागी गराउने र नेतृत्व विकासका लागि समूहको जनशक्ति विकास गराउने,
- (झ) जिल्ला वन कार्यालयको नियमित मासिक बैठकमा सम्भव भएसम्म सहभागी हुने,
- (ञ) समूहले पाउने सहयोगको बारेमा जिल्ला वन कार्यालयबाट जानकारी लिई सोही बमोजिम समूहलाई जानकारी गराउने,
- (ट) अन्यको हकमा मार्गदर्शनमा उल्लेख भए बमोजिम हुनेछ ।

१.३२. सामाजिक परिचालन सुपरिवेक्षण (जिल्ला सुपरभाईजरबाट)

सेक्टर तथा इलाका वन कार्यालयको समन्वयमा सामाजिक परिचालकको कार्यको अनुगमन तथा सुपरिवेक्षण गरी जिल्ला वन कार्यालयमा नियमित प्रतिवेदन पेश गर्न मासिक रु.१५,०००/- का दरले नवहूने गरी पारिश्रमिक उपलब्ध गराउने गरी करार सेवामाजिल्ला सुपरभाईजरको व्यवस्था गर्नुपर्नेछ । जिल्ला सुपरभाईजरको कार्य विवरण निम्न बमोजिम हुनेछ :

- (क) कवुलियती वन समूह, जिल्ला वन कार्यालय तथा पशु सेवा कार्यालय लगायत जिल्लास्थित अन्य निकायको वीचमा सम्बन्ध कायम गर्ने,
- (ख) समूह सहयोगीको कार्यको अनुगमन तथा निरीक्षण गर्ने,
- (ग) समूह सहयोगीलाई परिचालन, उत्प्रेरणा र सहयोग गर्ने,
- (घ) जिल्ला वन कार्यालय र जिल्लास्थित अन्य कार्यालयबाट समूहको लागि संचालन हुने फिल्डस्तरका कार्यहरू र तालिम तथा प्रचारप्रसार कार्यमा सहयोग गर्ने,
- (ङ) समूह सहयोगी मार्फत कवुलियती वन समूहको अनुगमन गर्नमा जिल्ला वन कार्यालयलाई सहयोग गर्ने,
- (च) समूहमा आवद्ध विशेष गरी महिला र दलितहरूलाई आवश्यक सरकारी कागजात, प्रमाणपत्रहरू प्राप्त गर्न सहयोग गर्ने,
- (छ) सामाजिक परिचालनको काममा मार्गदर्शक वनी आवश्यक सहयोग, समन्वय र सहजीकरण गर्ने ।

१.३३. निश्क्रिय तथा पुराना समूह शसक्तिकरण अनुदान

हस्तान्तरण भई हाल निश्क्रिय भएका कवुलियती वन समूहलाई सक्रिय बनाई आय आर्जन कार्यमा संलग्न गराउन र जीविकोपार्जनमा सघाउ पुऱ्याउन यस शीर्षकको रकम उपलब्ध गराउन सकिने छ । इलाका वन कार्यालयको सहयोगमा समूहले कार्यक्रम तयार गरी जिल्ला वन अधिकृत समक्ष पेश गर्नुपर्नेछ । स्वीकृत कार्यक्रम बमोजिम समूहसँग सम्भौता गरी सोही बमोजिमको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन प्राप्त भएपछि अनुदान रकम भुक्तानी दिनुपर्नेछ ।

१.३४. प्राविधिक सहयोग सेवा (वन प्राविधिक सहायकबाट)

जिल्लामा नयाँ कवुलियती वन समूह गठन, कार्ययोजना र जीविकोपार्जन योजना तयारी, स्थापित समूहलाई प्राविधिक सहयोग लगायत जिल्ला वन कार्यालयको कार्यक्रम संचालनमा थप सहयोग पुऱ्याउन वन विज्ञानमा प्रविणता प्रमाणपत्र तह वा सो सरहको योग्यता पुगेको प्राविधिकबाट सेवा करारमा लिन यस शीर्षकमा विनियोजित रकम खर्च गरिनेछ । नेपाल सरकारको आर्थिक ऐन/नियम बमोजिम राख्नुपर्ने मासिक कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन, डोर हाजिरी लगायतका आवश्यक कागजात समावेश गर्नुपर्नेछ । निजले जिल्ला वन अधिकृत वा निजले तोकेको कर्मचारीको अधिनमा रही काम गर्नु पर्नेछ । साथै मासिक प्रगतिको आधारमा मात्र मासिक पारिश्रमिकको निकासा गरिनेछ ।

१.३५. कवुलियती वन सहकारी गठन, संचालन र अनुदान

कवुलियती वन विकास कार्यक्रम अन्तर्गत ग्रामीण वित्त सेवा उपलब्ध गराउन, वचत तथा ऋण कार्यलाई दिगो, प्रभावकारी तथा व्यवस्थित तरिकाबाट संचालन गर्न सक्रिय समूह भएको क्लष्टरमा सहकारी गठन गर्न आवश्यक प्रकृयागत सहयोग पुऱ्याउन र गठन पश्चात् वीउ पुँजीको रूपमा परिचालन गर्न एक लाखसम्म अनुदान उपलब्ध गराउन सकिनेछ । सहकारी

गठन तथा सो पश्चात सहकारीको लागि घरभाडा, फर्निचर, कार्यालय सञ्चालन, सहकारीको संस्थागत क्षमता विकास लगायतमा रकम खर्च गर्न सकिनेछ ।

१.३६. आयआर्जन, सीप तथा उद्यम विकास (सकृय समूह)

लघु उद्यम विकास तथा आयआर्जनका लागि संलग्न कवुलियती वन समूहका सदस्यलाई सहूलियत ऋण उपलब्ध गराउन स्थानीय सहकारीलाई सशर्त उद्यम विकास अनुदान उपलब्ध गराउनु पर्नेछ । उक्त अनुदान सहकारीमा अन्तहीन घुम्तीकोषको रूपमा रहने र क्रमशः अन्य सहभागी कवुलियती वन समूह सदस्यलाई उपलब्ध गराउदै जानुपर्नेछ ।

१.३७. समूहको वचत तथा परिचालन सेवा (ग्रामीण वित्त सहायकबाट)

कवुलियती वन समूहलाई ग्रामीण वित्त सेवा मार्फत थप सहयोग पुऱ्याउन स्थानीय सहकारी डिभिजन कार्यालयसँग समन्वय गरी लघु वित्त सहायकको व्यवस्था नियमानुसार गर्नुपर्नेछ । नेपाल सरकारको आर्थिक ऐन/नियम बमोजिम राख्नुपर्ने मासिक कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन, डोर हाजिरी लगायतका आवश्यक कागजात समावेश गर्नुपर्नेछ । ग्रामीण वित्त सहायकको योग्यता कम्तीमा वाणिज्य विषयमा प्रविणता प्रमाणपत्र तह वा सो सरहकोभईकार्य विवरण निम्न बमोजिम हुनेछ

- कवुलियती वन समूहलाई ग्रामीण वित्त कार्यक्रममा सहयोग तथा सहजीकरण गर्ने,
- समूहबाट संचालन भैरहेका आर्थिक कृयाकलापको अनुगमन तथा निरीक्षण गर्नुका र साथै आवश्यक सहयोग गर्ने,
- स्थानीय कृषि सहकारी संस्थालाई सुदृढ गराई उक्त संस्थामा कवुलियती वन समूहको पहुँच पुऱ्याउन सहयोग गर्ने,
- सहकारी नभएको क्लष्टरमा सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहसँग समेत सहकार्य गरी नयाँ सहकारी गठन गर्न आवश्यक सहयोग र सहजीकरण गर्ने,
- जिल्ला वन कार्यालयको नियमित मासिक बैठकमा अनिवार्य सहभागी हुने,
- विद्यमान वचत तथा ऋण पद्धतिको अनुगमन गरी स्थानीय सहकारीसँग आवद्ध गराउने,
- कवुलियती वन समूह, सामुदायिक वन समूह र संलग्न सहकारीलाई कोचिंग तथा समयानुकूल संस्थागत सहयोग गर्ने ।

१.३८. पशु स्वास्थ्य सेवा तथा वंश सुधार सहयोग

पशु स्वास्थ्य र उन्नत पशुपालन प्रवर्द्धनका लागि जिल्ला पशुसेवा कार्यालयसँग समन्वय गरी कवुलियती वन समूहको आवश्यकतामा आधारित कार्यक्रम संचालन गर्न यो शीर्षकको रकम खर्च गरिनेछ ।

१.३९. घाँस विकास तथा डालेघाँस रोपण

स्थानीय कवुलियती वन समूह मार्फत संलग्न समूहको सदस्यको बाँझो कृषि वारीमा घाँस तथा डालेघाँसका वीउ, विरुवा, कटिङ्ग रोपण तथा संरक्षणको लागि यो शीर्षकमा विनियोजित रकम खर्च गर्न सकिनेछ ।

१.४०. अनफार्म आयआर्जनको लागि अनुदान सहयोग

कवुलियती वन समूहका किसानहरूलाई कृषि जग्गाबाट थप आयआर्जनका लागि जिल्ला कृषि विकास कार्यालयसँग समन्वय गरी कार्यक्रम संचालन गरिनेछ । यस्ता कार्यक्रम संचालन गर्दा संलग्न कवुलियती वन समूहका सदस्यलाई सहूलियत ऋण उपलब्ध गराउन स्थानीय सहकारीलाई सशर्त अनफार्म आयआर्जन अनुदान उपलब्ध गराउनु पर्नेछ । उक्त अनुदान सहकारीमा अन्तहीन घुम्तीकोषको रूपमा रहने र क्रमशः अन्य सहभागी कवुलियती वन समूह सदस्यलाई उपलब्ध गराउने ।

१.४१. खोरिया फडानी क्षेत्रमा नमूना आयआर्जन कार्यक्रम

खोरिया फडानी क्षेत्रमा संलग्न कवुलियती वन समूह सदस्यका लागि नमूना आयआर्जनका गतिविधिहरू संचालन गर्न यो शीर्षकबाट स्वीकृत नर्मस् अनुसार खर्च गरिनेछ ।

१.४२. चितवन राष्ट्रिय निकुन्ज/पर्सा वन्यजन्तु आरक्षको मध्यवर्ती क्षेत्रमा भएका कवुलियती वन व्यवस्थापन

यस शीर्षक अर्न्तगतको कार्यक्रम वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालयको निर्देशनमा संचालन र खर्च गरिने छ ।

१.४३. जिल्लास्तरीय सरोकारबालाको सहभागितामा अनुगमन

जिल्लास्तरीय सरोकारबालाको सहभागितामा कवुलियती वन समूहहरूको संयुक्त अनुगमन गरी पृष्ठपोषण (प्रतिवेदन) गर्न यो शीर्षकको रकम खर्च गरिनेछ ।

१.४४. कार्यक्रम समन्वयको लागि संयुक्त अनुगमन (केन्द्रस्तर)

केन्द्रस्तरमा कार्यक्रम समन्वय समितिका पदाधिकारीहरुलाई कार्यक्रम संचालित स्थानमा संयुक्तरूपमा अनुगमन गर्न यो रकम खर्च गरिनेछ । यसले केन्द्रीयस्तरबाट नै कार्यक्रमको प्रभावकारिता अध्ययन गर्न र पृष्ठपोषण प्राप्त गर्नेछ ।

१.४५. कार्यक्रम समन्वयको लागि संयुक्त अनुगमन (जिल्लास्तर)

जिल्ला वन, कृषि विकास, शिक्षा, पशु सेवा, सहकारी, महिला तथा बालबालिका लगायतका कार्यालयका प्रतिनिधिको संयुक्त अनुगमन कार्य गर्न यसमा विनियोजित रकम खर्च गरिनेछ ।

१.४६. जीविकोपार्जन सुधार योजना कार्यान्वयन सहयोग समूह अनुदान (रु.५०,०००/- प्रति समूह, प्रस्तावना अनुसार)/लघु उद्यम विकास तथा आयआर्जन

लघु उद्यम विकास तथा आयआर्जनका लागि यस कार्यक्रममा प्रत्येक कवुलियती वन समूहको कार्ययोजना तयारी गर्दा जीविकोपार्जन सुधार योजना पनि सँगै तयार गर्नुपर्नेछ । जीविकोपार्जन सुधार योजना तयारी पुस्तिका अनुसार आवश्यकता पहिचान गरी समूहको आयआर्जनमा वृद्धि हुने योजनालाई प्राथमिकतामा राखी अनुदानको रूपमा यस शीर्षकमा विनियोजित रकम खर्च गरिनेछ । जीविकोपार्जन सुधार योजना स्वीकृत भएपछि सोभै समूहको खातामा रकम जम्मा गरी समूहले नै कार्यक्रम संचालन गर्नुपर्नेछ र उक्त योजना जिल्लास्थित अन्य निकायहरुको सहयोग तथा समन्वयमा गरिनेछ।

क) सामुदायिक वन कार्यक्रम

१.४७. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह गठन, दर्ता, कार्ययोजना तयारी तथा वन हस्तान्तरण प्रक्रियामा सहजीकरण (लैंगिक समता र दिगो वन व्यवस्थापन लक्षितसमेत)

वन ऐन २०४९, वन नियमावली २०५१ तथा सामुदायिक वन विकास कार्यक्रमको मार्गदर्शन, २०७१ (तेश्रो सशोधन) ले निर्धारण गरेको आवश्यक प्रक्रियाहरु पूरा गरेर सम्पन्न गर्नुपर्नेछ ।

क. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह गठन तथा दर्ता प्रक्रियामा सहजीकरण

उपलब्ध बजेटबाट टोल/समुदाय छलफल गोष्ठी, खाजा खर्च, भ्रमण खर्च, ईन्धन, संचार र विधान तयारीको लागि टाइपिङ्ग, प्रिन्टिङ्ग र बाईन्डिङ्गमा खर्च गर्नुपर्नेछ । कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि प्रगतिमा निम्न बुँदाहरु समावेश गर्नुपर्नेछ :

- गठित समूहको नाम र ठेगाना,
- सामुदायिक वनबाट लाभान्वित हुने घरधुरी संख्या र जनसंख्या,
- कार्य समितिको स्वरूप (संख्या तथा समावेशी प्रतिनिधित्व),
- बैठकको खाजा खर्च माग गर्दा माईन्यूटको छायाँकपि समेत संलग्न गर्नुपर्ने ।

ख. सामुदायिक वन कार्ययोजना तयारी तथा वन हस्तान्तरण प्रक्रियामा सहजीकरण

कार्ययोजना तयारी कार्यको सहजीकरण तथा सिफारिस गर्ने काम कम्तीमा वन कार्यसहायक तहका वन प्राविधिकबाट हुनुपर्नेछ । यसका लागि सामुदायिक वन स्रोत सर्भेक्षण मार्गदर्शन, २०६१ अनुसार वन स्रोत सर्भेक्षण गर्ने तथा GPS बाट सीमा सर्भेक्षण तथा permanent sample plot layout गरी सामुदायिक वनको विस्तृत नक्शा समेत पेश गर्नुपर्नेछ । यसमा उपलब्ध बजेटबाट वन स्रोत सर्भेक्षण, नक्शा तयारी, टोल/समुदाय छलफल गोष्ठी, खाजा खर्च, भ्रमण खर्च, ईन्धन, संचार र विधान तयारीको लागि टाइपिङ्ग, प्रिन्टिङ्ग र बाईन्डिङ्गमा खर्च गर्नुपर्नेछ । कार्यक्रम सम्पन्न पछि विधानशीर्षकमा उल्लेख भए अनुसार नै प्रतिवेदन पेश गर्नुपर्नेछ ।

१.४८. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको कार्ययोजना नवीकरणमा सहयोग (गरीव, महिला र दलित लक्षित जलवायु परिवर्तन अनुकूलन योजना)

कार्ययोजनाको अवधि समाप्त भएका र कार्ययोजना पुनरावलोकन/संशोधनको लागि समूहबाट माग भई आएका सा.व.को कार्ययोजना पुनरावलोकन गर्न सामुदायिक वन कार्ययोजना तयारी तथा वन हस्तान्तरण प्रक्रियामा सहजीकरणशीर्षकमा उल्लेख भए अनुसार गर्नुपर्नेछ ।

१.४९. वैज्ञानिक वन व्यवस्थापनको अवधारणा सहित सामुदायिक वनको कार्ययोजना पुनरावलोकन

वन ऐन २०४९, वन नियमावली २०५१ तथा सामुदायिक वन विकास कार्यक्रमको मागदर्शनले निर्धारण गरेको प्रक्रिया र वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन कार्यविधि, २०७१ बमोजिम कार्ययोजना तयार गर्नुपर्दछ । वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन कार्ययोजना तयारी/पुनरावलोकन कार्यको सहजीकरण तथा सिफारिस गर्ने काम कम्तीमा अधिकृत तहका वन प्राविधिकबाट हुनुपर्नेछ । यसमा उपलब्ध बजेटबाट वन स्रोत सर्भेक्षण, Stem Mapping, नक्शा तयारी, टोल/समुदाय छलफल गोष्ठी, खाजा खर्च, भ्रमण खर्च, ईन्धन, संचार र कार्ययोजना तयारीको लागि टाइपिङ्ग, प्रिन्टिङ्ग र बाईन्डिङ्गमा खर्च गर्नुपर्नेछ । कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न बुदाहरु समावेश गर्नुपर्नेछ :

- नवीकरण गरिएको सामुदायिक वनको नाम र ठेगाना,
- संलग्न बिल भर्पाईहरु,
- स्वीकृत कार्ययोजनाको जिल्ला वन अधिकृत र समितिका अध्यक्षको हस्ताक्षर भएको पानाको छायाँकपि ।

१.५०. वन व्यवस्थापन कार्ययोजना तयारी तथा पुनरावलोकन कार्य

यो कार्यक्रम सामुदायिक वनमा प्रविधी प्रसारको लागि प्रदर्शनस्थल र अन्य सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह तथा स्थलगत प्राविधिक कर्मचारीको लागि प्रविधी अवलोकनस्थलको रूपमा विकास गर्ने गरी कार्ययोजना तयारी/पुनरावलोकन गर्नु पर्ने छ ।

क. सामुदायिक वन क्षेत्र छनौट

सामान्यतया १०० हेक्टर वा सोभन्दा बढी क्षेत्रफलका सामुदायिक वनहरु वैज्ञानिक व्यवस्थापनको लागि छनौट गर्न सकिन्छ। कुनै स्थानमा एकभन्दा बढी सामुदायिक वनहरुको क्षेत्रलाई एउटै ब्लक मानी वन व्यवस्थापन गर्न कार्ययोजना तयार गर्न सकिन्छ । यसको लागि जिल्ला वन अधिकृतले समन्वयकारी भूमिका खेली समावेश हुने सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहहरुको साधारण सभाबाट सहमति लिएर वन कार्ययोजना परिमार्जन गरेर गर्नु पर्नेछ । उत्पादनमूलक व्यवस्थापन र व्यवस्थापनका गतिविधिहरु सघन हुने भएकोले वातावरणीय वा भू-क्षयको दृष्टिकोणले संवेदनशील क्षेत्र छनौट गर्नु हुँदैन ।

तर ठूला ब्लकहरुमा मात्र नभएर क्षेत्रफलमा साना सामुदायिक वनहरुमा पनि प्रदर्शनमुखी कार्यक्रम स्वरूप वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन कार्यक्रम स्वीकृत गरिएको छ । विशेष गरी स्थान, क्षेत्रको प्रकृति तथा विशेषता अनुसार वैज्ञानिक वन व्यवस्थापनको लागि १०० हेक्टर भन्दा साना सामुदायिक वन पनि छनौट गर्न सकिन्छ । यस्ता वनक्षेत्र पहिचान गर्दा जिल्ला वन कार्यालयले एक प्राविधिक समिति बनाएर, आवश्यक परेमा स्थानीय सरोकारवालाहरुको समेत सल्लाह सुझावमा निर्णय लिन सकिन्छ । साथै विगतका कार्यविधि अनुसार सञ्चालित कार्यक्रमलाई निरन्तरता दिन बाधा पर्ने छैन ।

ख. सामुदायिक वन व्यवस्थापन कार्ययोजना तयारी (परिमार्जन), स्वीकृति तथा कार्यान्वयन

१. वैज्ञानिक वन व्यवस्थापनको लागि वन कर्मचारी, छनौटमा परेका सामुदायिक वनका सक्रिय पदाधिकारी तथा उपभोक्ताहरुलाई समावेश गरी अनुशिक्षण गर्ने । यस्तो कार्य अधिकांश फिल्डमा वन क्षेत्रमा नै संचालन गर्नु पर्नेछ । यस्तो अनुशिक्षण, तालिम तथा योजना तयारीमा निम्न बमोजिम विषयहरु समावेश गर्नु पर्नेछ :

- वन व्यवस्थापनको औचित्य,
- वन व्यवस्थापनका असल अभ्यासहरु, छिमेकी जिल्ला तथा छिमेकी क्षेत्रहरुको अभ्यासको वारेमा जानकारी,
- वन व्यवस्थापनको तरिकाहरु खण्ड विभाजन, सहभागितात्मक वन स्रोत सर्भेक्षण, वन सर्भेक्षणको नतिजाहरुबाट सिकाई, वनको उत्पादन वृद्धि गर्ने तरिकाहरुको सिफारिस गर्ने तरिकाहरु, वन संवर्धन पद्धतिको विवरण,
- वन व्यवस्थापनबाट निस्कासन हुने वन पैदावारको वितरण तरिका तथा लाभको बाँडफाँड,
- आर्थिक व्यवस्थापन आदि ।

२. वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन कार्ययोजना तयारी कार्यमा प्राविधिक सहायता जिल्ला वन कार्यालयले उपलब्ध गराउनु पर्नेछ । तर जिल्ला वन कार्यालयको जनशक्तिले नभ्याउने भएको अवस्था तथा उपयुक्त प्राविधिक क्षमता नभएको अवस्थामा वाह्य स्रोतबाट परामर्श सेवालाई कार्य योजनाहरु तयार गर्न सकिनेछ । अन्य कार्यहरु बुँदा नं. १.४९. बमोजिम गर्नु पर्ने छ ।

१.५१. कार्ययोजना कार्यान्वयन(Management Field Operation etc)

यो कार्यक्रम संचालन गर्ने सामुदायिक वनलाई जिल्ला कै प्रदर्शनीस्थलको रूपमा विकास गरी वैज्ञानिक वन व्यवस्थापनको प्रविधि प्रसारको माध्यम, वन स्कूल, को रूपमा विकास गर्ने उद्देश्य रहेको छ । यसमा निर्देशिकाको बुँदा १.५०. को अतिरिक्त वन व्यवस्थापन तालिम, Harvesting/Logging उपकरण खरिद, अग्निरोधक सामग्री खरिद, आवश्यकता अनुसार अग्निपथ निर्माण, डिपो व्यवस्थापन, र कार्ययोजनाले निर्दिष्ट गरेका अन्य थप कार्यहरू गर्नु पर्ने छ ।

वन व्यवस्थापन कार्यान्वयनको लागि जिल्ला वन कार्यालयबाट प्राप्त रकम वन पैदावारहरू कटान, मुछान, ढुवानी तथा संकलन, वनको संरक्षण, स्थानीयस्तरमा उपलब्ध हुन सक्ने सिपालु, मिस्त्री तथा जन सहभागिता परिचालन हुन नसक्ने क्रियाकलापहरूमा मात्र उपयोग गर्नु सकिनेछ । वन व्यवस्थापन गर्दा कायम गरिएको चक्रमध्ये एक चक्रको लागि दिएको सहयोग घुम्ती कोषको रूपमा परिचालन गर्ने गरी सम्बन्धित उपभोक्ता समूहको कोषमा जम्मा गरिदिनुपर्नेछ । यस्तो सहयोग दोहोर्‍याएर भने उपलब्ध गराउन हुँदैन ।

वन संवर्धनको लागि उपयोगी औजारहरू खरिद गर्दा सार्वजनिक खरिद ऐन तथा नियमावली अनुसार खरिद गर्नु पर्नेछ । यसरी खरिद गरिएका औजारहरूको सूची तयार गर्ने र सो सूचीहरूको लिष्ट सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको कार्य योजना, वनव्यवस्थापन कार्य योजना तथा कार्यालयमा पनि राख्न लगाउने ।

अनुगमन तथा प्रगति प्रतिवेदन

सामुदायिक वनको वैज्ञानिक वन व्यवस्थापनको प्रत्यक्ष अनुगमनको कार्य सम्बन्धित इलाका वन कार्यालयका अधिकृतस्तरको कर्मचारीलाई जिल्ला वन अधिकृतले तोक्ने तथा जिल्ला वन अधिकृतले नियमित रूपमा स्थलगत अनुगमन गरी वन विभागमा पठाउने प्रगतिमा समावेश गर्नु पर्नेछ । प्रगतिमा,सम्पादित कृयाकलापहरू तथा उपलब्धिहरू (संरक्षण तथा व्यवस्थापन भएको वनको क्षेत्रफल, उत्पादन परिमाण, भएका सुधारहरू, सृजित रोजगारी, आय आदि) उल्लेख गर्नु पर्नेछ । यस्तो अनुगमन कार्यमा स्थानीय सरोकारवालाहरूको सहभागिता परिचालन गर्ने । यसै गरी कम्तीमा वर्षको एकपटक जिल्ला वनक्षेत्र समन्वय समितिका पदाधिकारीहरूलाई पनि यस्तो कार्यहरू भएको स्थानको अनुगमन गराउने कार्यको समन्वय जिल्ला वन अधिकृतले गर्नेछ ।

लागत अनुमान तथा खर्च गर्ने तरिका

वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन लगायत यससंग सम्बन्धित शीर्षकका सबै क्रियाकलापहरू वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालयबाटस्वीकृत भएको नम्स अनुसार संचालन गर्नु पर्दछ । सो नर्मसमा उल्लेख नभएको क्रियाकलापहरू जस्तै काठको ढुवानी, सवारी साधनको भाडा दर, खनजोत लगायत अन्य कार्यको लागि भाडामा लिने वुल्डोजर आदिको भाडा दर, स्थानीय ज्यामीको ज्याला दर आदि जिल्लाको स्वीकृत दररेट अनुसार संचालन गर्नु पर्नेछ ।

यसको अलावा कुनै क्रियाकलाप आकस्मिक रूपमा सम्पन्न गर्नु पर्ने अवस्थामा जिल्ला वन क्षेत्र समन्वय समितिको निर्णय अनुसारको लागत अनुमान तयार गरी स्वीकृत बजेटको परिधि भित्र रही खर्च गर्न सकिनेछ । सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह लगायत सबैले प्रत्येक महिनामा भएको काम तथा खर्चको विवरण सार्वजनिक गर्ने गरी कार्यक्रम सम्पन्न गरिसके पछि सार्वजनिक लेखा परीक्षणको पद्धति अवलम्बन गर्नु पर्नेछ ।

१.५२.सामुदायिक वन भित्र कबुलियती वन समूह गठन, प्रविधि हस्तान्तरण तथा आयमूलक कार्यक्रममा सहयोग (प्याकेज कार्यक्रम)

सामुदायिक वन विकास कार्यक्रमको परिमार्जित मागदर्शनमा व्यवस्था भएको सम्पन्नताको स्तरीकरणमा विपन्न वर्गमा समावेश भएका उपभोक्ताहरूको जीविकोपार्जनमा सहयोग गर्न हस्तान्तरित सामुदायिक वनका केही भागमा आयआर्जनका कार्यक्रमहरू संचालन गर्न जग्गा छुट्टयाउने कार्य गर्न सकिन्छ । पहिचान गरिएका विपन्न वर्गको समूह बनाई उक्त क्षेत्रमा गर्न सकिने प्रकारका आयआर्जनका कार्यहरूको योजना तयार पारी, उक्त योजना सामुदायिक वन कार्ययोजनामा समावेश गर्न यो कार्यक्रम संचालन गरिनेछ । लक्षित वर्ग पहिचान गरी समूह तयार पार्दा एक समूहमा सामान्यतया १० परिवार पर्ने गरी समूह तयार गर्ने, एउटा सामुदायिक वन भित्र एक भन्दा बढी समूह पनि तयार गर्न सकिने, यसरी विपन्न वर्गको समूहहरू तयार पार्दा पकेट एरियाको अवधारणा विकास गरी एकै प्रकारको आयआर्जनका गतिविधि संचालन गर्न जोड दिनु पर्नेछ । यसमा विनियोजित बजेटबाट बढीमा रु.१०,०००/- सम्म समूहसंग छलफल, कबुलियती वन समूह गठन, योजना तयारी, सहजीकरण लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिने र बाँकी रकम आयमूलक कार्यको लागि समूहको कोषमा जम्मा गर्नुपर्नेछ । कार्यक्रम सम्पन्न पछि कार्यक्रम सम्पन्न भएको सामुदायिक वनको नाम र ठेगाना, गठित लक्षित समूहको संख्या, लक्षित समूहको घरधुरी संख्या र जनसंख्या लगायतका विवरण उल्लेख भएको प्रगति विवरण पेश गर्नु पर्नेछ ।

१.५३. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहका विपन्न वर्गलाई आयमूलक कार्यमा सहयोग

यस कार्य अन्तर्गत सामुदायिक वन विकास कार्यक्रमको परिमार्जित मागदर्शन र कार्ययोजनाले तोकेका आयमूलक कार्यहरू संचालन गर्न सम्भव भएसम्म स्थानीय सहकारी मार्फत सम्बन्धित उपभोक्ता समूहलाई घुम्तीकोषको रूपमा अनुदान उपलब्ध गराइनेछ। उक्त अनुदान सहभागी समूहको घुम्तीकोषको रूपमा सहकारीमा रहने र सहकारीको आफ्ना नियमअनुसार समूहले सिफारिस गरेका विपन्न परिवारलाई क्रमशः उपलब्ध गराउदै जानुपर्नेछ। कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न बुदाहरू समावेश गर्नु पर्ने छ :

- आयमूलक कार्यक्रम संचालित सामुदायिक वनको नाम र ठेगाना, छनौट गरिएका आधारहरू,
- गठित लक्षित विपन्न वर्ग समूहको संख्या,
- लाभान्वित घरधुरी तथा नामावली र जनसंख्या,
- संचालित कृषकलापहरूको सचित्र विवरण र आगामी योजनाहरू।

१.५४. सामुदायिक वन कार्ययोजनाको प्राविधिक परीक्षण (क्षेत्रीय वन निर्देशनालय मार्फत)

हस्तान्तरित सामुदायिक वनको कार्ययोजना प्राविधिक रूपमा पूर्ण रहेको छ, छैन परीक्षण गर्न यो क्रियाकलाप संचालन गरिने छ। प्राविधिक परीक्षणको लागि सामुदायिक वन छनोट गर्दा काठ दाउरा बढी उत्पादन गर्ने तथा समूह भन्दा बाहिर वन पैदावार बढी बिक्री वितरण गर्ने समूहमा गरिनेछ। यसका लागि क्षेत्रीय वन निर्देशनालयसंग समन्वय गरी निर्देशनालयका उपसचिव संयोजकत्वमा क्षे.व.नि. तथा जि.व.का.का वन अधिकृतहरू समेत तीन सदस्य रहेको टोली बनाई यो कार्य सम्पन्न गर्न सकिनेछ। यस टोलीमा वन विभागको प्रतिनिधि माग गरी समावेश गर्न सकिनेछ। यो कार्य सम्पन्न गर्नको लागि क्षेत्रीय वन निर्देशनालयबाट आउने टोलीलाई लाग्ने सम्पूर्ण खर्च एवं अन्य सुविधाहरू जि.व.का.बाट व्यहोर्ने गरी कार्यक्रम सम्पन्न गर्नुपर्नेछ। कार्य सम्पन्न भए पछि टोलीले क्षे.व.नि.मा प्रतिवेदन पेश गर्नेछ भने क्षे.व.नि. मार्फत सम्बन्धित जि.व.का.मा प्रतिवेदन उपलब्ध गराउनुपर्नेछ। कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न बुदाहरू समावेश गर्नुपर्नेछ :

- परीक्षणको लागि छनोट गरिएको सामुदायिक वनको नाम, ठेगाना,
- छनोट गर्नुको कारण,
- परीक्षणमा देखिएका कुराहरू (संक्षेपमा),
- सुधारका लागि गरिएका सुझावहरू।

१.५५. सामुदायिक वन र निजी आवादी छुट्याई सिमांकन गर्ने

आवादीसंग जोडिएको सामुदायिक वनको सीमा यकिन गरी छुट्याई सम्भावित अतिक्रमणबाट संरक्षणका लागि सिमाना लगाउने कार्य गर्नुपर्नेछ। यस कार्यको लागि सम्बन्धित उपभोक्ता समूहको संस्थागत सहभागिता अनिवार्य हुने छ। जि.व.का बाट स्वीकृत नमस् अनुसार ल.ई. स्वीकृत गरी आवश्यक क्रियाकलापहरू संचालन गर्नु पर्ने। कार्य सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न बुदाहरू समावेश गर्नुपर्नेछ :

- सा.व.उ.स.को नाम,
- वन र निजी आवादी छुट्याई सिमांकन गरिएको दुरी (कि.मि.)।

१.५६. समुदायमा आधारित सिमसार व्यवस्थापन (प्याकेज)

सिमसारको सफाई, सिमसार स्रोत सर्भेक्षण, अतिक्रमण, चरिचरण तथा अति दोहनबाट सिमसारको संरक्षणका लागि आवश्यक क्रियाकलापहरू गर्नुपर्दछ। यसका लागि सा.व. क्षेत्र तथा आसपास रहेका सिमसारहरू लाई छनौट गर्नुपर्दछ। यस अन्तरगत सिमसार सर्भेक्षण तथा नक्सांकन, सिमसारको सफाई, सिमसार स्रोत सर्भेक्षण गर्ने, लोपोन्मुख प्रजातिहरूको संरक्षण एवं प्रवर्द्धन गर्ने समेत समावेश गर्न सकिनेछ। यसका लागि समूहसंग जि.व.का. ले सम्झौता गरी कार्य गर्न गराउन सक्नेछ। यो कार्य सम्पन्न भएपछि भावी आवश्यक गतिविधिहरू समेत रहेको रिपोर्ट तयार गरी जि.व.का.मा राखिएको हुनुपर्नेछ। कार्य सम्पन्न भए पछि प्रगतिमा निम्न बुदाहरू समावेश हुनु पर्नेछ :

- समूहको नाम, ठेगाना,
- सिमसारको किसिम (सा.व. भित्र वा बाहिर),
- सिमसार रहेको स्थानको ठेगाना,
- क्षेत्रफल।

१.५७. नमुना (नतिजा तथा विधि) प्रदर्शनी प्लट स्थापना (TSI/SLI)

जिल्लामा अवस्थित रहेका वनको प्रकारका आधारमा व्यवस्थापन गर्न अत्यावश्यक रहेका प्रकारको वन व्यवस्थापन गर्ने प्रविधि प्रदर्शन गर्न यो क्रियाकलाप संचालन गरिने छ । यो कार्यक्रम संचालन गर्न वन विभाग अन्तरगत वन संवर्धन महाशाखाबाट प्राविधिक सहायता लिन सकिन्छ । कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न बुदाहरु समावेश गर्नु पर्ने छ :

- प्रदर्शनी प्लट स्थापना गरिएको स्थान(GPS Location),
- प्रदर्शनी प्लटको क्षेत्रफल,
- प्रदर्शनी प्लट स्थापनाको उद्देश्य,
- प्रदर्शनी प्लट स्थापनाबाट लाभान्वित हुने अनुमानित समूह संख्या ।

१.५८. समुदायमा आधारित वन व्यवस्थापन तथा सम्बर्द्धन सम्बन्धी सामग्री/औजार खरिद (वस्तुगत र नगद अनुदान)

समुदायमा आधारित वन व्यवस्थापन कार्यलाई चुस्त दुरुस्त बनाउन आवश्यक मेशिन औजार खरिद गर्न यो क्रियाकलाप संचालन गरिने छ । सामानहरु खरिद गर्दा वा सो कार्यका लागि अनुदान दिँदा वन व्यवस्थापनमा अत्यावश्यक वन सम्बर्द्धन सामग्रीहरु जस्तै: टेप (डायामिटर, लिनियर), साधारण सः, पावर चेन सः, पुनिड सः, जिपिएस, भरटेक्स आदि खरिद गर्नु पर्नेछ । यस शीर्षकबाट समान खरिद गर्दा सम्बन्धित निकायले प्रचलित नियमानुसार पुऱ्याउनु पर्ने खरिद प्रक्रियाहरु पूरा गरी दाखिला गरिनेछ ।

१.५९. एक सामुदायिक वन एक उच्चम विकास कार्यक्रम

जिल्ला वन कार्यालयले इलाका वन कार्यालय मार्फत सूचना प्रवाह गर्नेछ । इच्छुक सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहले आफूले गर्न चाहेको उच्चम र लगानी यकिन गरी आफ्ना उपभोक्ता समूहमध्येबाट साभेदारीको लागि व्यवसायिक योजना सहित प्रस्ताव आव्हान गर्ने, प्राप्त प्रस्तावको मूल्यांकन गर्ने, उच्चमको लागि उत्कृष्ट प्रस्तावको छनौट गरी जिल्ला वन कार्यालयमा पठाउने । जिल्ला वन कार्यालयले प्राप्त प्रस्तावहरुको समूहको लगानी, सिमान्तकृत समूहको सहभागिता, वैदेशिक रोजगारीको अनुभव आदिको आधारमा मूल्यांकन गरी समूह छनौट गर्नेछ । छनौट भएको समूहसंग सम्झौता सम्पन्न गरी समूह मार्फत अनुदान उपलब्ध गराउनु पर्दछ । यस्तो गर्दा समूहको कोषबाट समेत उल्लेख्य रकम लगानी गर्न प्रोत्साहन गर्नु पर्दछ । सा.व.उ.स. का उपभोक्ता घरधुरीमध्ये उत्सुक परिवारहरुको सानो समूह समेत उ.स.को निर्णय अनुसार यस कार्यमा सहभागी हुन सक्नेछन् । कार्य सम्पन्न भएपछि प्रगतिमा निम्न कुराहरु समावेश गरिनुपर्नेछ :

- उच्चम संचालन गर्ने व्यक्ति र सम्बन्धित समूहको नाम, स्थान (GPS Point),
- उच्चमको प्रकार,
- लागत रकम,
- सिर्जित रोजगारी संख्या,
- संचालित गतिविधि।

१.६०.सामुदायिक वनमा जडीबुटी खेती विस्तार

सामुदायिक वनको हैसियत सुधार गर्न र आय स्रोत बढाउन तथा समूहमा रहेका सदस्यहरुको गरिबी कम गर्न योगदान पुऱ्याउने अभिप्रायले यो क्रियाकलाप संचालन गरिनेछ । कार्यक्रम संचालन भएको ठाउँमा देहायका विवरणहरु सहितको एउटा होर्डिङ्ग बोर्ड समेत राख्नुपर्नेछ । कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि प्रगतिमा निम्न बुदाहरु समावेश गर्नुपर्नेछ:

- क्रियाकलाप संचालन भएको सामुदायिक वनको नाम, ठेगाना, स्थान (GPS Point),
- क्षेत्रफल, लाभान्वित घरधुरी, लागत,
- खेती विस्तार गरिएको जडीबुटीको प्रकार,
- लागत,
- कार्यक्रम संचालन गर्दा देखापरेका समस्याहरु ।

१.६१.सामुदायिक वनमा पर्यापर्यटन विकास सहयोग प्याकेज

विशेष धार्मिक, सास्कृतिक, ऐतिहासिक महत्व राख्ने क्षेत्र, जैविक विविधता, वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको लागि महत्वपूर्ण क्षेत्र भएको सामुदायिक वन क्षेत्रको प्रवर्द्धन गर्न वातावरणमा कुनै असर नपर्ने गरी वन ऐन तथा नियमावली, सा.व. निर्देशिका, सा.व. विकास मार्गदर्शन र समूहको विधान तथा कार्ययोजनाको परिधिभित्र रही कार्यक्रम संचालन गर्न सकिनेछ । यसको लागि कार्यक्रम प्याकेजमा तयार गरी समूहको भेलाबाट पारित गराई संचालन भएको कार्यक्रममा खर्च गर्न सकिनेछ ।

१.६२. हरित रोजगारमुखी उद्यम विकास/लघु उद्योग विकास सहयोग

समुदायसंग ७५:२५ को अनुपातको साभेदारीको अवधारणामा संचालन गरिने यो कार्यक्रममा संलग्न साभेदार संस्थाबाट न्यूनतम २५ प्रतिशतको लगानी अनिवार्य गर्ने गरी सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह, सहकारी संस्था, सामुदायिक विकास संगठन र स्थानीय निकाय संगको साभेदारीमा सञ्चालन गरिनेछ। यसको लागि जिल्ला वन कार्यालयले प्रस्ताव आव्हान गर्ने, एक प्राविधिक टोली गठन गरी प्रस्ताव मूल्यांकन गरी, उत्कृष्ट प्रस्ताव छनोट गरी उद्यम संचालनको लागि सम्झौता गर्नुपर्नेछ। प्रस्ताव छनोट गर्दा व्यवसायिक योजना, सामुदायिक वनको वन पैदावार प्रशोधन तथा मूल्य अभिवृद्धि गर्ने किसिमका र लघुवित्तसंग साभेदारी भएका प्रस्तावलाई प्राथमिकतामा राखिनेछ।

- साभेदार संस्थाको नाम ठेगाना र अनुदान वापत दिएको रकम,
- सञ्चालन गरिएको कार्यक्रमको विवरण,
- फोटो तथा होर्डिङ बोर्ड।

१.६३. चौडापाते वनमा रुपान्तरण (Forest Conversion)

वृक्षारोपण गरी हाल कोणधारी प्रजाति (Conifer Species) भएको वनमा यदि प्राकृतिक रुपमा चौडापाते प्रजातिको पुनरुत्पादन भई रहेको वा हुन सक्ने ग्यारेन्टी गर्न सकिन्छ भने त्यस्तो वन क्षेत्रलाई चौडापाते वनमा रुपान्तरण गर्न सकिनेछ। यसको लागि विस्तृत कार्ययोजना बनाएर कार्यक्रम संचालन गर्नुपर्दछ। कार्ययोजना बनाउने लगायत कटान, संरक्षण, वृक्षारोपण आदि कार्यमा यसमा विनियोजित रकम खर्च गर्न सकिनेछ।

१.६४. वाँस व्यवस्थापन कार्यक्रम

वाँसको कलमी/कटिङ्ग विरुवा उत्पादन, खरिद, रोपण आदिजस्ता वाँसको संरक्षण, विकास र सदुपयोग सम्बन्धी कार्यमा यो रकम खर्च गर्न सकिनेछ।

१.६५. जडीवुटी पहिचान तथा उपयोगिता सम्बन्धी तालिम

सैद्धान्तिक विषयको साथ साथै यसको संरक्षण र विकास गर्न उपभोक्ताहरूलाई सामुदायिक वनमा रहेका विभिन्न प्रजातिका गैरकाष्ठ वन पैदावार विशेष गरी जडीवुटीहरूको फिल्डमा नै पहिचान गर्न र यसको उपयोगिता सम्बन्धमा जानाकारी आदानप्रदान गर्न यो तालिम संचालन गरिनेछ। जडीवुटी सम्बन्धमा वढी चासो राख्ने स्थानीय समूहका व्यक्तिहरू मध्येबाट समावेशीकरणको आधारमा यस तालिममा सहभागी गराईनेछ।

१.६६. सामुदायिक वन व्यवस्थापन स्थलगत अभ्यास

सामुदायिक वनको प्रकार, किसिम तथा अवस्थाको आधारमा सिफारिस गरिएको वन व्यवस्थापनको क्रियाकलापहरू संचालन गर्न स्थानीय उपभोक्ता समूहहरूलाई अभिप्रेरित गर्न एक दिने स्थलगत अभ्यास संचालन गरिने छ। यो कार्यक्रम सम्पन्न गर्न वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन सम्बन्धी कार्यविधि २०७१ तथा नेपाल सरकार वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालयबाट स्वीकृत नर्मस् एवं जिल्ला दररेटको प्रयोग गर्न सकिनेछ। कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न बुँदाहरू समावेश गर्नु पर्ने छ :

- अभ्यास संचालन गरिएको समूहको नाम, ठेगाना,
- अभ्यासका गतिविधि देखिने फोटो,
- लागत खर्च,
- वन व्यवस्थापनका मुख्य क्रियाकलापहरू तथा फोटो र होर्डिङ बोर्ड।

१.६७. वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन अभ्यास/ दिगो वन व्यवस्थापन स्थलगत कोचिङ

वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन सम्बन्धी अभ्यासको कार्यक्रम वन सम्वर्द्धन प्रणालीमा आधारित भै कार्य संचालन गर्ने सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहमा संचालन गरिनेछ। कार्यक्रम संचालन गर्दा वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालयबाट स्वीकृत नर्मसलाई पालना गर्नुपर्नेछ। कार्यक्रमको नाम अभ्यास नै भएकोले अनिवार्य रुपमा Field level मा नै सञ्चालन गर्नुपर्नेछ। अनुभवी वनप्राविधिकबाट संचालन गराउनु पर्दछ।

१.६८. स्कूल वन हरियाली विकास कार्यक्रम

जिल्ला वन कार्यालयको सहयोगमा जिल्लास्थित रहेका विद्यालयमा हरियाली विकास गर्न यो कार्यक्रम गरिनेछ। यस कार्यक्रमबाट विद्यालयका कम्पाउण्डमा वृक्षारोपण गर्ने, हरियाली विकास गर्ने, विद्यालयमा वन तथा जडीवुटीजन्य विरुवा उत्पादन गर्ने, विद्यार्थीबीच बौद्धिक प्रतिस्पर्धा गराउने जस्ता कार्य संचालन गर्न सकिनेछ। यो कार्यक्रम नेपाल सरकारको प्रचलित नर्मसको अधिनमा रही संचालन गर्न सकिनेछ। कार्यक्रम संचालनको लागि संबन्धित विद्यालयसंग वन हरियाली

सम्बन्धी संक्षिप्त योजना (प्रस्तावना) तयार भएको हुनुपर्नेछ । विद्यालयबाट प्राप्त प्रस्तावना वन कार्यालयले स्वीकृत गरी विद्यालयसंगको सम्झौता बमोजिम कार्यक्रम संचालन गर्नु पर्नेछ । कार्यक्रमका गतिविधि देखिने फोटो सहितका विवरण भएको प्राविधिक र आर्थिक प्रतिवेदन प्रस्तुत गर्नुपर्नेछ ।

१.६९. जडीवुटी दिगो संकलन, भण्डारण तथा प्रशोधन तालिम

गैरकाष्ठ वन पैदावारको खेती विस्तार, दिगो संकलन तथा प्रशोधन कार्यमा सघाउ गर्नको लागि आवश्यक ज्ञान तथा सीप प्रदान गर्न स्थानीय स्तरमा यो तालिम संचालन गर्नु पर्नेछ । यस तालिममा गैरकाष्ठ वन पैदावारको खेती तथा उद्यममा संलग्न व्यक्ति तथा समूहका सदस्य छनौट गर्नुपर्दछ ।

१.७०. गैरकाष्ठ वन पैदावार व्यवस्थापन तथा उद्यम विकास तालिम

यो तालिममा गैरकाष्ठ वन पैदावारको संकलन, व्यवस्थापन तथा विक्री वितरण एवं उद्यम स्थापना तथा संचालनमा संलग्न सा.व. का उपभोक्ता र निजी उद्यमीहरूलाई भ्यालु चेन, बजार, विजनेस योजना, स्रोतको दिगो उपलब्धता तथा साभेदारी एवं मौजुदा नीति नियम तथा व्यवस्था सम्बन्धि जानकारी दिनु पर्नेछ । यसका लागि विशेषज्ञ सेवाप्रदायकलाई संलग्न गराउन सकिनेछ ।

१.७१. अल्लो र खोटो संकलन एवं व्यवस्थापन तालिम

अल्लो तथा खोटो संकलन प्रचुरमात्रामा हुने क्षेत्रहरूमा ती वन पैदावारको दिगो संकलन तथा उपयोगका लागि संकलन कार्यमा संलग्न कामदार तथा उपभोक्ताहरूलाई व्यवस्थित वन पैदावार संकलन सम्बन्धी तालिम प्रदान गरिनु पर्दछ । तालिम संचालन गर्नका लागि सम्बन्धित कार्यालयले स्वीकृत कार्यक्रममा तोकेको विषयमा ज्ञान सीप भएको र उपभोक्ताहरूसँग सहजीकरण गर्न सक्ने स्थानीय स्रोत व्यक्तिको रोष्टर तयार गर्नुपर्नेछ । यस्ता स्रोत व्यक्तिहरूमा सो विषयसँग सम्बन्धित कार्यालयका कर्मचारीका अतिरिक्त कृषक, व्यापारी र अन्य सरोकारवाला सरकारी/गैरसरकारी निकायमा कार्यरत कर्मचारीहरू पनि हुन सक्ने छन् ।

१.७२. वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन प्रचार प्रसार सामग्री निर्माण

सरोकारवालाहरू बीच वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन सम्बन्धी सकारात्मक धारणा बनाउन यसबाट स्थानीय रोजगारी, काठदाउरा उत्पादनमा पर्ने सकारात्मक असर, परम्परागत रूपमा वनको संरक्षण गर्दा प्राप्त हुने लाभ तथा अवसरहरू, आदि विषयमा सामग्रीहरू उत्पादन तथा वितरण गर्न यो कार्यक्रम संचालन गरिनेछ । सामग्री निर्माण गर्दा प्रचलित नियम बमोजिम गरिनेछ ।

१.७३. इलाका/सेक्टर स्तरिय सामुदायिक वन अन्तर्क्रिया तथा योजना तर्जुमा गोष्ठी

इलाकास्तरमा रहेका सामुदायिक वन समूहहरूसँग छलफल तथा सिकाई आदान प्रदान गर्न, आगामी वर्षको वन सम्बन्धी इलाकास्तरको कार्यक्रम बनाउन, विषयगत समस्या र चुनौतीको समाधानको उपायहरू अवलम्बन गर्न एकदिने गोष्ठी आयोजना गरिनेछ । यसमा वन कर्मचारी, वन समूहहरूका प्रतिनिधिहरू, वन उपभोक्ता महासंघका इलाका प्रतिनिधिहरू, अन्य वन समूहका प्रतिनिधिहरू, वन उद्यमीहरू समेत संलग्न रहने छन् । इलाकास्तरमा तयार भएको यस योजनालाई जिल्ला वन कार्यालयको वार्षिक योजना तर्जुमा गोष्ठीमा पेश गर्नु पर्दछ ।

१.७४. वार्षिक योजना तर्जुमा गोष्ठी

प्रत्येक वर्ष जिल्ला वन कार्यालयबाट जिल्लामा गरिने कृयाकलापको छलफल गराउनु पर्दछ । यस योजना तर्जुमा कार्यमा जिल्लाका सम्पूर्ण इलाका वन कार्यालय, सेक्टर वन कार्यालयका प्रमुखहरूको अनिवार्य सहभागिता गराउनु पर्दछ । कार्यक्रमको सान्दर्भिकता हेरी जिल्लास्थित अन्य निकाय र विषयसँग सम्बन्धित प्रतिनिधि वा सरोकारवाला व्यक्तिलाई समेत समावेश गर्न सकिने छ । यसमा आगामी वर्षको लागि योजना तयार गरी जि.व.का. बाट स्वीकृत गराएर क्षेत्रीय योजना तर्जुमा गोष्ठीमा पेश गर्नुपर्दछ । गोष्ठीमा गरिने अन्य कार्यहरू:

- आ-आफ्नो इलाकाबाट संचालन हुने कार्यक्रमको योजना तयार गर्ने र पारित गराउने,
- जिल्लास्थित अन्य निकायसँग सहकार्य गर्न सकिने कार्यक्रमहरूको पहल गर्ने ।

१.७५. जिल्लास्तरीय प्रगति समीक्षा बैठक

प्रत्येक आर्थिक वर्षको समाप्तिसँगै जिल्ला वन कार्यालयबाट संचालन गरिएका सम्पूर्ण कृयाकलापको छलफल गराउनु पर्दछ । यस प्रगति समीक्षा कार्यमा जिल्लाका सम्पूर्ण इलाका वन कार्यालय, सेक्टर वन कार्यालयका प्रमुखहरूको अनिवार्य सहभागिता गराउनु पर्दछ । कार्यक्रमको सान्दर्भिकता हेरी जिल्लास्थित अन्य निकाय र विषयसँग सम्बन्धित प्रतिनिधि वा सरोकारवाला व्यक्तिलाई समेत समावेश गर्न सकिनेछ । यस गोष्ठीको मुख्य कार्य निम्नानुसारका हुनेछन् :

- आ-आफ्नो इलाकाबाट संचालन भएका कार्यक्रमको छलफल गर्ने,
- जिल्लास्थित अन्य निकायसंग सहकार्य गर्न सकिने कार्यक्रमहरूको पहिचान गर्ने,
- असल अभ्यासको पहिचान गरी विस्तार गर्ने,
- देखा परेका समस्या/चुनौतीको समाधानको उपाय खोज्ने ।

१.७६. लैङ्गिक तथा सामाजिक समावेशीकरण प्रवर्धन तालिम (१५ जना २ दिने)

वनक्षेत्रको लै.सा.स. रणनीतिले राखेको सोचलाई विस्तार गरी सा.व.उ.स.हरूमा सामाजिक समावेशीकरणको प्रवर्द्धनका लागि यो तालिम गर्नुपर्नेछ । तालिममा सहभागी छनौट गर्दा विशेष ध्यान दिई सबै वर्ग र समुदायका उपभोक्ताहरूलाई सहभागी गराउनुपर्नेछ ।

१.७७. रेकर्ड किपिङ्ग, तथा लेखा सुदृढीकरण कोचिङ्ग

यस अन्तर्गत सामुदायिक वन र कबुलियती वन समूहमा कार्यरत वा सोसंग सम्बन्धित कर्मचारी, परिचालक, स्रोत व्यक्तिहरूलाई रेकर्ड किपिङ्ग तथा लेखा व्यवस्थापन सम्बन्धी तालिम दिईनेछ । तालिम/गोष्ठी संचालन गर्दा नर्मसको अधीनमा रही संचालन गरिनेछ । कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न बुदाहरू समावेश गर्नुपर्नेछ :

- गोष्ठीका विषयवस्तु, प्रतिवेदन, औचित्य,
- सहभागी संख्या र तालिम अवधि ।

१.७८. सामुदायिक वन द्वन्द्व व्यवस्थापन गोष्ठी

विशेष गरी वनस्रोत संरक्षण तथा सदुपयोगमा द्वन्द्वग्रस्त समूहहरूमा छुट्टाछुट्टै वा दुई समूहको संयुक्तरूपमा यो गोष्ठी संचालन गर्न सकिनेछ । समूहको आन्तरिक तथा अन्तरसमूह विवादको कारण पत्ता लगाई न्यूनीकरणका लागि सहजीकरण तर्फ यो गोष्ठी लक्षित हुनुपर्दछ । यसका लागि जि.व.का. ले सहजकर्तालाई समेत संलग्न गर्न सक्नेछ ।

१.७९. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको विधान तथा कार्ययोजना कार्यान्वयन अनुशिक्षण तथा सहयोग

यस कार्यक्रम बाट सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको स्वीकृत विधान तथा कार्ययोजनामा उल्लेख गरिएका विषय वस्तुबारे समूहका सदस्यहरूलाई जानकारी गराउने विविध गतिविधि, अन्तर्कृया गर्नुका साथै योजना अनुसारका कृयाकलाप सम्पन्न गर्न समेत खर्च गर्न सकिने छ । यसमा सामुदायिक वन विकास कार्यक्रमको परिमार्जित मागदर्शन, सामुदायिक वनको कार्ययोजना कार्यान्वयन सम्बन्धी समूहलाई कोचिङ्ग गर्न सकिनेछ ।

१.८०. सामुदायिक वन भित्र कबुलियती वन कार्ययोजना कार्यान्वयन अनुशिक्षण

यस कार्यक्रमबाट सामुदायिक वन भित्र कबुलियती वन सम्बन्धित स्वीकृत विधान तथा कार्ययोजनामा उल्लेख गरिएका विषय वस्तुबारे समूहका व्यक्तिहरूलाई जानकारी गराउन विविध गतिविधि, अन्तर्कृया गर्नुका साथै योजना अनुसारका कृयाकलाप सम्पन्न गर्ने समेत खर्च गर्न सकिने छ ।

१.८१. सामुदायिक वन समन्वय तथा अन्तर्क्रिया बैठक

सामुदायिक वन महाशाखाबाट सामुदायिक तथा कबुलियती वनको विकास तथा व्यवस्थापनसंग सरोकार राख्ने व्यक्ति, संघ/संस्थाहरूको प्रतिनिधित्व हुने गरी सम्पन्न गरिएका कार्यहरूको समीक्षा, सफलताका कथाहरू तथा अनुभव आदान प्रदान, तयार भईरहेका/हुने नीति तथा कार्यक्रमहरूमा आवश्यक राय तथा सुझाव संकलन, आदि विषयमा नियमित रूपमा समन्वय तथा अन्तर्क्रिया गर्न यो कार्यक्रम सञ्चालन गर्दा आवश्यक व्यवस्थापन गर्न खर्च गर्न सकिनेछ ।

१.८२. टिम बिल्डिङ्ग गोष्ठी

जिल्लामा कार्यरत कर्मचारीका लागि यो गोष्ठी संचालन गरिनेछ । यो गोष्ठी संचालनका लागि स्वीकृत सरकारी नर्मसको प्रयोग गर्नु पर्दछ । टिम बिल्डिङ्ग गोष्ठीका लागि सम्बन्धित विषयमा विज्ञलाई स्रोत व्यक्ति बनाई संचालन गरिनुपर्दछ । गोष्ठी संचालन पछि अध्ययन गरिएका विषयवस्तु, सेसन प्लान, सहभागी संख्या र नामावली, व्यानर सहितका फोटोहरू, गोष्ठीको सकारात्मक तथा नकारात्मक पक्ष सहितको प्रतिवेदन समावेश गरिनु पर्दछ ।

१.८३. महिला वन प्राविधिकहरुवीच अन्तर्क्रिया

वन विभाग र अन्तर्गतका कार्यालयहरु, वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालय र क्षेत्रीय वन निर्देशनालयहरुमा कार्यरत महिला वन प्राविधिकहरु तथा Gender Focal Personवीच अन्तर्क्रिया कार्यक्रम संचालन गरिनेछ । आवश्यकता अनुसार अन्य निकायहरुबाट पनि सहभागी गराउन सकिनेछ । वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालयबाट स्वीकृत GESI Strategyकै मर्म अनुरूप यस कार्यक्रमबाट महिला वन प्राविधिकहरुको तथ्यांक अध्यावधिक गर्न, फिल्डमा महिलाका मुद्दाहरुलाई संकलन गर्न, सम्बन्धीत ऐन, नियम, रणनीति लगायत अन्तराष्ट्रिय सन्धी सम्झौताहरु आदिको बारेमा जानाकारी आदान प्रदान गर्न, त्यसलाई सम्बोधन गर्न आवश्यक पहलको लागि यो कार्यक्रम सहयोगी हुनेछ । लगत ईष्टिमेट तयार तथा स्वीकृत भएपछि मात्र कार्यक्रम संचालन गर्नुपर्नेछ । कार्यक्रम आवश्यकता र स्वीकृत ईष्टिमेटको परिधिभित्र रही एकै पटक वा वढी पटक वा चरणबद्ध रूपमा केन्द्रमा मात्र वा आवश्यकता अनुसार क्षेत्रमा पनि गर्न सकिनेछ । यो कार्य परामर्शदाता मार्फत पनि सम्पन्न गर्न सकिनेछ ।

१.८४. जिल्लाबाट संचालन भएका सम्पूर्ण कार्यक्रमहरुको वार्षिक प्रगति पुस्तिका प्रकाशन

जिल्ला वन कार्यालयहरुले विभिन्न स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रमहरु संचालन गरेका हुन्छन् । यस वाहेक वन सम्बन्धी कानून कार्यान्वयन तथा नियमन कार्यहरु समेत सम्पादन गरिरहेका छन् । यी सबै कार्यलाई अभिलेखीकरण गर्न यो क्रियाकलाप संचालन गरिनेछ । तथ्यांक संकलन, विश्लेषण, मसलन्द, छलफल, छपाई आदिमा यो रकम खर्च गर्न सकिनेछ । कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न बुँदाहरु समावेश गर्नुपर्नेछ :

- प्रकाशित सामग्रीको संख्या,
- प्रकाशित सामग्रीको डिजिटल कपि समेत ।

१.८५. वन वातावरण, वन्यजन्तु एवं जैविक विविधता सम्बन्धी विभिन्न दिवस, महोत्सव तथा समारोह

वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालय तथा वन विभागले निश्चित गरेको मितिमा वातावरण दिवस, वन महोत्सव, सामुदायिक वन दिवस जस्ता समारोह सञ्चालन गरिनेछ । यसको लागि जिल्ला वन कार्यालयहरुले आफ्नो आवश्यकता अनुसारका कार्यक्रम तय गरी ल.ई. समेत स्वीकृत गरी आवश्यक रकम खर्च गर्न सक्नेछन् । कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न बुँदाहरु समावेश गर्नु पर्ने छ :

- समारोह अन्तर्गत गरिएका क्रियाकलापहरु,
- क्रियाकलापहरु संचालन गरिएका स्थान,
- फोटो तथा होर्डिङ्ग बोर्ड ।

१.८६. सामुदायिक वनको बुलेटिन तयारी तथा प्रकाशन

सामुदायिक वन महाशाखाबाट सम्पन्न गरिएका कार्यहरुको विश्लेषण, स्थलगत सवाल, अनुभवजन्य लेख र सामुदायिक तथा कवुलियती वन कार्यक्रमका सफलताका कथाहरु संकलन, छपाई तथा प्रकाशन गरी वितरण गर्न यो कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ ।

१.८७. सामुदायिक वनको आधार र सूचकांकहरु उत्पादन तथा प्रकाशन

विद्यमान कार्यान्वयन स्थितिको अध्ययन गरी दिगो सामुदायिक वन व्यवस्थापनका आधार र सूचकांकहरु तय गर्ने, छलफल, फिल्ड टेस्ट गरी परिमार्जित आधार तथा सूचकांक प्रकाशन गरिनेछ ।

१.८८. सा.व.मा वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन कार्यविधि/निर्देशिका तयारी तथा प्रकाशन

उपभोक्ता समूह मार्फत सामुदायिक वन संरक्षित हुँदै गएको अवस्थामा पूर्ण क्षमताका साथ व्यवस्थापन गरी व्यवसायिक रूपमा वन उत्पादन गर्न वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन सुरु भएको छ । सुरुवाती सकारात्मक परिणामलाई अन्यत्र समेत फैलाई वैज्ञानिक वन व्यवस्थापनलाई विस्तार गर्न सामुदायिक वनमा वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन कार्यविधि निर्माण तथा प्रकाशन गरिनेछ ।

१.८९. सामुदायिक तथा कवुलियती वन उपभोक्ताहरुमा संचालित उद्यमहरुको सर्भेक्षण तथा अध्यावधिक (Inventory and documentation)

सामुदायिक वन महाशाखामा नयाँ वन उद्यम शाखा रहेको र यस शाखासँग सम्बन्धित भावी कार्यक्रमहरु तयार गर्नका लागि पनि सामुदायिक तथा कवुलियती वन उपभोक्ताहरुमा संचालित उद्यमहरुको तथ्याँक आवश्यक हन्छ । वन विभागसँग यस

किसिमको तथ्यांक हालसम्म नभएको हुँदा सामुदायिक तथा कवुलियती वन कार्यक्रमबाट जिल्लाहरुमा हालसम्म भएका उद्यमहरुको तथ्यांक संकलन तथा विश्लेषण गर्न यो क्रियाकलाप संचालन गरिनेछ । यस कार्यको लागि परामर्शदाता मार्फत पनि सेवा लिन सकिनेछ ।

१.९०. सामुदायिक वनमा भएको वृक्षारोपणको तथ्याङ्क अध्यावधिक

सामुदायिक वन महाशाखामा नयाँ वृक्षारोपण प्रविधि शाखा रहेको र यस शाखासँग सम्बन्धित भावी कार्यक्रमहरु तयार गर्नका लागि पनि यससँग सम्बन्धित तथ्यांक आवश्यक हुने हुँदाहालसम्म भएका वृक्षारोपणहरुको तथ्यांक संकलन तथा विश्लेषण गर्न यो क्रियाकलाप संचालन गरिनेछ । यो कार्य सम्पादनको लागि परामर्शदाता पनि प्रयोग गर्न सकिनेछ ।

१.९१. सामुदायिक वनको तथ्यांक व्यवस्थापन सहजीकरण

सामुदायिक वन महाशाखामा रहेको सामुदायिक वनको केन्द्रीय तथ्यांक प्रणाली (Software)संशोधित मार्गदर्शनका सूचकलाई समेत समावेश गरीपरिमार्जन गरी । सोहि बमोजिम तथ्याङ्क अध्यावधिक गरिनेछ ।

१.९२. सा.व.अन्तर्राष्ट्रियस्तर अध्ययन केन्द्र स्थापना सम्भाव्यता अध्ययन

सामुदायिक वन महाशाखाले यस सम्बन्धी कार्यसूची तयार गरी विभागीय स्वीकृति पश्चात् सम्बन्धित जिल्ला वन कार्यालयमा कार्यान्वयनको लागि पठाईने छ । कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि त्यसको प्रतिवेदन तयार गरी एक प्रतिसामुदायिक वन महाशाखामा पठाउनुपर्नेछ ।

१.९३. सा.व.को वैज्ञानिक व्यवस्थापनबाट उत्पादन भएका काठ दाउरा घाटगद्दी निर्माण व्यवस्थापन तारवार सहित

सा.व.बाट उत्पादित काठ दाउरा सुरक्षित र व्यवस्थित रुपमा घाटगद्दि गर्न यो क्रियाकलाप संचालन गर्नुपर्ने छ । जिल्ला वन कार्यालयले उपयुक्त स्थान छनोट गरी आवश्यक स्थानमा तारवार समेत गर्न सक्नेछ । कार्यक्रम वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालयको स्वीकृत नर्मस् अनुसार लगत ईष्टिमेट तयार गरी स्वीकृत भएपछि कार्यक्रम संचालन गरिनेछ । तारवार गरिने घाटगद्दी स्थल स्थायी प्रकृतिको हुनुपर्दछ ।

१.९४. सा.व. पत्रकारिता पुरस्कार

सामुदायिक वन संरक्षण एवं वैज्ञानिक तथा दिगो व्यवस्थापन सम्बन्धी स्थलगत रिपोर्ट, अनुसन्धानमूलक लेख, रचना तथा विविध तरिकाबाट सामुदायिक वनको विषयमा प्रचार प्रसार तथा प्रकाशन गर्ने पत्रकारलाई कार्यविधि तयार गरी सोही बमोजिम पुरस्कार प्रदान गरिनेछ ।

१.९५. कार्यक्रम कम्पाईल/पुनरावलोकन/पृष्ठपोषण/कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि तयारी

कार्यक्रम संचालनका लागि विभागीयस्तरमा समन्वय गर्ने, संयुक्तरुपमा अन्तर विभागीय बैठकहरु बस्ने, कार्यक्रमको प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि निर्देशिका तथा कार्यविधिहरु तयारी गर्ने, ती निर्देशिका तथा कार्यविधिहरुको अभिमुखीकरण, फिल्ड परीक्षण तथा आवश्यकता अनुरूप परिमार्जन गर्ने, संयुक्तरुपमा कार्यक्रमको अनुगमन तथा प्रभाव अध्ययन गर्ने र तिनका निष्कर्ष तथा सुझावहरु आगामी वर्षका कार्यक्रम तयारीमा उपयोग गरिनेछ । कार्यक्रम/कार्यविधि तयारी, कम्पाईल, प्रिन्ट आदिको क्रममा खाजा, भत्ता, स्टेशनरी लगायत यसको लागि आवश्यक खर्चको लागि यसमा विनियोजित रकम खर्च गर्न सकिनेछ ।

१.९६. गणेशमान सिंह पुरस्कार

जिल्ला वन कार्यालयहरुले आ-आफ्नो जिल्लामा रहेका सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहहरु मध्ये उत्कृष्ट समूहलाई निर्दिष्ट गरिएको मापदण्ड र सूचकहरुको आधारमा सिफारिस सहित वन विभागमा पठाउने र जिल्लाबाट प्राप्त भएका विवरणहरुको आधारमा सामुदायिक वन महाशाखाले विज्ञहरु समेतको संलग्नतामा पुनःमूल्याङ्कन गरी उत्कृष्ट समूहलाई पुरस्कृत गरिनेछ । गठित टोलीको लागि स्थलगत निरीक्षण, अन्तरक्रिया संचालन, बैठक, छुपाई लगायतका कार्यमा आवश्यक रकम समेत छुट्टयाउन सकिनेछ । क्रियाकलाप संचालन पश्चात् मूल्याङ्कन समितिले तोकेको सो संख्यामा समूहहरु पुरस्कृत हुने छन् । यसै प्रकारका राष्ट्रिय स्तरका अन्य पुरस्कार समेत मूल्यांकन समितिले सिफारिस गरे अनुसार प्रदान गरिनेछ ।

१.९७. उत्कृष्ट सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह पुरस्कार

सामुदायिक वन विकास कार्यक्रमको मार्गदर्शन, २०७१ को अनुसूचीमा उल्लेखित सामुदायिक वन अनुगमनका सूचकहरु मध्ये गणेशमान सिंह सामुदायिक वन राष्ट्रिय पुरस्कारको लागि निर्धारण गरिएका मापदण्ड र सूचकका आधारमा जिल्लाका सम्पूर्ण

सामुदायिक वनको मूल्यांकन गरी उत्कृष्ट तीन सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहलाई प्रथम, दोश्रो तथा तेश्रो पुरस्कार र प्रमाणपत्र प्रदान गरिने छ । यसले अन्य सामुदायिक वनलाई समेत उत्कृष्ट कार्य संचालन गर्न हौसला र प्रेरणा प्रदान गर्नेछ । कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न बुँदाहरु समावेश गर्नु पर्ने छ :

- पुरस्कार प्रदान गरिएको सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहहरुको नाम र ठेगाना,
- पुरस्कृत हुनाको कारण (समूहको विशेषता),
- गणेशमान सिंह राष्ट्रिय पुरस्कारको लागि सिफारिस गरिएको पत्र ।

जिल्लामा पुरस्कृत सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह र सामुदायिक वनको विस्तृत विवरण सहित राष्ट्रियस्तरमा गणेशमान सिंह राष्ट्रिय पुरस्कारको लागि सिफारिस गरी अनिवार्य रुपमा वन विभागमा पठाउनुपर्नेछ ।

१.९८. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको अनुगमन र निरीक्षण

सामुदायिक वन विकास कार्यक्रमको परिमार्जित मागदर्शनले निर्धारण गरेको प्रक्रियाहरु तथा वन कार्ययोजनामा निर्दिष्ट गरिएका कार्यहरु संचालन भए नभएको परीक्षण गर्न हस्तान्तरित सबै सामुदायिक वनहरुको निरीक्षण तथा अनुगमन गर्नुपर्नेछ । अनुगमनबाट प्राप्त नतिजाहरुलाई लिपिबद्ध गर्न अनुगमन पुस्तिका प्रकाशन गर्ने र सामुदायिक वनहरुलाई आवश्यक निर्देशनहरु प्रदान गर्न यो कार्यक्रम संचालन गरिनेछ । यो कार्यक्रम सम्पन्न गर्न आवश्यकता अनुसार स्थलगत निरीक्षण, समूहसंग छलफलमा चियापान, मसलन्द तथा इन्धन, तथ्यांक विश्लेषण एवं छपाई आदि कार्यमा आवश्यक बजेट खर्च गर्न सकिनेछ । कार्यक्रम सम्पन्न पछि ईलाका अनुसारका अनुगमन गरिएका सामुदायिक वन समूहको संख्या तथा गतिविधि विश्लेषण सहितको अनुगमन पुस्तिका प्रकाशन गरिनेछ ।

१.९९. सञ्चालित कार्यक्रमको निरीक्षण तथा पृष्ठपोषण

स्वीकृत कार्यक्रमको प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि क्षेत्रीय वन निर्देशनालय र वन विभागबाट समय समयमा अनुगमन हुनेछ । सोबाट प्राप्त सुझावलाई पृष्ठपोषणको रुपमा लिई कार्यक्रमको कार्यान्वयनलाई अगाडि बढाउनुपर्नेछ । कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्ने निकाय स्वयंले नियमित रुपमा कार्यक्रमको अनुगमन गरी कार्यक्रमलाई पृष्ठपोषण गर्नुपर्ने छ । जिल्ला वन कार्यालयलाई यस कार्यक्रमको सम्बन्धमा वन विभागले आवश्यक सहयोग र सहजिकरण गर्नेछ । जिल्लाहरुमा पठाईएको कार्यक्रमहरुको प्रगति विवरण प्रत्येक महिनाको ७ गते वन विभागमा आइपुग्नुपर्नेछ ।

१.१००. फर्निचर (दराज, सोफासेट, कुर्सी, टेबुल) तथा उपकरण (जि.पि.एस, कम्प्युटर, फ्याक्स, प्रिन्टर) आदि खरिद

कार्यक्रम संचालन गर्ने निकाय/कार्यालयको संस्थागत सुदृढीकरण गरी आवश्यक फर्निचर तथा उपकरणहरु तथा कार्यसम्पादनमा प्रभावकारिता र सेवा प्रदानको गुणस्तरमा वृद्धि गर्न आवश्यक पर्ने उपकरणहरु खरिद गर्न सकिनेछ । यस अन्तर्गत मेशिनरी औजार जस्तै कम्प्युटर/ल्यापटप, प्रिन्टर, फोटोकपी, फ्याक्स, जि.पि.एस., रिसिभर, कम्पास, हिप्सोमिटर, रिलास्कोप, क्लीनोमीटर, अल्टिमिटर, टेलिफोन, फर्निचर, आदि जस्ता सामानहरु सार्वजनिक खरिद प्रकृया अवलम्बन गरी खरिद गरिनेछ । फर्निचर्स तथा उपकरण खरिद पश्चात् नियमानुसार भण्डार दाखिला गरी भपाई वनाई प्रयोग गर्नु पर्दछ । आपूर्ति र प्रयोग पश्चात् सम्बन्धित कार्यालयको कार्य सम्पादन गर्ने तथा सेवा प्रवाह गर्ने क्षमतामा अभिवृद्धि भएको हुनेछ भन्ने अपेक्षा लिएको छ ।

२. राष्ट्रिय वन विकास तथा व्यवस्थापन कार्यक्रम

२.१. जलजला क्षेत्र व्यवस्थापन कार्यक्रम (रोल्पा)

रोल्पा जिल्लाको जैविक विविधताले भरिपूर्ण जलजला क्षेत्रको संरक्षण एवं स्थानीय जनताको समृद्धिको लागि त्यस क्षेत्रको अध्ययन गरी कार्ययोजना तयार गरी नियमानुसार वन विभागबाट कार्ययोजना स्वीकृत गराई कार्यन्वयन गर्नुपर्नेछ। विनियोजित रकम जैविक विविधता संरक्षण तथा स्थानीय गरिब जनताको जीविकोपार्जन अभिवृद्धि गर्ने कार्यमा प्रचलित ऐन, नियम तथा नर्मस् अनुसार खर्च गर्नु पर्नेछ। जिल्ला वन कार्यालय सँगको सहकार्यमा सेवा प्रदायकबाट सेवा खरिद गरी कार्य सञ्चालन गर्न सकिने।

२.२. रामारोशन क्षेत्र व्यवस्थापन कार्यक्रम

जैविक विविधताले भरिपूर्ण अछाम जिल्लाको रामारोशन क्षेत्रको संरक्षण एवं स्थानीय जनताको समृद्धिको लागि त्यस क्षेत्रको अध्ययन गरी व्यवस्थापन कार्ययोजना तयार गरी वन विभागबाट कार्ययोजना स्वीकृत गराई कार्यन्वयन गर्नुपर्नेछ। विनियोजित रकम जैविक विविधता संरक्षण तथा स्थानीय गरिब जनताको जीविकोपार्जन अभिवृद्धि गर्ने कार्यमा प्रचलित ऐन, नियम तथा नर्मस् अनुसार खर्च गर्नु पर्नेछ। जिल्ला वन कार्यालय सँगको सहकार्यमा सेवा प्रदायकबाट सेवा खरिद गरी कार्य सञ्चालन गर्न सकिने।

२.३. (क) पश्चिम पहाड भूपरिधिस्तरीय कार्यक्रमको सम्भाव्यता अध्ययन

२.३. (ख) पश्चिम पहाड भूपरिधि नमुना कार्यक्रम

वन विभागबाट विस्तृत कार्यविधि तयार गरि स्वीकृत गरी सोहिबमोजिम गर्ने।

२.४. जिल्ला वन कार्यालय भवन, आवास भवन तथा सेक्टर एवम इलाका भवन निर्माण (अधुरो भवन पूरा गर्ने र कम्पाउण्ड वाल निर्माण समेत)

भवन निर्माण गर्न उपयुक्त स्थल छनौट गर्दा स्थानीय गाविस वा नगरपालिका, जिल्ला विकास समिति, भवन डिभिजन कार्यालय र सरोकारका निकायको समन्वयमा गर्ने। खोला, पहिराको जोखिम नभएको, इलाका भवनको लागि सम्वन्धित इलाकाको कार्यक्षेत्रका सेवाग्राहीलाई पायक पर्ने, पानीको स्रोत भएको, न्यूनतम एक नर्सरी संचालन गर्न मिल्ने क्षेत्र रहेको, नजिकै समाज तथा स्कूल भएको र समग्रमा स्थलगत कर्मचारी परिवार सहित सुरक्षित महशुस गरी वस्न सक्ने क्षेत्र छनौट गर्नुपर्ने। भवन उपयोग हुन नसक्ने स्थानमा कुनै हालतमा पनि निर्माण गर्न हुँदैन।

यी शीर्षकहरुमा विनियोजित भएको रकमबाट आ. व. २०७३/७४ मा कार्यक्रम स्वीकृत भई आएका जिल्लाहरुमा जि. व. का. भवन, सेक्टर एवम इ.व.का. भवन निर्माण गर्ने, अधुरो भवन पूरा गर्ने र आवास भवन मर्मत गर्ने कार्यगर्नुपर्नेछ। नयां भवन निर्माणको लागि वन विभागबाट उपलब्ध गराइएको नक्सा र ल.ई. तथा जिल्ला प्राविधिक कार्यालयबाट तयार गरी स्वीकृत भएको ल. ई. तथा नक्साअनुसार भवन निर्माण कार्य संचालन गर्नुपर्नेछ। प्रचलित आर्थिक प्रशासनसम्बन्धी ऐन नियमलाई पालना गरी निर्माण कार्य अगाडि बढाउनु पर्नेछ। भवन निर्माण कार्यको बजेट जुन आर्थिक वर्षको लागि विनियोजन भएको हो सोही वर्ष भित्र सम्पन्न गरी जाँचपास गराउनुपर्नेछ। निर्माण कार्य सुरु भएको अवस्थादेखि नै मापदण्ड बमोजिम भए/नभएको नियमित अनुगमन गरी प्रतिवेदन पेश गर्नुपर्नेछ।

भवन निर्माणपश्चात् प्रगति पेश गर्दा निम्न विषयहरु समावेश गर्नुपर्नेछ :

- भवन निर्माण स्थल छनौटको प्रतिवेदन,
- भवन निर्माण भएको स्थान र निर्मित भवनको फोटो,
- कार्यक्रमको भौतिक र भारित प्रगति,
- कार्यक्रमको वित्तीय प्रगति

२.५. औजार तथा उपकरण खरिद एवं वितरण

कार्यालयको लागि आवश्यक मेशिनरी उपकरण (कम्प्युटर, प्रिन्टर, फ्याक्स) जि.पि.एस., सोलार, दराज, टेबुल, अफिस सोफा आदि तथा वन व्यवस्थापनका औजार तथा अग्नि नियन्त्रण उपकरणहरु खरिद एवं वितरणको लागि प्रचलित नर्मस् तथा खरिद नियमावलीको अधिनमा रहीजि.व.का. एवं विभागबाट खरिद गर्नुपर्ने छ। वन व्यवस्थापन कार्यको लागि विभाग/केन्द्रबाट खरिद भएको उपकरण तथा औजार वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन कार्य संचालन भएका जि.व.का.हरुलाई पठाईनेछ। साथै अग्नी नियन्त्रण

सम्बन्धि उपकरणहरु आगलागि भएमा जि.व.का. हरुमा जिल्ला वन कार्यालयले सामाग्री उपलब्ध भए पश्चात स्टोर दाखिला प्रतिवेदन उपलब्ध गराउनु पर्नेछ ।

२.६. धार्मिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक स्थलमा संरचना निर्माण तथा हरियाली विकास (वनस्पति सूचना केन्द्र समेत)

यी कार्यक्रमहरु प्राचीन, पौराणिक, धार्मिक र पर्यावरणीय दृष्टिकोणले महत्व राख्ने तपसिलका स्थलहरुमा कार्यान्वयन हुनेछ । यस्ता स्थलहरुमा कार्यक्रम संचालन गर्दा रुख विरुवाहरु हानी नोक्सानी नहुनेगरी हरियाली बृद्धि गर्ने कार्यमा प्रचलित नर्मस् वमोजिम खर्च गरिने छ । यस शीर्षकमा उल्लेखित क्रियाकलापहरु कार्यान्वयन गर्दा सम्बन्धित क्षेत्रीय वन निर्देशनालयसंग समन्वय गर्नुपर्नेछ । जिल्ला वन कार्यालयले सरोकारवाला संघसंस्था वा नागरिक समाजलाई लगानी गर्ने क्रियाकलापहरु कार्यान्वयनको स्पष्ट खाका (योजना) बनाउन लगाई सम्झौता गर्नुपर्नेछ । नियमानुसार लगत ईष्टिमेट स्वीकृत गराई कार्ययोजना बमोजिम खर्च गर्नुपर्नेछ । साथै जि. व. का. ले रकम भुक्तानीको व्यवस्था मिलाउनु पर्नेछ । संचालित कार्यक्रमको जि. व. का. बाट नियमित अनुगमन गरी प्राविधिक सहयोग उपलब्ध गराउनुपर्नेछ । कार्यान्वयन गर्ने संस्थाले जिम्मेवारीपूर्वक स्रोतको सही उपयोग गर्दै पारदर्शिताको सिद्धान्तको पालना गर्नुपर्नेछ, यस्तो भए नभएको बारे जिल्ला वन कार्यालयले प्रत्यक्ष निगरानी राख्नुपर्नेछ ।

तपसिल

१. रम्भापानी रन्जीकादेवी धार्मिक क्षेत्र हरियाली विकास संरचना निर्माण (पाल्पा)
२. धार्मिक वन कार्यक्रम (काठमाण्डौं)
३. कालिका भगवती वन क्षेत्र संरक्षण, विकास तथा हरियाली प्रवर्धन कार्यक्रम (वाग्लुङ)
४. संस्कृत पाठशाला हरियाली कार्यक्रम (पर्वत)
५. मालिका अर्जुन धार्मिक तथा प्राकृतिक स्थल संरक्षण (दार्चुला)
६. बैतडी देहमाण्डौं लगायतका धार्मिक वनमा हरियाली विकास संरक्षण (बैतडी)
७. कालिका धार्मिक वनक्षेत्र संरक्षण तथा हरियाली विकास कार्यक्रम (चितवन)
८. सुन्दरचौर वनस्पति सूचना केन्द्र विकास (स्याङ्जा),
९. सिद्धबाबा धार्मिक वनमा हरियाली विकास कार्यक्रम Global Peace Park(रुपन्देही)

२.७. वन ईजलास ब्यबस्थापन

प्रचलित नर्मस् तथा सार्वजनिक खरिद नियमावलीको अधिनमा रही जिल्ला वन कार्यालयहरुले वन ईजलास निर्माण तथा ब्यबस्थापन गर्नुपर्ने छ । यसका लागि जिल्लाका न्यायिक निकायहरुसँग पनि समन्वय गरी गनु उपयुक्त हुन्छ ।

२.८. वन अतिक्रमण हटाई व्यवस्थापन

विशेष गरी तराई तथा भित्री मधेशका अतिक्रमित वन क्षेत्रका अतिक्रमण हटाई पुनः वन क्षेत्र कायम गर्न यो कार्यक्रम सहयोगी हुने विश्वास लिइएको छ । विभिन्न जिल्लाबाट वन विभागमा प्राप्त अतिक्रमणको तथ्याङ्कको आधारमा जिल्लाको क्षमता र स्रोत साधनको ब्यवस्थापनलाई सशक्तिकरण गर्न यो कार्यक्रम संचालन गरिनेछ । अतिक्रमण हटाई नियन्त्रणमा लिइएको खाली जग्गामा सहभागितामूलक ढंगले संरक्षण तथा वन विकासका कार्यक्रमहरु संचालन गरिनेछ । आकस्मिक रुपमा अतिक्रमण हटाउन वा अतिक्रमण हटाई सकिएको स्थान त्यसै छाडिदिँदा पुन अतिक्रमण हुनसक्ने अवस्था सृजना हुनसक्ने भएकोले यस शीर्षकमा बजेट विनियोजन गरीएको हो । यस शीर्षकमा विनियोजन भएको बजेट रकमबाट अतिक्रमण हटाउने, तारवार लगाउने, बृक्षारोपण, आवश्यकतानुसार रोपिएका विरुवाहरुको संरक्षणका लागि हेरालुको समेत ब्यवस्था गर्ने काममा खर्च गर्नुपर्नेछ । त्यस्ता क्षेत्रहरुमा आवश्यकतानुसार तारवार, बृक्षारोपण गरी कार्यक्रम संचालन गर्नुपर्नेछ । अतिक्रमण हटाउनको लागि सुरक्षाकर्मी परिचालन गर्नुपर्ने भएमा सो को लागि खाना खाजा, यातायात, ईन्धन खर्च, संचार र उपचार खर्चको लागि समेत खर्च गर्न सकिनेछ । अतिक्रमण हटाई बृक्षारोपण गरीएको ठाउँमा अतिक्रमित क्षेत्र खाली गरिएको मिति, क्षेत्रफल, नक्शा, तुलनात्मक फोटो समेत देखिने होर्डिङ बोर्ड राख्ने र अतिक्रमण खाली गरेको क्षेत्रको प्रतिवेदनमा GPS Location र GISनक्शा समेत वन समावेश गर्नुपर्नेछ । वन अतिक्रमण हटाउंदा विशेष गरी ४ चरणका कार्यक्रममा ध्यान दिनुपर्नेछ :

- (१) पूर्व तयारी कार्यक्रम : लगत अध्यावधिक तथा योजना तयार, कार्यदलको बैठक संचालन, जनचेतनामूलक सन्देश प्रशारण तथा प्रकाशन, फिल्डस्तरीय अन्तरक्रिया आदि ।
- (२) अतिक्रमण नियन्त्रण : समन्वय, सूचना प्रकाशन, लजिस्टिक सहयोग, सवारी भाडा (ट्रयाक्टर, बुल्डोजर समेत) प्राथमिक उपचार, इन्धन आदि ।
- (३) पुनर्स्थापना : योजना तयारी, विरुवाको ब्यवस्था तथा बृक्षारोपण, तारवार, सिमाना, हेरालु ब्यवस्था आदि ।
- (४) अनुगमन तथा मूल्याङ्कन ।

कार्यक्रम सम्पन्नपश्चात प्रगति पेश गर्दा निम्न विषयहरु समावेश गर्नु पर्नेछ :

- कार्यक्रम संचालन भएको स्थान
- कार्यक्रमको भौतिक र भारित प्रगति
- कार्यक्रमको वित्तीय प्रगति
- अतिक्रमित अवस्थाको र अतिक्रमण हटाइ सकेपछिको अवस्थाको फोटो

२.९. आखेटोपहार संरक्षण, भण्डारण तथा व्यवस्थापन

यो कार्यक्रम सशस्त्र वन रक्षक तालिम केन्द्र, टिकौलीमा संचालन हुनेछ। अवैध रूपमा ओसारपसारका क्रममा समाईएका/जफत गरिएका लगायत विभिन्न तवरले प्राप्त अखेटोपहारलाई तालिम केन्द्रमा भण्डारण गर्ने गरिएको छ। ठूलो परिमाणमा विभिन्न जनावरको छाला, बाघको बंगारा, खुर, हात्तीको दाह्रा, आदि अव्यवस्थित एवं असुरक्षित अवस्थामा रहेकोले त्यसको व्यवस्थापन गर्न यो कार्यक्रम संचालन राखिएको हो। यो शीर्षकमा विनियोजित बजेट रकमबाट अखेटोपहार भण्डारणको सरसफाई, अखेटोपहार नसङ्गे र गन्ध आउने नदिने रसायन खरिद, आवश्यकतानुसार अखेटोपहारको प्रशोधन, सुरक्षा व्यवस्था चुस्त र सवल बनाउने सेफ तथा दराज, च्याकको व्यवस्था, कोडिङ आदिमा खर्च गर्नुपर्नेछ। आखेटोपहार भण्डारणको अवस्थाबारे नियमित प्रतिवेदन वन विभाग, राष्ट्रिय वन महाशाखामा पठाउनुपर्नेछ।

२.१०. चक्ला वन व्यवस्थापन कार्ययोजना कार्यान्वयन

सरकारद्वारा व्यवस्थित चक्ला वनहरूमा वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालयबाट स्वीकृत भएको वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन कार्यविधि २०७१, स्वीकृत कार्ययोजना तथा प्रचलित नर्मस् वमोजिम संचालन गर्ने। कार्यक्रम संचालन भएको स्थानहरूमा यी विवरणहरू सहितको एउटा होर्डिङ बोर्ड समेत राख्नुपर्ने। कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात प्रगति पेश गर्दा निम्न विषयहरू समावेश गर्नुपर्ने:

- कार्यक्रम संचालन भएको स्थान,
- कार्यक्रमको भौतिक र भारित प्रगति,
- मुख्य उपलब्धिहरू,
- कार्यक्रम संचालन गर्दा देखापरेका समस्याहरू।

२.११. सल्लेरी वन व्यवस्थापन कार्ययोजना कार्यान्वयन (धनकुटा)

जिल्ला वन कार्यालयबाट तयार भई वन विभागबाट स्वीकृत गरिएको सल्लेरी वनको स्वीकृत व्यवस्थापन कार्ययोजना तथा वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन कार्यविधि २०७१ तथा प्रचलित नर्मस् वमोजिम कार्यान्वयन गर्ने। कार्यक्रम संचालन भएको स्थानमा यी विवरणहरू सहितको एउटा होर्डिङ बोर्ड समेत राख्नुपर्ने। कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात प्रगति पेश गर्दा निम्न विषयहरू समावेश गर्नुपर्नेछ :

- कार्यक्रम संचालन भएको स्थान,
- कार्यक्रमको भौतिक र भारित प्रगति,
- मुख्य उपलब्धिहरू,
- कार्यक्रम संचालन गर्दा देखापरेका समस्याहरू।

२.१२. साभेदारी/चक्ला वन कार्ययोजना तयारी तथा कार्यान्वयन

साभेदारी वा चक्ला वन कार्ययोजना तयारी, सघन वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन, कार्ययोजना कार्यान्वयन कार्यका लागि वन सम्बर्द्धन, संरक्षण, वन विकास कार्य, कार्यालय संचालन, अनुगमन निरीक्षण, क्षमता विकास, बैठक, गोष्ठी, अवलोकन भ्रमण आदि कार्यका लागि वन तथा भू संरक्षण मन्त्रालयबाट स्वीकृत भएको वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन कार्यविधि २०७१ एवंस्वीकृत व्यवस्थापन कार्ययोजना तथा प्रचलित नर्मस् अनुसार गर्ने। कार्यक्रम संचालन भएको स्थानमा यी विवरणहरू सहितको एउटा होर्डिङ बोर्ड समेत राख्ने। कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात प्रगति पेश गर्दा निम्न विषयहरू समावेश गर्नुपर्नेछ।

- कार्यक्रम संचालन भएको स्थान,
- कार्यक्रमको भौतिक र भारित प्रगति,
- मुख्य उपलब्धिहरू,
- कार्यक्रम संचालन गर्दा देखापरेका समस्याहरू।

२.१३. साभेदारी वन व्यवस्थापन (कार्ययोजना तयारी, सघन वैज्ञानिक व्यवस्थापन, कार्ययोजना कार्यान्वयन)

साभेदारी वन कार्ययोजना तयारी, सघन वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन, कार्ययोजना कार्यान्वयन कार्यका लागि वन सम्बर्द्धन, संरक्षण, वन विकास कार्य, कार्यालय संचालन, अनुगमन निरीक्षण, क्षमता विकास, बैठक, गोष्ठी, अवलोकन भ्रमण आदि कार्यका

लागि वन तथा भू संरक्षण मन्त्रालयबाट स्वीकृत भएको वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन कार्यविधि २०७१, स्वीकृत वन व्यवस्थापन योजना तथा प्रचलित नर्मस अनुशार गर्ने । कार्यक्रम संचालन भएको स्थानमा यी विवरणहरु सहितको एउटा होर्डिड बोर्ड समेत राख्ने । कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात प्रगति पेश गर्दा निम्न विषयहरु समावेश गर्नुपर्ने :

- कार्यक्रम संचालन भएको स्थान,
- कार्यक्रमको भौतिक र भारित प्रगति,
- मुख्य उपलब्धिहरु,
- कार्यक्रम संचालन गर्दा देखापरेका समस्याहरु ।

२.१४. सिमसारको अध्ययन प्रतिवेदन छपाई तथा प्रकाशन

राष्ट्रिय ताल विकास समिति र वन विभागबाट संचालन भई अध्ययन भएका सिमसारहरुको प्रतिवेदन छपाई तथा प्रकाशन कार्यमा बजेट खर्च गर्नुपर्ने छ । राष्ट्रिय ताल विकास समितिसंग समन्वय गरी तथ्यांक तथा अध्ययन प्रतिवेदनहरु एकीकृत गरी हालसम्म अध्ययन भएका सिमसारहरुको नतिजा प्रकाशन कार्यका लागि नियमानुसार यस शीर्षकको रकम खर्च गर्नु पर्नेछ ।

२.१५. सिमसार क्षेत्रको संरक्षण तथा व्यवस्थापन

जिल्लाको वनक्षेत्रमा रहेका महत्वपूर्ण सिमसार क्षेत्रको संरक्षण तथा व्यवस्थापनका लागि यो रकम खर्च गरिनेछ । सिमसार क्षेत्र व्यवस्थापनका लागि राष्ट्रिय सिमसार नीति, २०६९ ले अवलम्बन गरेका विषयवस्तु अनुसार हुनुपर्दछ । जिल्लामा पहिले नै सिमसार क्षेत्र व्यवस्थापन योजना भएमा सोही अनुसार तोकिएको योजना बनाई जिल्ला वनक्षेत्र समन्वय समितिबाट पारित गराउनु पर्दछ । यो कार्यमा जिल्लामा भएका सरोकारवाला संघसंस्था, जिल्ला विकास समिति, जिल्ला भू-संरक्षण कार्यालय, स्थानीय उपभोक्ता समूह आदिसंग सहकार्य समेत गरी कार्यक्रम संचालन गरिनु उपयुक्त हुनेछ । यो कार्यक्रम अमानतबाट वा सार्वजनिक खरिद ऐन, २०६३ र नियमावली २०६४ अनुसार सेवा प्रदायकबाट संचालन गर्न समेत सकिनेछ । व्यवस्थापन योजना तयार गरी जिल्ला वन अधिकृतबाट लागत अनुमान स्वीकृत गरी सोही अनुसारका सम्पूर्ण कार्यक्रम संचालन गर्नु पर्नेछ ।

२.१६. सिमसार क्षेत्रको कार्यक्रम कार्यान्वयन सहजीकरण

यस अन्तर्गत विनियोजन भएको बजेटबाट सिमसार क्षेत्र संरक्षण तथा व्यवस्थापनका लागि आवश्यक पर्ने नियमित अनुगमन तथा भ्रमण खर्च, कार्यालय संचालन खर्च र ईन्धन, बैठकभत्ता, खाजा आदि प्रयोजनको लागि खर्च गर्न सकिनेछ ।

२.१७. संरक्षित वन व्यवस्थापन कार्ययोजना तयारी (IEE अध्ययन) र सिगासे क्षेत्र संरक्षित वन समेत

स्वीकृत कार्यक्रम अन्तर्गत कार्ययोजना तयारी (IEE अध्ययन समेत) का लागि विनियोजित बजेटबाट वन विभागले तयार गरेको स्वीकृत ढांचामा कार्यसूची स्वीकृत गराई कार्ययोजना तयारी र सोको IEE अध्ययन तथा प्रतिवेदन तयार पारी स्वीकृत गर्ने कार्यमा यो अन्तर्गतको रकम खर्च गरिने छ । कार्ययोजना तयारीकालागि व्यवस्था भएको बजेटबाट सूचना प्रकाशन, सरोकारवालासंग छलफल, अन्तरकृया, स्रोत सर्वेक्षण, अतिआवश्यक फिल्ड सामाग्री खरिद, स्टेशनरी नक्सा, फोटो खरिद टाइपिङ प्रिन्टिङ, IEE तयारीका कार्य, विभागमा हुने पुनरावलोकन तथा समीक्षालगायतमा खर्च गर्नु पर्नेछ । जिल्लाबाट तयार भएको कार्ययोजना र प्रारम्भिक वातावरणीय परीक्षण प्रतिवेदन (IEE) को प्रारम्भिक मस्यौदा वन विभागमा पेश गर्नु पर्नेछ । मस्यौदा प्रति अध्ययन गरी थप संशोधन गर्नुपर्ने विषय समावेश गर्न विभागबाट जानकारी गराइने छ । दोश्रो मस्यौदाप्रति उपर वन विभागमा वन विज्ञसमक्ष प्रस्तुति हुनेछ । प्रस्तुतिका दौरान वन विज्ञहरुले उठाउनु भएको विषयवस्तुका आधारमा अन्तिम मस्यौदा पेश भएपछि कार्ययोजना स्वीकृत तर्फ कारवाही हुनेछ ।

२.१८. धनुषाधाम संरक्षित वन कार्यक्रम

प्रचलित नियम, कानून, नर्मस तथा आर्थिक कार्यविधिका आधारमा स्वीकृत कार्ययोजनाको अधिनमा रही क्रियाकलाप खाका तयार पारी वन विभागबाट स्वीकृत गराई कार्यसंचालन गर्नुपर्ने छ ।

२.१९. पंचासे क्षेत्रको उपजलाधार व्यवस्थापन कार्ययोजना कार्यान्वयन

यो कार्यक्रम पंचासे उपजलाधार व्यवस्थापन योजना तयारगरी (IEE अध्ययन समेत) उक्त योजना स्वीकृत एवं कार्यान्वयन गर्नका लागि संचालन हुनेछ । दुई वा दुई भन्दा बढी जिल्लामा पर्ने क्षेत्रको हकमा जिल्ला वन अधिकृतबाट पूर्व स्वीकृति प्राप्त गरी वन विभागबाट कार्ययोजनाको कार्यसूची (ToR) स्वीकृत गराउनुपर्ने छ । प्राप्त स्वीकृत कार्यसूचीको आधारमा प्रचलित आर्थिक ऐन नियमले तोकेको प्रकृयाका आधारमा पंचासे क्षेत्रको उपजलाधार व्यवस्थापन कार्ययोजना तयार गर्नुपर्नेछ । कार्ययोजना तयार गर्दा पंचासे संरक्षित वन क्षेत्र वरिपरि बसोबास गर्ने स्थानीय वासिन्दाको सहभागितालाई समेत जोड दिनु पर्नेछ । तयार भएको कार्ययोजनाको मस्यौदा प्रति वन विभागमा पेश गर्नु पर्नेछ । मस्यौदा प्रति अध्ययन गरी थप संशोधन

गर्नुपर्ने विषय समावेश गर्न विभागबाट जानकारी गराइनेछ । दोश्रो मस्यौदाप्रति उपर वन विभागमा वन विज्ञसमक्ष प्रस्तुति हुनेछ । प्रस्तुतीका समय वन विज्ञहरुले उठाउनु भएको विषयवस्तुका आधारमा अन्तिम मस्यौदा पेश भएपछि कार्ययोजना स्वीकृतितर्फ कारवाही हुनेछ ।

विनियोजित बजेट र विभागबाट स्वीकृत भएको कार्यक्रम खाका अनुसार कार्यान्वयन हुनेछ । कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा प्रचलित ऐन नियम, कानूनलाई विशेष आधार मान्नु पर्नेछ । यो व्यवस्थापन योजना जनसहभागितालाई प्राथमिकतामा राखी सरोकारवालासंग समन्वय गरी कार्यान्वयन गर्नु पर्नेछ । समय समयमा फिल्डस्तरमा माथिल्लो निकायबाट अनुगमन हुनेछ । यो महत्वपूर्ण कार्यक्रम भएकोले यसका सम्पूर्ण सिकाइका पक्षहरुलाई जि. व. का. ले प्रगति विवरणमा समावेश गर्नुपर्नेछ । स्वीकृत कार्यक्रमको विस्तृत कार्यान्वयन योजना (Implementation Plan)सम्बन्धित जिल्ला वन कार्यालयहरु (एकभन्दा बढी जिल्ला ओगटेको संरक्षित वनको हकमा) संग समन्वय गरी कार्यक्रम संचालन गर्नुपर्नेछ । कार्यक्रम सम्पन्नपश्चात प्रगति पेश गर्दा निम्न विषयहरु समावेश गर्नुपर्नेछ :

- कार्यक्रम संचालन भएको स्थान,
- कार्यक्रमको भौतिक र भारित प्रगति,
- कार्यक्रमको वित्तीय प्रगति,
- कार्यक्रमको उपलब्धी प्रभाव र असर ।

२.२०. संरक्षित वन व्यवस्थापन कार्ययोजना कार्यान्वयन

वन विभागले तोकेको कार्यसूची (ToR) बमोजिम प्रचलित आर्थिक ऐन नियमका आधारमा संरक्षित वनको व्यवस्थापन कार्ययोजना तयार गर्नु पर्नेछ । संरक्षित वन योजना तयार गर्नु पूर्व संरक्षित वनको परिचय सहित चारकिल्ला निर्धारण गरी सूचना प्रकाशित गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ । संरक्षित वन कार्यक्रम तयार गर्दा संरक्षित वन क्षेत्र वरिपरि बसोबास गर्ने स्थानीय वासिन्दाको सहभागितालाई समेत जोड दिनु पर्नेछ । कार्ययोजना विभागबाट जारी भएको विषयसूचीका आधारमा तयार गर्नुपर्नेछ । तयार भएको कार्ययोजनाको मस्यौदा प्रति वन विभागमा पेश गर्नु पर्नेछ । मस्यौदा प्रति अध्ययन गरी थप संशोधन गर्नुपर्ने विषय समावेश गर्न विभागबाट जानकारी गराइनेछ । दोश्रो मस्यौदाप्रति वन विभागमा वन विज्ञसमक्ष प्रस्तुति हुनेछ । प्रस्तुतीका समय वन विज्ञहरुले उठाउनु भएको विषयवस्तुका आधारमा अन्तिम मस्यौदा पेश भएपछि कार्ययोजना स्वीकृतितर्फ कारवाही हुनेछ ।

संरक्षित वन व्यवस्थापन कार्ययोजनाको कार्यान्वयन स्वीकृत कार्ययोजनाका आधारमा हुनेछ । विनियोजित बजेट र विभागबाट स्वीकृत भएको कार्यक्रम खाका अनुसार कार्यान्वयन हुनेछ । प्रबन्धक नियुक्त भएका संरक्षित वन कार्यक्रमका प्रबन्धकहरुले कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा प्रचलित कानून तथा विभागको निर्देशनलाई विशेष आधार मान्नु पर्नेछ । संरक्षित वनको व्यवस्थापन योजना जनसहभागितालाई प्राथमिकतामा राखी सरोकारवालासंग समन्वय गरी कार्यान्वयन गर्नु पर्नेछ । समय समयमा फिल्डस्तरमा माथिल्लो निकायबाट अनुगमन हुनेछ । यो महत्वपूर्ण कार्यक्रम भएकोले यसका सम्पूर्ण सिकाइका पक्षहरुलाई जि. व. का. ले प्रगति विवरणमा समावेश गर्नुपर्नेछ । स्वीकृत कार्यक्रमको विस्तृत कार्यान्वयन योजनासम्बन्धित जिल्ला वन कार्यालयहरु (एकभन्दा बढी जिल्ला ओगटेको संरक्षित वनको हकमा) संग समन्वय गरी कार्यक्रम संचालन गर्नुपर्नेछ । कार्यक्रम सम्पन्नपश्चात प्रगति पेश गर्दा निम्न विषयहरु समावेश गर्नुपर्नेछ :

- कार्यक्रम संचालन भएको स्थान,
- कार्यक्रमको संख्यात्मक भौतिक प्रगति र भारित प्रगति,
- कार्यक्रमको वित्तीय प्रगति,
- कार्यक्रमको उपलब्धी प्रभाव र असर ।

२.२१. समुदायमा आधारित संरक्षणमुखी वन व्यवस्थापन तथा जैविक विविधता संरक्षण

सा.व.को कार्ययोजना परिमार्जन/नवीकरण, उपभोक्ता समूह गठन, वन कार्ययोजना तयारी, हस्तान्तरण, नर्सरी मर्मत, विरुवा उत्पादन कार्यक्रमको हकमा माथि संबन्धित शीर्षकमा उल्लेख भए अनुसार गरिनेछ । अन्य कार्यक्रमहरुको हकमा निम्नानुसार हुनेछ ।

क) वृक्षारोपण कोचिङ

यस कार्यक्रममा विनियोजित रकम वृक्षारोपण कार्यमा स्थलगत रुपमा प्राविधिक सहयोग पुऱ्याउनको लागि फिल्डमा जाँदा आउँदाको भ्रमण खर्च, दैनिक भत्ता तथा चियाखाजामा खर्च गर्नुपर्नेछ ।

ख) चोरी शिकारी नियन्त्रणका लागि सुराकी परिचालन

कार्यालय प्रमुखले आफूलाई विश्वास लागेका व्यक्तिहरूलाई सुराकीको रूपमा गोप्य रूपमा नियुक्ती गरी परिचालन गर्न सक्ने छन् । यस शीर्षकमा विनियोजित बजेट नियुक्त गरिएका सुराकीहरूलाई आवश्यकता अनुसार पारिश्रमिक दिन खर्च गर्नुपर्ने छ ।

ग) विद्यालय स्तरमा नयाँ इको क्लव गठन, परिचालन र सञ्चालन सहयोग

यस शीर्षकमा विनियोजित बजेट विद्यालयस्तरमा नयाँ इको क्लव गठन गर्न सहजीकरण गर्दा लाग्ने खर्च जस्तै भ्रमण खर्च, दैनिक भत्ता, चियाखाजा, स्टेशनरी, आदिमा खर्च गरिने छ । साथै गठन गरीएका क्लव परिचालन गर्न इको क्लवहरूलाई अनुदान सहयोग गर्न समेत यो बजेट खर्च गर्न सकिनेछ । यसका साथै इको क्लवहरूलाई सञ्चालनमा ल्याउन संस्थागत सहयोग अनुदानमा समेत यो बजेट खर्च गर्नुपर्नेछ ।

घ) सामुदायिक वनमा बिपन्न तथा गरिवमुखी आयआर्जन कार्यक्रम सञ्चालन

सामुदायिक वनका गरिव तथा बिपन्न घरधुरीहरूले आफूले पहिचान गरेका आयआर्जनका कृयाकलापको योजना तयारी तथा सञ्चालनको लागि यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न वा अनुदान दिन सकिने छ ।

ङ) खाली पर्ति, सडक किनारा, सामुदायिक वनमा बृक्षारोपण

स्थानीय समुदायको सहभागितामा समुदायको चाहना अनुरूपका (कार्यक्रममा समावेश भएका) प्रजातिको बृक्षारोपण गर्नको लागि विरुवा खरिद, विरुवा ढुवानी तथा आवश्यकता अनुसार विरुवा रोपण र स्थलगत प्राविधिक सहयोग पुर्याउन गरिने भ्रमण, दैनिक तथा बैठक भत्ता तथा चियापान आदिकार्यमा यस शीर्षकमा विनियोजित बजेट खर्च गर्नुपर्नेछ ।

च) समारोह सञ्चालन

कार्यक्रममा समावेश भएका समारोह (जस्तै वातावरण दिवस) सञ्चालन गर्दा लाग्ने खर्चहरू जस्तै बैठक, ब्यानर तथा प्लेकार्ड तयारी, प्रचार प्रसार/माइकिङ, स्टेशनरी तथा समारोहमा सहभागीहरूलाई चियाखाजामा खर्च गर्न सकिने छ । यसका साथै समारोह मनाउनको लागि आवश्यक पर्ने सामग्रीहरू खरिद गर्न समेत यो कार्यक्रममा रहेको रकम खर्च गर्नुपर्नेछ ।

२.२२. वैकल्पिक उर्जा, पूर्वाधार विकास, संस्कृति संरक्षण, सुशासन एवं क्षमता अभिवृद्धि कार्यक्रम

स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रम अनुसारका कृयाकलापहरू प्रचलित नर्मसु, जिल्ला दररेट आर्थिक ऐन नियम कार्यविधिमा उल्लेखित मिल्दाजुल्दा कार्यक्रममा उल्लेख भएको प्रकृया अनुसार कार्यान्वयन गर्नुपर्ने छ ।

२.२३. संरक्षित वन कार्यक्रम प्रवर्धन

स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रम अनुसारका कृयाकलापहरू प्रचलित नर्मसु, जिल्ला दररेट आर्थिक ऐन नियम कार्यविधिमा उल्लेखित मिल्दाजुल्दा कार्यक्रममा उल्लेख भएको प्रकृया अनुसार कार्यान्वयन गर्नुपर्ने छ ।

२.२४. संरक्षित वन कार्यक्रम संचालन सम्बन्धी खर्च

स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रम अनुसारका कृयाकलापहरू प्रचलित नर्मसु, जिल्ला दररेट आर्थिक ऐन नियम कार्यविधिमा उल्लेखित मिल्दाजुल्दा कार्यक्रममा उल्लेख भएको प्रकृया अनुसार कार्यान्वयन गर्नुपर्ने छ ।

२.२५. साभेदारी, संरक्षित वन, ब्लक फरेष्ट लगायत कार्ययोजना कार्यान्वयन सहजीकरण तथा अनुगमन (केन्द्र)

विविध विशेषताका आधारमा महत्वपूर्ण रहेका संरक्षित वन र वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन (जस्तै साभेदारी वन, ब्लक फरेष्ट व्यवस्थापन) कार्ययोजना को कार्यान्वयनमा सहयोग पुऱ्याउन यो कार्यक्रम संचालन हुनेछ । यस कार्यक्रममा विनियोजन भएको बजेट रकमबाट मुख्यतः जिल्लागत रूपमा अनुगमन, जि. व. अ. तथा प्रबन्धक लगायत सरोकारवालाहरूसंग छलफल अन्तरक्रिया, कार्यक्रम कार्यान्वयन तथा सहजीकरण गर्ने एकाइको भौतिक विकासमा सहयोग, कार्यक्रम सहजीकरणका लागि नियुक्ति पाएका जनशक्तिको पारिश्रमिक, खोजमूलक कार्यक्रम लगायत कार्यक्रमसम्बन्धी अन्य विविध कार्यहरू तथा प्रगति प्रतिवेदन तयारी, कार्यक्रम तयारी गर्दा लाग्ने सामग्रीहरूको खर्चमा समेत उपयोग गरीनेछ ।

२.२६. जिल्ला वनक्षेत्र समन्वय समिति (DFSCC) स्थापना, संचालन तथा सुदृढीकरण

जिल्ला वनक्षेत्र समन्वय समितिको सहयोगमा जिल्लाको वन विकास तथा वनसम्बन्धी समस्याको समाधान हुँदै आएको छ । यसको गठन संचालनसम्बन्धी प्रकृयाकाबारे जिल्ला वनक्षेत्र समन्वय समितिको गठन तथा संचालन निर्देशिका, २०६८ (वन विभागको वेबसाईटमा समेत उपलब्ध) मा उल्लेख गरिएको छ । जिल्ला वनक्षेत्र समन्वय समितिले वन संरक्षण, विकास,

व्यवस्थापन, सदुपयोग लगायत विविध विषयसम्बन्धी कार्यहरू तर्जुमा, समस्याको अध्ययन तथा समाधानका उपायहरूको निराकरण जिल्लास्तरबाटै गर्न सहयोग गर्दछ । यस शीर्षकबाट समन्वय समिति, यस अन्तर्गतका उपसमितिको बैठक तथा कार्यालय संचालन गर्नका लागि आवश्यक सामग्री, आदिका लागि बजेटको व्यवस्था गरीएको छ । जिल्लामा संचालन हुने विकास कार्यक्रमहरूको संयुक्त अनुगमन जिल्ला वनक्षेत्र समन्वय समितिबाट गराउनेतर्फ प्राथमिकता दिनुपर्नेछ । वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन पेश गर्दा समितिको गठन, बैठक संख्या र बैठकको निर्णय र जिल्ला वनक्षेत्र समन्वय समितिबाट सम्पन्न गरिएका कार्यक्रमहरूको विवरण समावेश गर्नुपर्नेछ । यस शीर्षकमा विनियोजन भएको रकम माथि उल्लेख भएका विषयको अतिरिक्त सवारी साधन, ईन्धन तथा घर भाडा, फर्निचर, बैठकभत्ता, जलपान तथा गठन प्रक्रियामा खर्च गर्न सकिनेछ ।

२.२७. ढलापडा काठ दाउरा संकलन तथा व्यवस्थापन

यो कार्यक्रम तराई तथा भित्री मधेशका जिल्ला वन कार्यालयहरूमा संचालन हुनेछ । जंगलमा हावाहुरी वा अन्य जैविक कारणले ढलेका रुखहरूलाई तत्कालै संकलन तथा घाटगद्दी गर्नुपर्नेछ । यसरी काठ दाउरा संकलन गर्दा अन्य रुखहरूलाई असर नपर्ने गरी साथै वन पैदावार (काठ/दाउरा) संकलन तथा बिक्री वितरण निर्देशिका, २०५७ लाई आधार बनाउनुपर्नेछ । यो कार्यक्रम दोश्रो तथा तेश्रो चौमासिक अवधिमा संचालन गर्नुपर्ने र घाटगद्दी जंगल क्षेत्र भन्दा बाहिर गर्नुपर्नेछ । संकलित काठदाउराको घाटगद्दी गर्दा सुरक्षाको यथोचित व्यवस्था मिलाई आगलागी, खोलानालाको बाढीले प्रभाव पार्न नसक्ने स्थान छनौट गर्नुपर्दछ । ढलापडाको अवस्था, छपानदेखि कटान मुछान घाटगद्दीको अवस्थासम्म निरन्तर अनुगमनको प्रबन्ध जिल्ला वन कार्यालयले मिलाउनुपर्नेछ र समय समयमा विभागमा प्रतिवेदन प्रस्तुत गर्नुपर्नेछ । यो शीर्षकमा विनियोजित रकम कटान, मुछान, संकलन, ढुवानी, लोड, अनलोड, पाईलिङ आदि कार्यमा प्रचलित नर्मस एवं जिल्ला दररेट वमोजिम खर्च गर्नुपर्ने छ । काठदाउरा संकलनपश्चात प्रगति पेश गर्दा निम्न विषयहरू समावेश गर्नुपर्नेछ :

- ढलापडा रुखहरूको जि.पि.यस. लोकेशन देखिने गरी वनेको नक्सा,
- कार्यक्रम संचालन भएको स्थान,
- कार्यक्रमको संख्यात्मक भौतिक प्रगति र भारित प्रगति,
- कार्यक्रमको वित्तीय प्रगति ।

२.२८. वन डढेलो व्यवस्थापन तथा नियन्त्रण कार्यक्रम

२.२८.१. वन डढेलो नियन्त्रण तथा व्यवस्थापन योजना कार्यान्वयन

गर्मीको याम अर्थात फाल्गुण चैत्रदेखिनै वनजंगल क्षेत्रमा विभिन्न कारणबाट आगलागी एवं डढेलोको प्रकोप गम्भीर रूपमा देखापर्दै आएको छ । कतिपय अवस्थामा मानिसकोनियन्त्रण भन्दा बाहिर पनि वन डढेलो प्रकोप देखापर्ने गरेको छ । वन डढेलोको नियन्त्रण गर्न जिल्लाको पंचवर्षीय वन व्यवस्थापन कार्ययोजनामा उल्लेखित Action Planका आधारमा कार्यक्रमहरू कार्यान्वयन गर्नु पर्नेछ । आवश्यकतानुसार समूह बनाई अग्नि नियन्त्रण सञ्जालको रूपमा रुपान्तरण गर्नु पर्दछ । यस शीर्षकमा व्यवस्था भएको रकम नियन्त्रित डढेलो लगाउने, वनभूमिमा भएको प्रज्वलनशील सुक्खा पदार्थ व्यवस्थापन गर्ने, अग्निरेखा निर्माण तथा मर्मत सुधार, प्रचारप्रसार, जनचेतना अभिवृद्धि आदि सम्बन्धित कार्यक्रमहरूमा खर्च गर्नु पर्नेछ । उपलब्ध स्रोतले भ्याएमा स्थानीय एफ एम/रेडियो बाट वन डढेलो नियन्त्रणसम्बन्धी सूचना तथा सन्देशहरू प्रसारण गर्न सकिनेछ ।

वन डढेलो नियन्त्रणका लागि अग्निरोधक सामग्री खरिद तथा वितरण कार्यक्रम भएका जिल्लाहरूले सार्वजनिक खरिद ऐन तथा नियमावलीको आधारमा यस्ता सामग्रीहरू खरिद गरी डढेलो नियन्त्रणको कार्यमा प्रयोग गर्नु पर्नेछ । कार्यक्रम सम्पन्नपश्चात प्रगति पेश गर्दा निम्न बुंदाका विषयहरू समावेश गर्नुपर्नेछ :

- कार्यक्रम संचालन भएको स्थान/क्षेत्र अवस्थिति नक्सा,
- कार्यक्रमको भौतिक र भारित प्रगति,
- मुख्य उपलब्धिहरू,
- कार्यक्रमको वित्तीय प्रगति ।

२.२८.२. आगलागी नियन्त्रण सम्बन्धी सचेतना कोचिङ्ग तथा सञ्जाल निर्माण तथा सुरक्षानिकायसंग समन्वय, परिचालन

यो कृत्याकलाप अन्तर्गत वन डढेलो ग्रस्त क्षेत्रको सामुदायिक वन तथा उपसमूहहरू (साभेदारी वन तथा सामुदायिक वन समेतको) भएको वस्ती क्षेत्रका उपभोक्ता वा समुदायका सदस्यहरूसंग वन डढेलोको प्रकोप, जोखिम तथा नियन्त्रणको तरिकाहरू र नियन्त्रण गर्दाका सुरक्षा चुनौतीबारे जनचेतना जगाउने किसिमको अन्तरक्रिया, छलफल, सूचना जानकारी दिने कार्यक्रम संचालन गर्ने । यस्तो कृत्याकलाप संचालन गर्दा संजाल पनि गठन गरी जिल्ला वन कार्यालयमा एक दर्ता रजिष्टर खडा गरी रेकर्ड राख्ने । यो कार्यक्रम एक दिने संचालन गर्नुपर्नेछ । कार्यक्रम सम्पन्न पछि, प्रगतिमा निम्न बुंदाहरू समावेश गर्नु पर्ने छ ।

- निर्माण गरीएको संजाल संख्या, संजालमा आवद्ध समूहको नामावली तथा सम्पर्क व्यक्तीहरू

- अन्तर्क्रयामा सम्लग्न व्यक्तिहरु विषयवस्तु सम्बन्धी प्रतिवेदन

२.२८.३. अग्निनियन्त्रण सम्बन्धी सामग्री, उपकरण तथा सामान खरिद तथा वितरण

वन डढेलो नियन्त्रणको लागि प्रयोग गर्नुपर्ने औजार तथा सामग्रीहरु विशेष किसिमको र अग्नि समन टोली (Fire Fighting Team) सदस्यहरुले लगाउने वा प्रयोग गर्ने सामग्रीहरु आगोले सजिलै नजल्ने किसिमको हुनु आवश्यक छ । वन डढेलो नियन्त्रणको लागि चाहिने अग्निरोधक सामग्रीहरु खरिद गर्नु पर्दछ । तपसिल बमोजिमका औजारहरु मध्ये आवश्यकता अनुसार खरिद गर्न सकिने ।

तालिका नं. १ : डढेलो नियन्त्रणका सामग्रीहरु

| सि.नं. | सामानको नाम |
|--------|------------------------------------|
| १ | Swatter |
| २ | Shovel |
| ३ | Rake |
| ४ | Rake-hoe |
| ५ | Axe-hoe |
| ६ | First-Aid Kit |
| ७ | Jump-suit |
| ८ | Gloves |
| ९ | Helmet |
| १० | Boot |
| ११ | Torch |
| १२ | Socks |
| १३ | Water Bottle |
| १४ | Face Mask |
| १५ | Otherlocally appropriate materials |

पुनश्च: यो बाहेक मोटरजाने स्थानमा मोटरमा पानी, पानी प्रयोग गर्ने पम्प र पाइपहरु पनि उपयोगमा ल्याउन सकिन्छ । तर यसको लागि स्रोतको उपलब्धता अनुसार जिल्ला वन कार्यालयले विशेष व्यवस्था गर्न सक्नेछ । सम्भव भएसम्म नेपाल गुणस्तर वा अन्तर्राष्ट्रिय गुणस्तरका सामग्रीहरु भरपर्दो संस्था वा विक्रेताबाट खरिद गर्नुपर्दछ, र सो सम्भव नभएमा कैफियतमा उल्लेख भए अनुसारको गुणस्तरीय सामानहरु खरिद गर्नुपर्दछ ।

२.२८.४. वन डढेलो नियन्त्रण, सचेतना, तथा अग्नि रोधक सामग्री व्यवस्थापन तालिम (समूहस्तर, कर्मचारीस्तर)

वन डढेलो बाट जोखिम क्षेत्रको समुदायको सदस्यहरुलाई तथा वन कर्मचारीहरुलाई प्रशिक्षक प्रशिक्षणको रुपमा यो तालिम संचालन गर्नु पर्नेछ । यो तालिम संचालनको लागि एक सेट अग्निरोधक सामग्री समेत व्यवस्थापन गरी जिल्ला वन कार्यालय वा इलाका वन कार्यालय वा नजिकको सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहले राख्न सकिनेछ । स्विकृत भएको बजेटको परिधि भित्र रही तालिमको व्यवस्थापन गर्नु पर्नेछ । यस तालिमको उद्देश्य अग्नि रोधक सामग्रीको बारेमा प्रचार प्रसार गरी स्वतस्फूर्त वन डढेलो व्यवस्थापनमा अन्य निकाय तथा समुदायको सहभागिता हुने अपेक्षा हो । कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न बुदाहरु समावेश गर्नुपर्नेछ :

- संचालन गरीएका क्रियाकलापहरु,
- तालिममा सहभागी संख्या र विवरण,
- लागत तथा खर्चको विवरण ।

२.२८.५. Forest Fire Control Room व्यवस्थापन

वन विभागमा भएको Forest Control Room लाई आधुनिक प्रविधियुक्त बनाई Wildfire सम्बन्धी सूचना संकलन गर्ने तथा आवश्यक सूचना प्रवाह गर्ने संयन्त्र बनाउनु पर्नेछ । जसमा High Speed Internet, Computer, printer, LED Display TV, Direct Phoneline/Hotline, Mobile, Fax, जस्ता उपकरणहरु खरिद गरी ब्यबस्थित गर्नुपर्ने छ । Satelliteको Data Acquire गर्नको लागि भिन्दै server संचालनमा ल्याई नेपाल भरी लागेको आगलागीको विवरण प्राप्त गर्ने संयन्त्र तयार गर्नुपर्ने छ । सो कार्यका लागि विज्ञ तथा वन डढेलो नियन्त्रण तथा व्यवस्थापन कार्यमा संलग्न निकायहरूसंग समन्वयमा कार्यगर्नुपर्ने छ ।

२.२८.६. जिल्ला स्तरमा सरोकारवालाहरूसंग अर्न्तक्रिया

जिल्लामा वन डढेलो नियन्त्रण तथा व्यवस्थापन गर्ने सवालहरूमा स्थानीय सुरक्षा निकाय, जिल्ला प्रशासन नागरिक समाज, स्थानीय क्लव, आमा समूह, सामुदायिक वन र अन्य सरकारी तथा गैरसरकारी सरोकारवालासंग अर्न्तक्रिया तथा समन्वय गर्नुपर्ने छ ।

२.२८.७. जिल्ला स्तरमा सेना प्रहरी प्रशासन, नागरिक समाजसंगको समन्वय तथा सहकार्यमा डढेलो नियन्त्रण

जिल्लास्तरका सुरक्षा निकायहरू जस्तै सेना, प्रहरी, नागरिक समाज, स्थानीयवासी, सामुदायिक वन र अन्य सरकारी तथा गैरसरकारी सरोकारवालासंग सहकार्य तथा समन्वयमा डढेलो नियन्त्रण गर्नुपर्ने छ । यस कार्यक्रमबाट जनशक्ति परिचालनको लागि आकस्मिक सवारीभाडा, इन्धन, खाजा, संचा, प्राथमिक उपचार लगायतका क्रियाकलापमा खर्च गर्न सकिने छ ।

२.२८.८. गांउवस्ती नजिक डढेलो जोखिमयुक्त वन क्षेत्रको Burning material व्यवस्थापन

गांउवस्तीको नजिक डढेलो लाग्नसक्ने जोखिमयुक्त वन क्षेत्र वरपरको Burning Material लाई व्यवस्थापन गर्दा इलाका वन कार्यालयका कर्मचारीहरूले नागरिक समाज, स्थानीय निकाय, सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहहरू र अन्य सरकारी तथा गैरसरकारी सरोकारवालासंगको सहकार्य र सहभागितामा Prescribed Burning नियन्त्रित वन डढेलो, अग्नि रेखा निर्माण/सरसफाई लगायतका कार्य गर्नुपर्नेछ । यस शीर्षकबाट सहभागीलाई खाजा, व्यानर, माइक मा खर्च गर्न सकिनेछ । प्रगति प्रतिवेदनमा Burning Material व्यवस्थापन गरिएको वनको अनुमानित क्षेत्रफल, फोटो, नाम, नियन्त्रण कार्यमा संलग्न घरधुरी आदि संलग्न गर्नु पर्नेछ ।

२.२८.९. वन डढेलो नियन्त्रण कार्यमा प्रभावकारी भूमिका निर्वाह गर्ने समूह, संस्था, निकायलाई पुरस्कृत गर्ने

वन डढेलो नियन्त्रणमा प्रभावकारी भूमिका खेल्ने समूह, संस्था, निकायलाई प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार प्रदान गर्न सकिन्छ । पुरस्कार रकममा कम्तिमा ८० प्रतिशत र अन्य व्यवस्थापनमा बढीमा २० प्रतिशत रकम खर्च गर्नु पर्नेछ ।

२.२८.१० वन डढेलो सम्बन्धी प्रचार प्रसार (एफ.एम, स्थानीय पत्रिका)

२.२८.११ वन डढेलो सम्बन्धी प्रचार प्रसार (पम्पलेट, डिस्प्ले)

२.२८.१२ अग्नी रेखा निर्माण/सफाई/मर्मत

समुदायद्वारा व्यवस्थित (सामुदायिक/संरक्षित/साभेदारी/कवुलियती) वनमा समूहमार्फत र सरकारद्वारा व्यवस्थित वनमा जिल्ला वन कार्यालयले जोखिम क्षेत्रलाई प्राथमिकता दिई कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने । प्रगति प्रतिवेदनमा के कति किलोमिटरमा निर्माण/सफाई/मर्मत भएको हो फोटो सहित उल्लेख गर्ने ।

२.२८.१३ डढेलो नियन्त्रणका लागि सुख्खा वन क्षेत्रमा पानी पोखरी निर्माण तथा ताल तलैया संरक्षण

जिल्ला वन कार्यालयले डढेलो जोखिम र आवश्यकताको पहिचान गरी सम्भाव्यता र प्राथमिकताको आधारमा समुदायद्वारा व्यवस्थित (सामुदायिक/संरक्षित/साभेदारी/कवुलियती) वनमा समूहमार्फत पोखरी निर्माण तथा तालतलैया संरक्षण गर्ने । कार्यसञ्चालन गर्ने क्षेत्रको नक्साङ्कन, लगत इस्टिमेट तयार र स्वीकृत गरी उपभोक्ता समूहको योगदानलाई समेत सुनीश्चित गरी गर्नु पर्नेछ । केन्द्रियस्तरबाट हुने यस कार्यक्रमको कार्यविधि सहित कार्यक्रम संचालन गरिने छ ।

२.२८.१४ डढेलो नियन्त्रणका लागि सुराकी/स्वयंसेवक परिचालन

जि.व.का./से.व.का./इ.व.का.हरूले फागुन, चैत र वैशाख महिनामा डढेलो जोखिम क्षेत्रमा स्वयंसेवक परिचालन गरी डढेलो रोकथामका लागि प्रचार प्रसार, जनसहभागिता जुटाउने, Controlled Burning गर्न सहयोग पुऱ्याउने, पोखरी निर्माण गर्न सहयोग पुऱ्याउने, वन डढेलो लागेको सूचना जि.व.का./से.व.का./इ.व.का. लाई उपलब्ध गराउने र बदनियतपूर्ण ढंगले वन डढेलो लगाउने व्यक्तिको नामावली जिल्ला वन कार्यालयलाई उपलब्ध गराउने । यसरी परिचालन हुने स्वयं सेवकहरूलाई संचार खर्च र बढीमा तिन महिनासम्मको पारिश्रमिक प्रतिमहिना ५ हजारका दरले उपलब्ध गराउन सकिनेछ । यसरी खटिएका स्वयं सेवकले १५/१५ दिनमा सम्पादन गरेका कार्यको प्रगति विवरण पेश गर्नु पर्नेछ ।

२.२९.सशस्त्र वन रक्षक प्रशिक्षक तथा चोरी नियन्त्रण तालिम

चितवनको टिकौली स्थित सशस्त्र वनरक्षक तालिम केन्द्रले वन संरक्षणमा उल्लेख्य सहयोग पुऱ्याउँदै आएको छ । सशस्त्र वन रक्षकहरू वन संरक्षणमा अर्ध सैनिक जनशक्तिको रूपमा परिचालन हुँदै आएका छन् । सशस्त्र वनरक्षकको कार्यदक्षता अभिवृद्धि गर्न सेवाकालीन प्रशिक्षक तालिम, क्षमता विकास तालिम, वन पैदावार चोरी निकासी तथा वन्यजन्तुको महत्व, वन अपराध

अनुसन्धान सचेतना सम्बन्धी तालिमका कार्यक्रमहरु सम्पन्न हुनेछन् । यस शीर्षकमा विनियोजित रकमबाट पूर्व तालिमको अवस्थादेखि तालिम समाप्ति पश्चातका गतिविधिहरुमा खर्च गर्नुपर्नेछ । तालिमहरुको फोटोका दृष्यहरु समावेश गरी तालिम प्रतिवेदन अनिवार्य रूपले तयार गर्नुपर्नेछ । तालिम संचालन सम्बन्धी अनुगमन वन विभागबाट पनि हुने भएकोले तालिमको समय तालिका वन विभागमा पठाउनुपर्नेछ ।

२.३०. गोष्ठी तथा कार्यशाला (वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन तालिम समेत)

गोष्ठी, तालिम तथा कार्यशाला संचालन गर्दा प्रचलित नर्मस अनुसार गर्नुपर्ने छ । यस शीर्षकमा विनियोजित रकमबाट पूर्व गोष्ठीको अवस्थादेखि गोष्ठी समाप्ति पश्चातका गतिविधिहरुमा खर्च गर्नुपर्नेछ । गोष्ठी संचालन भए पश्चात गोष्ठीहरुको फोटोका दृष्यहरु समावेश गरी प्रतिवेदन अनिवार्यरूपले तयार गर्नुपर्नेछ ।

२.३१. वन अपराधको सूचना संकलन

वन तथा वन्यजन्तुसँग सम्बन्धित अपराधहरु नियन्त्रण तथा न्यूनीकरण गर्नका लागि सुराकी परिचालन (सुराकी खर्च परिचालन कार्यविधि, २०७२ अनुसार), अनुसन्धान कार्य अघि वढाउने क्रममा आवश्यक सूचना संकलन तथा संचारमा लाग्ने खर्चहरुमा यस शीर्षकमा विनियोजित रकम खर्च गर्न सकिनेछ ।

२.३२. अतिक्रमण नियन्त्रण समन्वय समिति/सुरक्षा निकाय बैठक तथा अन्य संस्थागत समन्वय र सरोकारवालासंग सहजीकरण

वन अतिक्रमण नियन्त्रण रणनीति, २०६६बमोजिम अतिक्रमण नियन्त्रण समन्वय समिति/सुरक्षा निकाय बैठक तथा अन्य संस्थागत समन्वय र सरोकारवालासंग सहजीकरण गर्ने । बैठक भत्ता, खाजा, संचार, स्टेशनरीमा खर्च गर्न सकिनेछ ।

२.३३. मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व व्यवस्थापन सहयोग तथा वन्यजन्तु उद्धार

यस शीर्षकमा विनियोजन भएको रकम स्थानीय स्तरमा सतर्कतासम्बन्धी सूचना प्रसारण, वन्यजन्तुको उद्धार, तथा आतंक नियन्त्रण सामाग्रीको व्यवस्थापन तथा तत्काल आवश्यक प्राथमिक उपचार आदिमा खर्च गर्न सकिने छ ।

२.३४. समुदायमा आधारित सालक/समुदायमा आधारित रेडपाण्डा संरक्षण कार्यक्रम

प्रचलित नर्मस तथा नियम कानूनका आधारमा विनियोजित वजेट सालक/रेडपाण्डा पाईने स्थानहरुमा संरक्षणको लागि जनचेतना अभिवृद्धि कार्यक्रम, वासस्थान संरक्षण, व्यवस्थापनजस्ता कार्यमा खर्च गर्नुपर्नेछ ।

२.३५. रेडपाण्डा संरक्षण कार्यक्रम

रेडपाण्डा संरक्षणका लागि जिल्ला वन कार्यालयले कार्ययोजना तयार गरीक्षेत्रीय वन निर्देशकबाट स्वीकृत गराई कार्ययोजना बमोजिमका कार्यक्रम सञ्चालन गर्नुपर्नेछ । विनियोजित वजेट रेडपाण्डाको गणना, वासस्थान संरक्षण, व्यवस्थापन तथा जनचेतना अभिवृद्धि गर्ने जस्ता कार्यमा प्रचलित ऐन, नियम तथा नर्मस अनुसार खर्च गर्नु पर्ने छ ।

२.३६. संरक्षण, प्रचारप्रसार अभियान (लिमी)

लिमी उपत्यकामा वन, वन्यजन्तु तथा जैविक विविधता संरक्षणको लागि सरोकारवालाहरूसँग अन्तर्क्रिया गरी संरक्षण तथा प्रचार प्रसार कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने ।

२.३७. Data Backup and share system (कम्प्युटरमा Backup system जडान गर्ने)

यस अन्तर्गत आवश्यक उपकरणहरु तथा software हरु खरिद, जडान, प्रशिक्षण कार्य गरिने छ ।

२.३८. अनुगमन तथा मूल्यांकन प्रतिवेदन तयारी

वन विभागका प्राविधिक कर्मचारीहरुबाट जिल्लास्तरमा सञ्चालन भएका साभेदारी र चक्ला वन व्यवस्थापन कार्यक्रमहरुको अनुगमन, मूल्यांकनगरी प्रतिवेदन पेश गर्नुपर्नेछ ।

२.३९. पर्यटकीय क्षेत्र प्रवर्धन कार्यक्रम

जिल्लाको पर्यटन प्रवर्द्धन योजनालाई सहयोग गर्ने गरी वनक्षेत्रसँग सम्बन्धित प्रवर्धनात्मक कार्यक्रमहरु सञ्चालन गर्नु पर्नेछ ।

२.४०. अतिक्रमण तथा चोरीनिकासी नियन्त्रणकालागि गस्ती परिचालन

यस शीर्षक अन्तर्गत विनियोजित बजेट अतिक्रमण, चोरी निकासी नियन्त्रणकालागि गस्ती संचालन गर्दा लाग्ने खाजा, इन्धन, सवारी साधन मर्मत तथा फिल्ड गियर खरीद जस्ता कृयाकलापहरूमा खर्च गर्न सकिनेछ। गस्ती संचालनमा देखिएका महत्वपूर्ण स्थान तथा घटनाहरूको फोटोहरू रिपोर्टमा समावेश गर्नु पर्नेछ।

२.४१. टिमु र संरक्षण तथा व्यवस्थापन

२.४२. वन व्यवस्थापन कार्ययोजना कार्यान्वयन

सकारद्वारा व्यवस्थित वन क्षेत्रहरूमा वन कार्ययोजनामा उल्लेख भएका कृयाकलापहरू साथै वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन कार्यविधि २०७१ बमोजिम संचालन गर्नका लागि यस शीर्षकमा विनियोजित रकम खर्च गर्नु पर्नेछ। कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात प्रगति पेश गर्दा निम्न विषयहरू समावेश गर्नुपर्नेछ।

- कार्यक्रम संचालन भएको स्थान,
- कार्यक्रमको भौतिक र भारित प्रगति,
- मुख्य उपलब्धिहरू,
- कार्यक्रम संचालन गर्दा देखापरेका समस्याहरू।

२.४३. वन वन्यजन्तु सम्बन्धी मुद्दाको अनुसन्धान, तहकिकात तथा मुद्दा दायरी

वन, वन्यजन्तुसँग सम्बन्धित मुद्दा अनुसन्धान, तहकिकात तथा मुद्दा दायरी गर्दा तोकिएको अनुसन्धान अधिकृत तथा सहयोगीका लागि खाजा, इन्धन, सम्पर्क समन्वय सामाग्री, मसलन्द, दैनिक भ्रमण भत्ता तथा अन्य अत्यावश्यक कार्यहरूमा खर्च गर्न सकिनेछ।

२.४४. जिल्लाको अतिक्रमिit क्षेत्रको तथ्यांक अध्यावधिक गर्ने

जिल्लामा रहेको अतिक्रमिit क्षेत्रको तथ्यांक संकलन गरी रेकर्ड अध्यावधिक गर्ने, GIS Mapping, Digital map खरीद जस्ता अन्य सम्बन्धित कार्यहरूमा यस शीर्षकमा विनियोजित रकम खर्च गर्न सकिनेछ। कार्यक्रम संचालन गर्दा जिल्लाका सरोकारवाला निकायहरू जस्तै जिल्ला नापी कार्यालय, जिल्ला मालपोत कार्यालय, गाविस/नगरपालिका सँग समन्वय तथा सहयोग लिई गर्न सकिनेछ। अध्यावधिक विवरण तथा संचालन गरीएका कृयाकलापहरूको फोटो सहितको प्रतिवेदन विभागमा उपलब्ध गराउनु पर्नेछ।

२.४५. सहभागीतामूलक अतिक्रमण, चोरी कटान तथा चोरी शिकार नियन्त्रण

जिल्ला वन कार्यालयमा दर्ता भएका सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह, कबुलियति वन समूह, साभेदारी वन समूह तथा अन्य सरोकारवाला संघसंस्थाहरूको सहभागीतामा अतिक्रमिit क्षेत्रहरू हटाउन, चोरी शिकार तथा कटान नियन्त्रण तथा न्यूनीकरण गर्न संचालन गरीने गस्ती, गोष्ठी, बैठक भत्ता तथा सम्बन्धीत अन्य कृयाकलापहरूमा यस शीर्षकमा विनियोजित रकम खर्च गर्न सकिने छ।

३. वृक्ष सुधार, वृक्षारोपण तथा निजी वन कार्यक्रम

३.१. विरुवा उत्पादन (विभिन्न प्रकारका रुख, काष्ठ तथा बहुउपयोगी प्रजाति)

जिल्लाको विरुवा उत्पादन र वृक्षारोपण योजना तयार गर्नुपर्नेछ। नर्सरीमा उत्पादन गरिने विरुवा अनिवार्यरूपमा किसानले रुचाएका प्रजातिका हुनु पर्दछ। विरुवाको वृद्धिदर प्रजाति अनुसार फरक पर्ने भएकोले विरुवा गुणस्तरीय हुनुपर्नुका साथै केही विरुवा (लगभग १० प्रतिशत) कम्तीमा डेढ वर्ष उमेरको हुनु जरुरी हुन्छ। यस्ता नर्सरीमा नाईके वर्षेभरी राखिने व्यवस्था गरिनु पर्दछ।

३.२. ठूलो विरुवा उत्पादन (५ इन्च र ८ इन्च वा ४ इन्च र ७ इन्चको पोलिब्याग)

ठूलो विरुवा उत्पादन गर्दा प्रजातिको प्रकृति हेरी ४" x ७" अथवा ५" x ८" साईजको पोलिब्याग समेत प्रयोग गर्न सकिनेछ। यो कार्यक्रम गर्दा अनिवार्यरूपले किसानले रुचाएको प्रजातिका साथै आलङ्कारिक प्रजाति हुनुपर्नेछ।

३.३. उच्च प्रविधियुक्त नर्सरी स्थापना तथा स्तरोन्नति

यस्ता नर्सरी प्राविधिकरूपले उत्कृष्ट हुनुको साथै बारबेर, Drainage, Sprinkle सहितको सिँचाई, पानी टंकी, स्थायी छहारी, स्टोर कटेरो, हरेक बेडमा टेगिङ्ग आदिको व्यवस्था हुनु पर्दछ। नर्सरी वरिपरि फूल रोपी रमणीय वातावरण बनाउनुको साथै विश्रामस्थल (गोलघर) बनाउँदा राम्रो हुन्छ। यस्तो नर्सरी अन्य नर्सरी नभएको क्षेत्रका सरकारी जमिनमा बनाउनु पर्दछ।

३.४. नर्सरी मर्मत, सुदृढीकरण र व्यवस्थापन

यो कार्य स्वीकृत नर्मस् अनुसार गरिनेछ।

३.५. एक घर एक रुख कार्यक्रम

यस आ.व.मा यो कार्यक्रम लागू गर्न तोकिएका तराईका १९ जिल्लाहरू (भापा, मोरङ, सुनसरी, सप्तरी, सिरहा, धनुषा, महोत्तरी, सर्लाही, रौतहट, वारा, पर्सा, चितवन, नवलपरासी, रुपन्देही, कपिलवस्तु, दाङ, बाँके, बर्दिया र कन्चनपुर) को प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्रका वनक्षेत्र कम भएका वा वनक्षेत्र भन्दा टाढा भएका बढीमा २ (दुई) वटा गाविसहरू छनौट गरी उक्त गाविसका प्रत्येक वडाहरूमा वृक्षारोपण गर्न चाहना र क्षमता भएका घरधुरीहरू छनौट गरिनेछ। यदि वृक्षारोपण गरिने निजी जग्गा उपलब्ध नभएमा टोलबासीहरूको अनौपचारिक समूह बनाई संरक्षण र सम्बर्धन गर्न सकिने सार्वजनिक पर्ती वा ऐलानी जग्गाहरूमा समेत वृक्षारोपण गर्न सकिनेछ। कार्यक्रम संचालनका लागि गाविस छनौट गर्दा तपसिल अनुसारका आधारहरू लिइनेछ र विरुवा वितरण गर्दा समेत यस अन्तर्गत छनौट भएका गाविसहरूका घरधुरीहरूलाई प्राथमिकता दिइनेछ।

गाविसहरूको छनौटका आधारहरू

- वनक्षेत्रबाट टाढा रहेका,
- रुख विरुवा अत्यन्तै कम भएका,
- वन पैदावारको अभाव भएका,
- विरुवाको अत्यन्तै माग भएका,
- स्थानीय निकाय (गा.वि.स.) सँग सहकार्य हुनसक्ने,
- यथासम्भव पूर्व पश्चिम लोकमार्ग देखि दक्षिण।

जिल्लामा गाविस छनौट, कार्यक्रमको प्रभावकारिता, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन जस्ता कार्यहरूमा माननीय सभासदहरूबाट सहजीकरण तथा आवश्यक सल्लाह सुझाव लिन सकिनेछ। यस कार्यक्रम अन्तर्गत छनौट भएका गा.वि.स.हरूमा निजी तथा सार्वजनिक जग्गामा वृक्षारोपणको लागि पर्याप्त विरुवाको व्यवस्था गरिनेछ। यसको साथै कार्यक्रमलाई प्रभावकारी कार्यान्वयन र सहजीकरण गर्न प्रत्येक गाविसमा एक एक जना वन सामाजिक परिचालक परिचालन गरिनेछ।

यसरी वृक्षारोपण गर्दा प्रति घरधुरीलाई जग्गाधनीको अभिलेख राखी ग्रामीण क्षेत्रमा बढीमा २५० विरुवा र शहरी क्षेत्रमा बढीमा २५ विरुवा निःशुल्क उपलब्ध गराइनेछ। सो भन्दा बढी विरुवा माग गर्ने व्यक्तिले विरुवा लिन आउनु पूर्व अनुसूची-१ अनुसारको फाराम भरी पेश गर्नु पर्नेछ। उक्त प्रस्तावका साथ माग गरेको संख्याका विरुवा रोप्न (जग्गा दर्ता प्रमाणपुर्जाको नक्कल) समेत पेश गर्नुपर्नेछ। यस कार्यमा गाउँमा खटिने सामाजिक परिचालकले सहजीकरण गर्नेछन्। यसरी प्रस्तावहरू प्राप्त भए पछि जिल्ला वन कार्यालयले छानबिन गरी वृक्षारोपण गर्न लागेको क्षेत्रमा कुन प्रजातिको कति विरुवा रोप्न उपयुक्त हुने हो सोही अनुसार विरुवा वितरण गर्नु पर्नेछ। यसरी जिल्ला वन कार्यालयले विरुवा वितरण गरी रोपिएका विरुवाहरूको अभिलेख राख्नु पर्दछ। प्रभावकारी अनुगमन गर्न समेत सहज पुऱ्याउन विरुवा रोपण गर्ने व्यक्तिका फोन नम्बरहरू समेत रजिस्टरमा राख्नु पर्छ। यस कार्यक्रम अन्तर्गत निम्न क्रियाकलाप हुनेछन्।

३.५.१. स्थान र घरधुरी छनौट

सम्भावित क्षेत्र पहिचानको लागि जिल्लास्तरमा अन्तरक्रिया, जिल्ला वनक्षेत्र समन्वय समिति (DFCC) सँग परामर्श, छनौट भएको गाविसको वडाहरूको भ्रमण, छलफल, अन्तरक्रिया र छनौट भएका घरधुरी र प्रस्तावित वृक्षारोपण क्षेत्रको अवस्थिति (GPS location) लिई अनुसूची-१ अनुसारको फाराम भर्नु पर्दछ। यसबाट प्राप्त तथ्याङ्कलाई विश्लेषण गरी प्राथमिकता तथा आवश्यकताका आधारमा कार्यक्रम संचालनको लागि क्षेत्र छनौट गरिनेछ। यसमा छुट्याइएको बजेट आवश्यकता तथा औचित्यको आधारमा भ्रमण तथा बास खर्च, चिया, खाजा र इन्धन आदिमा खर्च गर्न सकिनेछ।

३.५.२. विरुवा उत्पादन, खरिद

विरुवा उत्पादन कार्य जिल्ला वन नर्सरी, समूह, निजी तथा अन्य नर्सरीहरू (स्थायी र अस्थायी) बाट गरिनेछ। जिल्ला वन कार्यालयबाट संचालित नर्सरीबाट उत्पादन हुने विरुवाको जात, संख्या, वृक्षारोपण हुने स्थान खुलाई “विरुवा उत्पादन तथा वृक्षारोपण कार्ययोजना” तयार गरी सोही बमोजिम कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु पर्नेछ। गुणस्तरीय विरुवा उत्पादन गर्न मलिलो वनको माटो लगायत सामग्री तथा उपयुक्त प्रविधि प्रयोग गर्नुपर्दछ।

वृक्षारोपण र निजी किसानहरूलाई विरुवा वितरण गर्न समूह तथा निजी क्षेत्रका नर्सरीहरूबाट समेत विरुवा खरिद गर्न सकिनेछ। निजी नर्सरीबाट विरुवा खरिद गर्दा वृक्षारोपण क्षेत्र तथा विरुवा वितरण गर्न किसानहरूलाई पायक पर्ने स्थानमा नर्सरीहरू निर्माण गरी गुणस्तरीय विरुवा उत्पादन गर्न नर्सरीधनीसँग नियमानुसार सम्झौता गरी विरुवा उत्पादन र खरिद गर्नु पर्नेछ। जिल्लामा उत्पादन र खरिद गरिने विरुवाको गुणस्तर अनुगमन गर्न जिल्लामा जिल्ला वन अधिकृतको संयोजकत्वमा तीन सदस्यीय प्राविधिक समिति गठन गरिनेछ। यस समितिले विरुवा उत्पादनकर्तालाई समय समयमा आवश्यक सुझाव दिनुको साथै उत्पादनको प्रारम्भिक अवस्थादेखि रोपणको लागि विरुवा तयार हुँदासम्मको फोटो सहितको अनुगमन विवरण (कुन मितिमा के काम भएको थियो र उम्मेका विरुवाको उचाईसमेत) तयार गरी प्रमाणित गरी अभिलेख राख्नु पर्नेछ। यसरी विरुवा उत्पादन/खरिद गर्दा विरुवाको गुणस्तर चेकजाँच गरी सम्झौतामा उल्लेखित प्रजातिका विरुवा खरिद गर्नु पर्दछ र उक्त विरुवा कसलाई वितरण गरियो र कहाँ रोपिएका हुन सो को अभिलेख समेत अनुसूची-२ अनुसार राख्नु पर्दछ।

३.५.३. विरुवा ढुवानी

नर्सरीबाट वृक्षारोपण क्षेत्रसम्म विरुवा ढुवानी गर्न यो रकम खर्च गरिनेछ।

३.५.४. वृक्षारोपण क्षेत्रमा होर्डिङ्ग बोर्ड

वृक्षारोपण गरिएका स्थानमा वृक्षारोपण गरिएका आ.व., वृक्षारोपणको नक्सा सहितको अन्य विवरण, लागत खर्च आदिको विवरण उल्लेख गरी होर्डिङ्ग बोर्ड राख्नुपर्नेछ। होर्डिङ्ग बोर्ड ६ फिट × ४ फिट साइजको बाक्लो टिनको पातामा पेन्ट गरी बनाउनु पर्नेछ।

३.५.५. अनुगमन, अभिलेखीकरण तथा प्रतिवेदन तयारी

वृक्षारोपण गर्नुभन्दा अगाडि र पछाडि गरिएका क्रियाकलापहरूको समय-समयमा अनुगमन गर्ने, वृक्षारोपण गरिएको स्थानको अवस्थिति (GPS location) समेत र संलग्न घरधुरीको विवरण, रोपिएका प्रजातिहरूको विस्तृत विवरण र उक्त ठाउँमा कति विरुवा बाँचेको हो (Survival rate) सोको समेत विवरणहरू अनुसूची -३ अनुसार अद्यावधिक गरी प्रतिवेदन तयार गर्नुपर्दछ। सो

प्रतिवेदन तयार गर्दा वृक्षारोपण गरिएको स्थानको GIS नक्साङ्कन र विस्तृत क्रियाकलापहरूको प्रोफाइल समेतको विवरण राख्नुपर्नेछ र सोको एक/एक प्रति क्षेत्रीय वन निर्देशनालय र वन विभागमा विद्युतीय तथ्याङ्क (Digital data) र GIS सँग सम्बन्धित तथ्याङ्कहरू समेत राखी पेश गर्नुपर्नेछ ।

३.६. एक गाउँ एक वन कार्यक्रम

सार्वजनिक जग्गाहरू वन विकासको लागि उपयुक्त भएतापनि यस्ता प्रकारको जग्गाहरू त्यसै खेर गइरहेका पाईन्छन् । त्यसैगरी प्रयोग विहीन अवस्थाका अन्य सरकारी जग्गा वा नाङ्गा वनक्षेत्रलाई पनि उत्पादनशील बनाउन सकिन्छ । यस्ता जग्गामा वृक्षारोपण गरी वन विकास गर्न तथा उक्त जमिनमा भएका वृक्षारोपण तथा प्राकृतिक वनको उचित संरक्षण, सम्बर्धन गर्न सकेमा स्थानीय जनताको काठ, दाउरा, घाँस जस्ता वन पैदावारको आपूर्तिमा टेवा पुऱ्याई वनमा परिरहेको चापलाई कम गर्न सकिन्छ । साथै जैविक विविधता संरक्षणमा समेत योगदान पुऱ्याउन सक्दछ ।

गत आ.व. मा समेत यो कार्यक्रम मध्य र पूर्वी तराईका ११ वटा जिल्लामा लागू भएकोमा यस आ.व. देखि थप ८ जिल्लाहरू चितवन, नवलपरासी, रुपन्देही, कपिलवस्तु, दाङ, बाँके, बर्दिया र कञ्चनपुर समेत समावेश गरी १९ जिल्लाहरूमा कार्यक्रमहरू रहेका छन् र चालु आ.व.का ८० गाविसहरू समेत थप गरी जम्मा २२० वटा गा.वि.स.हरूमा सघनरूपमा गरिनेछ । यस कार्यक्रम समेत उपरोक्त उल्लेखित आधार र प्रक्रियाबाट हरेक निर्वाचन क्षेत्रमा कम्तिमा दुई गाविस र गाविसनभएका निर्वाचन क्षेत्रमा महा/उप/नगरपालिका क्षेत्रका कम्तिमा २ वटा वडा पर्ने गरी छनौट गर्नुपर्नेछ । एक घर एक रुख कार्यक्रम जुन गा.वि.स.मा लागू भएको हो सोही गाविस/वडामा नै यो कार्यक्रम संचालन गरिनेछ ।

एक गाउँ एक वन कार्यक्रम अन्तर्गत छनौट भएका गाविस भित्र रहेका सार्वजनिक, ऐलानी, पर्ती वा खाली जग्गामा वृक्षारोपण गरी कम्तिमा एक गाउँमा एउटा कृत्रिम वन (Artificial forest) बनाउन जोड दिइनेछ । यस कार्यक्रम अन्तर्गत गरिने क्रियाकलापमा शैक्षिक संस्थाहरूको जग्गा एवं अन्य संघसंस्था वा संस्थानका स्वामित्व भएका जग्गालाई समेत समेट्न सकिनेछ । साथै दुई वा सो भन्दा बढी घरधुरी मिलेर ठूलो चकलामा निजी वन लगाउन चाहेमा समेत यस कार्यक्रम अनुसार प्राप्त हुने सहूलियत उपलब्ध गराइनेछ ।

यस कार्यक्रम संचालनमा व्यापकरूपमा जनपरिचालन गरी स्थानीय संघसंस्थाहरूको सहकार्य जुटाउनु पर्नेछ । आवश्यकता अनुसार सेवा प्रदायक संस्थाबाट समेत यो कार्यक्रम संचालन गर्न सकिनेछ । सेवा प्रदायक मार्फत कार्य गर्दा वन सम्बन्धी प्राविधिक ज्ञान वा जनशक्ति भएका सेवा प्रदायकसँग मात्र सम्भौता गरिनेछ । साथै अन्य गैरसरकारी संघसंस्था (NGO) सँग समेत सहकार्य गरी कार्यक्रम संचालन गर्न सकिनेछ ।

एक गाउँ एक वन कार्यक्रम अन्तर्गत निम्न क्रियाकलापहरू गरिने छन् :

३.६.१. विरुवा उत्पादन र खरिद

यसै कार्यविधिको दफा ३.५.२ अनुसार नै गर्नुपर्नेछ ।

३.६.२. विरुवा ढुवानी

यसै कार्यविधिको दफा ३.५.४ अनुसार नै गर्नु पर्नेछ ।

३.६.३. वृक्षारोपण गरिने क्षेत्रको पहिचान, छनौट एवं सिमाना निर्धारण

छनौट गरिएका प्रत्येक गाविसका पदाधिकारीहरूसँग (निर्वाचित प्रतिनिधि नभएसम्म सबै राजनैतिक दलका प्रतिनिधिसमेत संलग्न गराई छलफल गरी उपलब्ध हुन सक्ने सार्वजनिक पर्ती, सरकारी र नाङ्गा वन क्षेत्रको लगत तयार गर्नु पर्दछ । लगत तयार गरिसकेपछि प्रत्येक क्षेत्रको स्थलगत निरीक्षण गर्नु पर्दछ र सबै सार्वजनिक पर्ती, सरकारी र नाङ्गा वन क्षेत्रको नाप जाँच गरी नक्सा तयार गर्नुपर्दछ । यी सबै विवरण उल्लेख गरी प्रतिवेदन तयार गर्नुपर्दछ ।

३.६.४. सरोकारवालाहरूको छलफल र अन्तरक्रिया

वृक्षारोपण अभियानमा सबैखाले सरोकारवालाहरूसँग छलफल र अन्तरक्रिया गरिनेछ । यस अन्तरक्रियाबाट वृक्षारोपणको लागि सरोकारवालाहरूलाई अभिप्रेरित गर्नुको साथै वृक्षारोपण योजना बनाईनेछ । यसका लागि चाहिने मसलन्द, खाजा, भ्रमण/इन्धन आदिमा आवश्यकता अनुसार खर्च गरिनेछ ।

३.६.५. वृक्षारोपण (बारबेर, गोडमेल, पुनरोपण, संरक्षण अनुदानसमेत)

वृक्षारोपण कार्य स्वीकृत नर्मस् अनुसार गरिनेछ । यस कार्यक्रम अन्तर्गत वृक्षारोपणको लागि उपलब्ध जग्गाहरू गाउँमा भएका सार्वजनिक पर्ती जग्गा एवं नदी उकासबाट प्राप्त जग्गाहरू हुन सक्छन् । यस कार्यक्रम अन्तर्गत उपलब्ध हुने जग्गा स-साना टुकामा विभाजित हुनसक्ने भएकोले यहाँ गरिएको वृक्षारोपणको संरक्षण कार्य केही खर्चिलो हुन सक्छ । त्यसैले यस्ता वृक्षारोपणको व्यवस्थापनका लागि स्थानीय संघसंस्था परिचालन, उपभोक्ता समूहको गठन वा विपन्न वर्गको समूह गठन गरी केही समयका लागि अन्तरवाली लगाउन दिई सोही समूह मार्फत् वृक्षारोपण संरक्षण एवं व्यवस्थापन गर्न पनि सकिनेछ । वृक्षारोपण सफल बनाउन सम्भव भएसम्म सबै (बारबेर, गोडमेल, पुनरोपण, सिँचाई, हेरालु आदि) उपाय अवलम्बन गरिनु पर्दछ । वृक्षारोपण गर्नु अघि जग्गाको स्वामित्व भएको निकाय र संघसंस्था वा समूहबीच सम्झौता गर्नु पर्नेछ । बस्तीदेखि टाढा रहेका सरकारी एवं नाङ्गा वन क्षेत्रमा वृक्षारोपण एवं यसको व्यवस्थापन सेवा प्रदायक मार्फत समेत गर्न सकिनेछ ।

३.६.५.१. वृक्षारोपण क्षेत्रको कार्ययोजना

हरेक वृक्षारोपण क्षेत्रको सम्बन्धित सरोकारवालाहरूसँग छलफल गरी कार्ययोजना बनाईनेछ । जसमा वृक्षारोपण क्षेत्रको नक्सासहितको सम्पूर्ण विवरण, वृक्षारोपणको संरक्षण, सम्बर्धन एवं सदुपयोगको लागि गरिने कार्यहरूको विस्तृत विवरण उल्लेख गर्नुपर्दछ । कार्ययोजनामा कुन जातका के कति विरुवा कति दूरीमा लगाउने, वन व्यवस्थापन तथा संरक्षणको व्यवस्था के कसरी गर्ने, वन पैदावारको बिक्री वितरणको व्यवस्था के कसरी हुने, लाभको बाँडफाँड कसरी गर्ने आदि सबै कुरा स्पष्टरूपमा उल्लेख हुनुपर्दछ । यो कार्ययोजना जिल्ला वन अधिकृतले स्वीकृत गर्नेछन् ।

३.६.५.२. वृक्षारोपण क्षेत्रको संरक्षण

वृक्षारोपण संरक्षणको लागि बारबेर गर्दा सकेसम्म स्थानीयरूपमा उपलब्ध जैविक सामाग्रीहरू जस्तै: सजिवन, निलकाँडा, बाँस आदिको प्रयोग गर्नुपर्दछ र आवश्यकता अनुसार वन हेरालुको समेत व्यवस्था मिलाउन सकिनेछ । यसमा वन व्यवस्थापन/संरक्षण गर्न जिम्मा पाएको संघसंस्था, उपभोक्ता समूह, सेवा प्रदायक वा हेरालुलाई वृक्षारोपण क्षेत्रको व्यवस्थापनको अवस्था र बाँचेका विरुवाको संख्याको आधारमा बढीमा तीन वर्षसम्म संरक्षण अनुदान/पारिश्रमिक दिन सकिनेछ ।

३.६.५.३. वृक्षारोपण क्षेत्रमा होर्डिङ बोर्ड

यसै कार्यविधिको दफा ३.५.४ बमोजिम गर्नु पर्नेछ ।

३.६.५.४. वृक्षारोपण क्षेत्रहरूको अनुगमन

सबै वृक्षारोपण क्षेत्रहरूको अभिलेख राखी जिल्ला वन कार्यालय/जिल्ला वनक्षेत्र समन्वय समितिले निरन्तर अनुगमन गरी अनुगमन प्रतिवेदन क्षेत्रीय वन निर्देशनालय र वन विभागमा पठाउनु पर्दछ । यी शीर्षक अन्तर्गत रहेको बजेट उपरोक्त अनुसारका कार्य सम्पादन गर्न लाग्ने सामाग्री, सेवा (ज्याला, पारिश्रमिक), मसलन्द, भ्रमण, खाजा, इन्धन आदिमा औचित्यका आधारमा खर्च गर्न सकिनेछ ।

नोट: वन दशक कार्यक्रम अन्तर्गत कार्यक्रम लागू भएका गाविसहरूमा निजी र सार्वजनिक स्थानमा व्यापक वृक्षारोपण गर्ने उद्देश्य राखिएकाले वार्षिक कार्यक्रममा “एक घर एक रुख” र “एक गाउँ एक वन” कार्यक्रम अन्तर्गत वृक्षारोपणको लागि छुट्याईएका विरुवा अपर्याप्त भएमा यसै कार्यक्रम अन्तर्गतका अन्य शीर्षकबाट वा अन्य कार्यक्रमबाट उत्पादन/खरिद गरिने विरुवाहरू पनि उक्त क्षेत्रमा प्रयोग गर्न सकिनेछ ।

३.६.६. गत आर्थिक वर्षहरूमा भएको वृक्षारोपणको गोडमेल, पुनरोपण, संरक्षण र व्यवस्थापन

सघनरूपमावन दशक लागू भएका ११ जिल्लामा गत आर्थिक वर्षमा संचालन भएको वृक्षारोपण (बारबेर, गोडमेल, पुनरोपण, संरक्षण अनुदान समेत) कार्यक्रम अन्तर्गत वृक्षारोपण गरिएका क्षेत्रहरूमा गोडमेल, पुनरोपण, सिँचाई र संरक्षणका लागि हेरालुको व्यवस्था यस कार्यक्रम अन्तर्गत गर्न सकिनेछ ।

३.७. एक नगर अनेक उद्यान कार्यक्रम तथा वनस्पति उद्यान निर्माण

बढ्दो शहरीकरणसँगै नगर क्षेत्रमा वायु र ध्वनि प्रदूषणको मात्रा बढ्दै गइरहेको छ । नगर क्षेत्रमा बस्ने मानिसलाई सौन्दर्य एवं प्रदूषणमुक्त वातावरणमा केही समय बिताउनसमेत त्यस्ता ठाउँको अभाव खट्केको छ । त्यसैले नगर भित्र रहेका सार्वजनिक जग्गालाई स्थानीय निकायको समन्वयमा उद्यानका रूपमा विकास गरी रमणीयस्थलको रूपमा विकास गर्न एक नगर अनेक उद्यान कार्यक्रम ल्याइएको हो । देशभरका महा/उप/नगरपालिकालाई प्राथमिकीकरण गरी क्रमैसँग सबै महा/उप/नगरपालिकामा यो कार्यक्रम संचालन गरिनेछ ।

नगरपालिकाहरूलाई प्राथमिकीकरण गर्ने आधार निम्नानुसार हुनेछन्:

- सार्वजनिक पर्ती जग्गा प्रशस्त भएका,
- रुख विरुवा अत्यन्तै कम भएका,
- बोट विरुवाको माग उच्च रहेको,
- महा/उप/नगरपालिकासँग सहकार्य हुन सक्ने ।

एक नगर अनेक उद्यान कार्यक्रम अन्तर्गत निम्नानुसारका क्रियाकलापहरू सम्पन्न गर्नु पर्नेछ:

- उद्यान विकास गरिने क्षेत्रको पहिचान, छनौट एवं सर्वेक्षण
- स्थानीय निकाय र सरोकारवालाहरूसँग छलफल र अन्तरक्रिया
- कार्ययोजना तयारी
- वृक्षारोपण
- वृक्षारोपण गोडमेल तथा संरक्षण
- अनुगमन

प्याकेजमा संचालन गरिने यस कार्यक्रम अन्तर्गत निम्न कार्यहरू गरिनेछन् :

३.७.१. कार्यक्रम संचालन गर्न जग्गा पहिचान

प्रत्येक छनौट गरिएका महा/उप/नगरपालिका वा वडाका पदाधिकारीहरूसँग (निर्वाचित प्रतिनिधि नभएसम्म सबै राजनैतिक दलका प्रतिनिधिसमेत संलग्न गराई) छलफल गरी उपलब्ध हुन सक्ने सार्वजनिक पर्ती तथा सरकारी जग्गाको लगत तयार गर्नु पर्दछ । लगत तयार गरिसकेपछि प्रत्येक क्षेत्रको स्थलगत निरीक्षण गर्नु पर्दछ र सबै उपलब्ध सार्वजनिक पर्ती तथा सरकारी जग्गाको नाप जाँच गरी नक्सा तयार गर्नुपर्दछ । यस कार्यक्रम अन्तर्गत गरिने क्रियाकलापमा स्कूल, कलेजको जग्गा, अन्य सरकारी वा संस्थानका स्वामित्व भएका जग्गालाई समेत समेट्न सकिनेछ तर वृक्षारोपण गर्नु अघि जग्गाको स्वामित्व भएको निकायसँग सम्झौता गर्नुपर्नेछ । यसरी एक नगर अनेक उद्यान कार्यक्रम अन्तर्गत गरिएको वृक्षारोपणको व्यवस्थापनका लागि महा/उप/नगरपालिकासँग अनिवार्यरूपमा सहकार्य गर्नु पर्दछ ।

३.७.२. कार्ययोजना तयारी

छनौट गरिएका प्रत्येक क्षेत्रको कार्ययोजना तयार गर्नु पर्दछ । कार्ययोजनामा कुन जातका के कति विरुवा कति दूरीमा लगाउने, वन व्यवस्थापन तथा संरक्षणको व्यवस्था के कसरी गर्ने, कुन कुन संस्था वा व्यक्तिसँग सहकार्य गर्ने महा/उप/नगरपालिकाले कुन कुन विषयमा सहयोग गर्ने र संरक्षण कसरी गर्ने आदि सबै कुरा स्पष्टरूपमा उल्लेख हुनुपर्दछ । छनौट गरिएका सार्वजनिक पर्ती तथा सरकारी जग्गामा यदि रुखविरुवा छन् भने सोको व्यवस्थापनका बारेमा समेत कार्ययोजनामा उल्लेख हुनुपर्दछ । कार्ययोजना तयारीको काम सेवा प्रदायक मार्फत वा जिल्ला वन कार्यालय वा सम्बन्धित महा/उप/नगरपालिका आफैले वा संयुक्तरूपमा गर्न सकिनेछन् । सेवा प्रदायक मार्फत काम गर्दा उक्त सेवा प्रदायकसँग वन सम्बन्धी ज्ञान भएको वा वन प्राविधिक

हुनुपर्नेछ । विस्तृत कार्ययोजना तयार गरी जिल्ला वन कार्यालय र महा/उप/नगरपालिकाका प्रमुखबाट संयुक्त रूपमा वा जिल्ला वनक्षेत्र समन्वय समिति मार्फत स्वीकृत गरी लागू गर्न सकिनेछ ।

३.७.३. विरुवा उत्पादन/खरिद, ढुवानी, वृक्षारोपण र संरक्षण

कार्ययोजना अनुसार उद्यान निर्माण गर्न आवश्यक संख्या र उपयुक्त प्रजातिका विरुवा उत्पादन वा खरिद गर्न सकिनेछ । उद्यानमा रोपिने विरुवा ठूला (कम्तिमा ५ फिट देखि ६ फिट अग्ला) र सौन्दर्य प्रदायक हुनु पर्नेछ । वृक्षारोपण संरक्षणको लागि उपयुक्त किसिमको व्यवस्थापन (बारबेर, हेरालु, सिँचाई आदि) को मिलाउनु पर्दछ ।

३.७.४. अनुगमन, अभिलेखीकरण र प्रतिवेदन

जिल्ला वनक्षेत्र समन्वय समितिले सम्बन्धित उद्यानको नियमित अनुगमन गर्नु पर्नेछ । यसको साथै वन विभाग, क्षेत्रीय वन निर्देशनालय, वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालय वा संघीय मामिला तथा स्थानीय विकास मन्त्रालयले समेत वार्षिकरूपमा अनुगमन गरी पृष्ठपोषण दिन सक्नेछन् । जिल्ला वन कार्यालयले चौमासिकरूपमा र वार्षिकरूपमा सम्पूर्ण कामको विवरण सहितको प्रगति प्रतिवेदन क्षेत्रीय वन निर्देशनालय र वन विभागमा पेश गर्नुपर्नेछ ।

३.७.५. होर्डिङ्ग बोर्ड

यसै कार्य विधिको दफा३.५.४ बमोजिम गर्नुपर्नेछ ।

३.८. नदी तथा सडक किनारा वृक्षारोपण

नगरपालिका/उप/महानगरपालिका क्षेत्र भित्र रहेका सडक क्षेत्रका किनाराहरू तथा नदी किनाराका कोरिडोर वरिपरिका खाली क्षेत्रहरूमा हरियाली प्रवर्धन एवं शहरी वातावरण सुधार गरी स्वच्छता कायम गर्ने अभिप्रायले बहुवर्षीय विभिन्न प्रजातिका वृक्षारोपण कार्यका लागि स्थानीय निकायका साथै सरोकारवाला सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाहरूको समन्वयमा स्वीकृत नर्मस बमोजिम कार्यक्रम संचालन गर्न सकिने छ ।

३.९. सात (७) प्रदेशमा फलफूल जंगल स्थापना

विभागिय स्तरमा समन्वय गरी उपयुक्त स्थान छनौट पश्चात कृषिवन प्रणाली अन्तर्गत वनजन्य फलफूल जस्तै; अमला, लप्सी, ओखर लगाएतका विरुवा रोपण गर्नका लागि सम्बन्धित जिल्ला वन कार्यालयमा कार्यान्वयनको लागि पठाउनु पर्नेछ ।

३.१०. सामाजिक परिचालक तयारी कोचिड तथा परिचालन

वन दशक कार्यक्रम संचालन गर्न सहयोग पुऱ्याउन कार्यक्रम संचालन भएका प्रत्येक गाविस र नगरपालिकामा एक एक जना स्थानीय सामाजिक परिचालक राख्न सकिनेछ । छनौट गरिने सामाजिक परिचालक कम्तिमा दश कक्षा पास गरेको हुनुका साथै विपन्न, दलित, महिला तथा यस अधि वनक्षेत्रसँग सम्बन्धित कार्य गरेका अनुभवी व्यक्तिहरू (जस्तै नर्सरी नाइके, वन हेरालु, अग्नि संरक्षण हेरालु, स्थानीय स्रोत व्यक्ति आदि) लाई प्राथमिकता दिइनेछ । यस कार्यक्रममा प्रति सामाजिक परिचालकको लागि पारिश्रमिक स्वरूप प्रति महिना रु. ५,००० (पाँच हजार) र फिल्ड गियर जस्तै साईकल, लोगो सहितको हाफ ज्याकेट, जुता, टोपी, छाता वा वर्षादी, पोशाक आदिको व्यवस्था गर्न सकिनेछ । सामाजिक परिचालकले निम्नानुसारको काम गर्नेछन्:

- वन तथा वातावरण सम्बन्धी जनचेतना गराउने,
- प्रजाति र संख्या अनुरूप विरुवाको माग संकलन गर्ने,
- निजी नर्सरीमा विरुवा उत्पादनको नियमित निरीक्षण गर्ने,
- निजी वन सञ्जाल गठन र परिचालनमा सहजीकरण गर्ने,
- वन कार्यालय र स्थानीय जनता विचको पुलको रूपमा कार्य गर्ने,
- गाविस/नगरपालिका स्तरमा हुने विभिन्न कार्यक्रमहरूमा उपस्थित भई वन दशक, वृक्षारोपण आदिका बारेमा जानकारी गराउने, केहि गुनासो आएमा जिल्ला वन कार्यालयमा जानकारी दिने ।

३.११. तालिम तथा गोष्ठी

३.११.१. वन सामाजिक परिचालकलाई अभिमुखीकरण तालिम

वन सामाजिक परिचालकलाई निम्नानुसारको विषयहरू समेटि ७ दिने तालिम दिने :

- सामाजिक परिचालन,
- वन तथा वातावरणको महत्व एवं अन्तरसम्बन्ध,
- नर्सरी स्थापना तथा विरुवा उत्पादन सम्बन्धी सामान्य ज्ञान,
- वृक्षारोपण गर्ने तरिका,
- नर्सरी रजिष्टर राख्ने तरिका,
- जग्गा विकास सम्बन्धी ज्ञान,
- बाँचेका विरुवाको गणना गर्ने तरिका,
- प्रतिवेदन लेखन आदि ।

३.११.२. नर्सरी नाईके तालिम

निजी र जिल्ला वन कार्यालयले संचालन गर्ने नर्सरी नाईकेहरूलाई स्वीकृत बजेट हेरी कम्तीमा ७ देखि १० दिने स्थलगत तालिम दिनु पर्ने हुन्छ । यो तालिम स्थलगतरूपमा जिल्लामै दिनुपर्ने हुन्छ । यस तालिममा नर्सरी निर्माण प्रविधि, बीउ संकलन, प्रशोधन, उपचार, गुणस्तरीय विरुवा उत्पादन र नर्सरी व्यवस्थापन सम्बन्धी ज्ञान सीप दिनु पर्दछ ।

३.११.३. निजी वन प्रवर्द्धनको लागि सञ्जाल निर्माण तथा क्षमता अभिवृद्धि तालिम

निजी वन धनीहरूको संजाल गठन नभइ सकेका जिल्लाहरूमा संजाल निर्माण गर्ने र यसरी गठन भएका संजाल तथा विगत आ. व मा गठन गरिएका निजी वन सञ्जाल तथा आवद्ध निजी वन धनीहरूको समूह सदस्यहरूलाई जिल्ला वन कार्यालयको संयोजकत्वमा उक्त निजी वन व्यवस्थापन तथा अन्य क्षमता अभिवृद्धि तालिम संचालन गर्नु पर्नेछ ।

३.१२. स्कूल वन हरियाली कार्यक्रम

यस कार्यक्रम अन्तर्गत विद्यालयमा इको-क्लब (Eco-club) गठन तथा व्यवस्थापन गरिनेछ । जिल्ला शिक्षा कार्यालयसँग समन्वय गरी सम्भाव्य विद्यालयको पहिचान गरी देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप सञ्चालन गर्न विद्यालयसँग सम्झौता गरी कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ । यस्ता कार्यक्रम इको-क्लब मार्फत विद्यालय र आसपासका क्षेत्रमा निम्नानुसारका क्रियाकलापहरू संचालन गर्न सकिनेछ :

- विद्यालयहाता भित्र वृक्षारोपण,
- विद्यालयमा वन तथा वातावरण संरक्षण सम्बन्धी कक्षा संचालन, श्रव्यदृश्य, पोष्टर प्रदर्शनी, सेमिनार,
- विद्यालय नजिक रहेको वनमा भ्रमण, चरा अवलोकन (Jungle walk, Bird watching),
- विद्यालय अतिरिक्त क्रियाकलाप जस्तै निबन्ध, कविता, पोष्टर प्रतियोगिता, भित्ते पत्रिका प्रकाशन,

यस कार्यक्रम अन्तर्गत रहेको बजेट उपरोक्त अनुसारका कार्य गर्न आवश्यक पर्ने विरुवा खरिद तथा ढुवानी, मसलन्द, खाजा खर्च गर्न सकिनेछ ।

३.१३. निजी वन विकास तथा दर्ता प्रोत्साहन र प्रचार प्रसार

३.१३.१. निजी वन सञ्जाल गठन तथा संस्थागत सहयोग

यस कार्यक्रम अन्तर्गत जिल्लामा भएका निजी वनधनीहरूको विवरण (Profile) तयार गरी एक सञ्जाल गठन तथा सञ्चालन गर्ने । यसरी गठन भएको सञ्जाललाई संस्थागत गर्न विधान दर्ता लगायत आवश्यक पर्ने मसलन्दको लागि अनुदान सहयोगको व्यवस्था गरिनेछ । यस सञ्जालबाट जिल्लामा वन ऐन, २०४९, वन नियमावली, २०५१ र निजी वन विकास निर्देशिका, २०६८ मा भएको निजी वन दर्ता प्रक्रिया र वन पैदावार सदुपयोग सम्बन्धी व्यवस्थाको प्रचार प्रसार गर्ने । यस शीर्षक अन्तर्गतको बजेट आवश्यकता अनुसार सञ्जाल निर्माण गर्ने कार्यमा आवश्यक पर्ने मसलन्द, अन्तरक्रिया, भ्रमण, इन्धन आदिमा खर्च गर्न सकिनेछ ।

३.१३.२. निजी वन दर्ता प्रोत्साहनका लागि प्राविधिक सहयोग

यस कार्यक्रम अन्तर्गत जिल्लामा रहेका निजी वनहरूलाई जिल्ला वन कार्यालयमा दर्ता गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ। निजी वन दर्ता गर्न आवश्यक पर्ने प्राविधिक सहयोग जस्तै निजी वनको नाप नक्सा, रुख विरुवाको नाप जाँच गरी लगत, सर्जमिन मुचुल्का तथा अन्य कागजात (जग्गा धनीपुर्जाको नक्कल, नागरिकता, नापी नक्सा आदि) तयार गरी निजी वन दर्ता गर्नु पर्नेछ। यस क्रियाकलापमा छुट्याइएको बजेट उपरोक्त कार्य सम्पादन गर्न आवश्यक पर्ने भ्रमण, इन्धन, खाजा, मसलन्द आदिमा खर्च गर्न सकिनेछ। यो कार्य गर्न जिल्लामा गठित निजी वन सञ्जाल वा अन्य सेवा प्रदायकको सेवा समेत लिन सकिनेछ।

३.१३.३. निजी वन दर्ता गर्न लाग्ने राजस्व खर्च अनुदान

निजी वन दर्ता गर्न जाँदा साँध सिमाना नापजाँच गर्न सरकारी अमिनको आवश्यक पर्ने हुँदा सोका लागि जिल्लास्थित नापी कार्यालयलाई नियमानुसार बुझाउनु पर्ने राजस्व स्वरूप यस शीर्षक अन्तर्गत राखिएको बजेटबाट खर्च गरिनेछ।

३.१३.४. निजी वन प्रोत्साहन पुरस्कार

जिल्लामा दर्ता भएका निजी वनहरूमध्ये व्यवस्थापन, व्यावसायिकता र प्राविधिक उपयुक्तताको आधारमा उत्कृष्ट तीन देखि पाँच जना निजी वनधनीलाई पुरस्कार र प्रमाणपत्र दिने। यस शीर्षकमा विनियोजन रकमबाट समारोह, प्रमाणपत्र छपाई तथा नगद पुरस्कारमा खर्च गर्न सकिनेछ।

३.१४. नदी उकास जग्गामा बाँस, निगालो, अम्रिसो, नेपियर, डालेघाँस तथा अन्य आयआर्जनका विरुवा रोपण तथा संरक्षण

नदी उकास जग्गामा स्थानीय चाहना अनुसारका आयआर्जनका विरुवाहरू रोपण गर्ने। उक्त जग्गामा चरिचरण र अतिक्रमण रोक्नको लागि तारवारका साथै रेखदेखको लागि हेरालु राखी संरक्षण गर्ने। यस्तो जग्गामा Deep rooted र भाँगिने भाडी प्रजाति जस्तै बाँस, निगालो, अम्रिसो, नेपियर जस्ता नदी तटीय प्रजातिहरू (Riparian species) विरुवाहरूलाई प्राथमिकता दिइनेछ। यसरी यस्ता नदी उकासका खाली जग्गाहरूमा वृक्षारोपण, संरक्षण, विकास एवं व्यवस्थापनको लागि स्थानीय संघसंस्था साथै नजिक रहेका ग्रामीण समुदायबाट समूहहरू गठन गरी सोको परिचालन गरिनेछ।

३.१५. नदी उकास व्यवस्थापन तथा वृक्षारोपण (सम्बन्धित खोला कमला, रतुवा र बक्राहा)

यो कार्यक्रम आर्थिक वर्ष २०७१/७२ मा तयार भएको तराईमा नदी उकास क्षेत्रको पहिचान र कार्ययोजना (रतुवा, बक्राहा र कमला नदी) अनुसार गरिनेछ।

३.१६. भूकम्प प्रभावित क्षेत्रहरूमा जमिनको स्थायित्वको लागि बाँस रोपण

यस्ता क्षेत्रहरूमा विशेष गरी बाँस, निगालो रोपणको लागि प्राथमिकता दिइनेछ। यस कार्यक्रममा बाँसको Culm खरिद वा विरुवा उत्पादन दुवै गर्न सकिनेछ।

३.१७. उच्चम विकास अनुदान सहयोग

वन विभागबाट स्वीकृत विस्तृत कार्यविधि बमोजिम गर्ने।

३.१८. उन्नत वन बीउ आयात/आपूर्ति

नेपालका विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रमा स्थापना भएका वन बीउ उत्पादन क्षेत्र एवं वन बीउ बगैँचाहरूबाट सरोकारवालाहरूको माग बमोजिमका विभिन्न प्रजातिका बीउहरू संकलन वा कृषि वन बीउ सहकारी एवम आधिकारिक बीउ विक्रेताहरूबाट बीउको आपूर्ति गरिने छ। यस अलावा अन्य उपयोगी उत्तम गुणस्तरका बीउहरू विदेशस्थित बीउ आपूर्ति गर्ने आधिकारिक संस्थाहरूबाट आयात गरिने छ।

३.१९. निजी नर्सरी स्थापनाका लागि अनुदान

जिल्लामा नर्सरी नभएका क्षेत्रमा कम्तीमा एक लाखभन्दा बढी विरुवा उत्पादन हुनेगरी नयाँ नर्सरी स्थापना गर्न चाहने नर्सरीधनीलाई आवश्यक प्रजातिका गुणस्तरीय विरुवा तोकिएको मूल्यमा बिक्री वितरण गर्ने गरी सम्झौता गरी सिँचाई तथा बोरिङ्ग अनुदान स्वरूप प्रति नर्सरी नगद रु. एक लाखसम्म अनुदान दिन सकिनेछ ।

३.२०. निजी नर्सरीबाट विरुवा खरिद

जिल्ला वन कार्यालयले वृक्षारोपण योजना अनुरूपवृक्षारोपण गर्न स्थानीयहावापानी सुहाउँदो प्रजातिका विरुवा निजी नर्सरीधनीसँग सम्झौता गरी खरिद गर्न सकिनेछ । सम्झौता बमोजिमका खरिद गर्दा विरुवाको गुणस्तर चेकजाँच गरी विरुवा कसलाई वितरण गरियो र कहाँ रोपिएका हुन् सो को अभिलेखसमेत राख्नु पर्दछ ।

३.२१. निजी वन प्रवर्द्धनका लागि प्रचारप्रसार सामाग्री

यस कार्यक्रमको सफलतापूर्वक कार्यान्वयन एवं जिल्लाका सबै जनतालाई जानकारी दिन तथा चेतना अभिवृद्धि गर्न जिल्लामा स्थानीय मानिसहरूले बुझ्ने भाषामा पोष्टर, पर्चा, ब्रोसर आदि तयार गरी वितरण/प्रदर्शन गरिनेछ । यसमा उपयुक्त चेतनामूलक र जानकारीमूलक सामाग्री तयार गरी स्थानीय एफ.एम.बाट समेत प्रचारप्रसार गर्न सकिनेछ । आवश्यकता अनुसार स्थानीय हाट बजारमा माइकिङ्ग तथा प्रवचन आदि समेत गर्न सकिनेछ ।

३.२२. निजी वनको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन पुस्तिका तयारी तथा प्रकाशन

केन्द्रस्तर (विभाग, मन्त्रालय) बाट जिल्लामा कार्यान्वयन भएका निजी वन विकासका क्रियाकलापहरूको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गरिनेछ । यसमा सघनरूपमा वन दशक कार्यक्रम लागू गरिएका सबै जिल्ला र लागू नगरिएका अन्य केही जिल्लाहरूमा स्थलगत भ्रमण गरी तोकिएको फाराम (अनुसूची-३) अनुसार Random Sampling प्रणाली अपनाई अनुगमन गरी प्रतिवेदन तयार गरिनेछ । यस शीर्षक अन्तर्गतको रकम उपरोक्त कार्य गर्न आवश्यक पर्ने भ्रमण, बास खर्च, खाजा, इन्धन, भाडा, मसलन्द सेवा आदिमा खर्च गर्न सकिनेछ । अनुगमन तथ्याङ्क विश्लेषण तथा प्रतिवेदन मस्यौदा गर्ने कार्य सेवा प्रदायकबाट समेत गराउन सकिनेछ ।

३.२३. एन्ड्रोइड डिभाईसमा जि.आइ.यस. अनुप्रयोग सम्बन्धी अभिमुखीकरण तालिम

भौगोलिक सूचना प्रणाली (जि.आइ.यस.) मा आधारित विभिन्न प्रकारका वन व्यवस्थापनसँग सम्बन्धित नक्साहरू प्रयोगमा रहेका छन् । सूचना प्रविधिको विकाससगै यी डिजिटल नक्साहरू एन्ड्रोइड डिभाईस प्रयोग गरी फिल्डस्तरमा उपयोग गर्न सकिन्छ । यस सम्बन्धीको प्राविधिक ज्ञान सीप केन्द्रीयस्तरदेखि जिल्लास्तरसम्म फैलाउन आवश्यक देखिएकोले वन क्षेत्रमा कार्यरत प्राविधिकहरूलाई अनुशिक्षण गर्नको लागि विभिन्न तहमा अभिमुखीकरण तालिम नेपाल सरकारको स्वीकृत नर्मस् अनुसार संचालन गरिनेछ ।

३.२४. राष्ट्रिय वन सम्बर्धन गोष्ठी

वन व्यवस्थापनमा संलग्न देश तथा विदेशमा रहेका विज्ञ सरोकारवाला सरकारी, शैक्षिक संस्थाहरू तथा गैरसरकारी निकायहरूको सहभागितामा वन सम्बर्धन तथा विभिन्न वन व्यवस्थापन प्रणाली सम्बन्धी अनुसन्धान, विश्लेषण प्रतिवेदन तथा सिर्काई/अनुभवलाई एकै स्थलमा रही छलफल अन्तरक्रियाको माध्यमबाट राष्ट्रिय वन सम्बर्धन कार्यशाला गोष्ठी आवासीय रूपमा संचालन गरिनेछ ।

३.२५. प्रचार प्रसार सामाग्री उत्पादन प्रसारण

केन्द्रबाट वन दशक र निजी वन कार्यक्रमको प्रचारप्रसार गर्न विभिन्न सामग्रीहरूको उत्पादन गरी वितरण गर्ने । यस कार्यक्रमबाट विभिन्न श्रव्यदृश्य, पोष्टर तथा अन्य छापा (Print) र विद्युतीय माध्यम (Electronic media) बाट प्रचारप्रसार गर्ने । यो कार्यक्रम सेवा प्रदायकबाट समेत गर्न सकिनेछ ।

३.२६. वेब नक्साँकन निर्देशिका/कार्यविधि तयार गर्ने

विभिन्न वन व्यवस्थापन कार्यको लागि आवश्यक डिजिटल नक्सा, वेब नक्साहरू तयार गर्ने निश्चित मापदण्डका फारमहरू विकास गर्नुपर्ने हुन्छ । यी फारामहरूमा प्रविष्ट हुने तथ्याँकहरू नदोहरिने खालका तथा आधारभूत तथ्याँकहरू नछुट्ने किसिमबाट

विकास गर्नुपर्ने हुन्छ । यस्ता खालका फारमहरूको विकास गर्न तथा यी फारमहरू भर्ने तरिकामा एकरूपता आउनुपर्ने हुन्छ । यस्ता खालका फारमहरूको विकास गर्दा ऐन, नियमावली, कार्यविधि, मार्गदर्शन तथा चलन चल्तीमा आएका फारमहरूको प्रयोग गरिनु पर्ने भएकोले प्रचलित कानून बमोजिम रही आई.टी.विज्ञ समेतको सहयोगमा वेब नक्सांकन निर्देशिका/कार्यविधि तयार गरिनेछ ।

३.२७. सबै किसिमको वनहरूको स्रोत सर्वेक्षण तथ्यांक विश्लेषण गर्ने वेब एप्लीकेसन तयार गर्ने

वेबमा आधारित स्रोत सर्वेक्षण तथ्यांक विश्लेषण गर्ने एप्लीकेसन वन विभागले परामर्श सेवादाता समेतबाट तयार गर्नेछ ।

३.२८. सा.व., क.ब. साभेदारी वन, सरकारी वनको Spatial डाटाबेसलाई वेब प्रकाशन गर्ने

वन विभाग अन्तरगत विभिन्न वन व्यवस्थापन प्रणाली अन्तरगत व्यवस्थापन भएका वनहरूलाई (सा.व., क.ब., धार्मिक वन, साभेदारी वन, सरकारी) भू-सूचनामा आधारित नक्सा तथा सोसंग सम्बन्धित अन्य आधारभूत तथ्यांकहरूलाई वेब आधारित नक्सामा प्रकाशन गर्ने । यी प्रकाशन गरिने वेबमा आधारित नक्साबाट वनहरूको विभिन्न किसिमका Spatial तथा अन्य सूचनाहरू सार्वजनिक रूपमा प्रकाशन गर्ने । यो कार्य सूचना प्रविधि सम्बद्ध परामर्श सेवादाताबाट समेत गर्न सकिनेछ ।

३.२९. नापी भएको नक्साको आधारमा वन सिमानाको अनलाईन डिजिटल नक्शा प्रकाशन गर्ने

यी नक्साहरूको आधारमा डिजिटल प्रविधि अवलम्बन गर्दै वन सिमानालाई क्रमिकरूपमा अद्यावधिक गर्ने । यी अद्यावधिक गरिएका वन सिमाना नक्साहरू वेब अन्तरक्यात्मक डिजिटल नक्साको रूपमा प्रकाशित हुनेछन् । यो कार्यक्रम एक वा केही जिल्लाका ईलाकाहरूमा पाईलटिङ्गको रूपमा संचालन गरिने छ । यो कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्न आवश्यकता अनुसार परामर्श सेवादाताबाट समेत गर्न सकिनेछ ।

३.३०. पारिस्थितिकीय प्रणालीमा आधारित अनुकूलन सम्बन्धी अध्ययन तथा अनुसन्धान

पारिस्थितिकीय प्रणालीमा आधारित अनुकूलन सम्बन्धी अध्ययन तथा अनुसन्धानका कार्यहरू सेवा प्रदायक संघ संस्था एवम विज्ञहरूबाट गरिनेछ ।

३.३१. सामूहिक निजी वन नमुना विकास अनुदान

यो कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा किसानहरूको क्लस्टर तयार गरिनेछ । क्लस्टरमा विभिन्न समूहहरू आवद्ध हुनेछन् । एक समूहमा कम्तीमा ५ जनासम्म कृषकहरू आवद्ध रहनेछन् । कृषकहरूलाई डालेघाँस, काठ, दाउरा, बाँस, निगालो जस्ता विरुवा रोपण, प्रयोग गरिने मल तथा जैविक वार आदिको लागि स्वीकृत लगत इष्टीमेट बमोजिम एकमुष्ट अनुदान उपलब्ध गराइनेछ । कृषक समूहले स्वीकृत लगत इष्टीमेट बमोजिम कम्तीमा २० प्रतिशत व्यहोर्नु पर्नेछ ।

३.३२. निजी वनको डाटाबेस अपडेट

यो कार्यक्रम सेवा प्रदायकबाट समेत गर्न सकिनेछ ।

३.३३. वन दशक प्रसार द्वैमासिक प्रकाशन सहयोग

द्वैमासिक रूपमा प्रकाशन हुने पत्रिकालाई वन दशक सम्बन्धीसामाग्रीहरू प्रकाशन गर्न सहयोग गर्न सकिनेछ ।

३.३४. आई.टी.विज्ञ परामर्श सेवा खरिद

वन विभाग अन्तरगत विभिन्न महाशाखाहरूमा सूचना प्रविधिमा आधारित डाटाबेस लगायतका विशेषज्ञता आवश्यक पर्ने विभिन्न कार्यक्रमहरू संचालन एवं संपादन गर्नको लागि प्रचलित सार्वजनिक खरिद ऐन तथा नियमावली बमोजिम तोकिए अनुसारको सूचना प्रविधिसंग सम्बन्धित विषय विज्ञ (IT Expert) सेवा करार परामर्श सेवा मार्फत लिन सकिने छ ।

४. जडीबुटी विकास कार्यक्रम

४.१. नर्सरी निर्माण

संचालनमा रहेको नर्सरीलाई स्तरोन्नति गर्न वा नयाँ स्थायी प्रकृतिको नर्सरी निर्माण गर्न यो कार्यक्रम केन्द्रित रहेको छ । खर्च अनुमान गर्दा वन तथा भू-संरक्षण मंत्रालयको प्रचलित स्वीकृत नर्सरी तथा प्रचलित जिल्ला दररेट बमोजिम गर्नुपर्नेछ । कार्यतालिका तयार गरी समयमै बजेट तथा अख्तियारी प्राप्त भएको अवस्थामा प्रथम चौमासिक अवधिमा नर्सरी निर्माणको कार्यहरू गर्नुपर्नेछ । नर्सरीमा सिंचाइको स्थायी व्यवस्था, नर्सरी सुरक्षाको लागि स्थायी तारबार वा पर्खाल, ओभरहेड वाटर टैंक, स्टोर हाउस, कम्पोष्ट पिट, सेडहाउस, ग्रिन हाउस, हरेक बेडमा पाईप जडान गरी स्पिडकल सिचाईको व्यवस्था, वत्तीको व्यवस्था भएको हुनुपर्नेछ । काम गर्ने कामदार तथा स्थायी नर्सरी नाईकेका (बाह्रै महिना कार्य गर्ने) खर्चको व्यवस्था यसै शीर्षकबाट गर्नुपर्नेछ । जडीबुटीका बिरुवा उत्पादन गर्दा पकेट क्षेत्रको लागि उत्पादन गर्नुपर्नेछ । नर्सरी निर्माण तथा सुधार गर्दा गरिएका क्रियाकलापहरूको स्पष्ट देखिने गरी रजिष्टरको व्यवस्था गरिनु पर्दछ । नर्सरी राखिएको स्थानमा स्पष्ट देखिनेगरी नामाकरण गरी Layout देखिने गरी होर्डिङ बोर्ड राख्ने । कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि प्रगतिमा निम्न बुँदाहरू समावेश गर्नुपर्नेछ :

- नर्सरी स्थापना तथा मर्मतको औचित्य,
- नर्सरी स्थापना गरिएको स्थान, Layout सहितको होर्डिङ बोर्ड नक्साहरू,
- नर्सरीको बिरुवाउत्पादन क्षमता र स्थानको क्षेत्रफल,
- स्थापना गर्दा लागेको खर्च,
- नर्सरी स्थापना तथा मर्मत गरिएको स्थान, फोटो तथा नक्शाहरू विषयगत समेत,
- नर्सरीको पहिलेको क्षमता र अभिवृद्धि गरिएको भए हालको क्षमता,
- मर्मत गर्दा लागेको खर्च,
- नर्सरी संचालन हुने अनुमानित अवधि,
- नर्सरी स्थापना हुनु अघि तथा पछिको फोटो ।

४.२. लोकता, अल्लो, अग्रेली तथा अन्य लघु वनपैदावर खेती व्यवस्थापनमा सहयोग

स्थानीय सामुदायद्वारा व्यवस्थित वनमा आधारित व्यक्ति तथा घरधुरीको हैसियत सुधार गर्न र आय स्रोत बढाउन तथा समूहमा रहेका सदस्यहरूको गरीबी कम गर्न योगदान पुग्ने अभिप्रायले समूहको निर्णय बमोजिम जिल्ला वन कार्यालयको सिफारिसमा यो क्रियाकलाप संचालन गरिने छ । कार्यक्रम सम्पन्न पछि प्रगतिमा निम्न बुँदाहरू समावेश गर्नु पर्ने छ ।

- क्रियाकलाप संचालन भएको सामुदायिक वनको नाम, ठेगाना, संलग्न घरधुरीको नामावली
- खेती विस्तार गरीएका जडीबुटीको किसिम र आगामि योजना
- लागत तथा खर्चको विवरण, बैक भौचर, भर्पाई आदि
- लाभान्वित घरधुरी तथा समुदायको विवरण ।

४.३. जडीबुटी बिरुवा उत्पादन

वनक्षेत्रलाई जैविक विविधतायुक्त बनाउन, बैकल्पिक आयस्रोतको रूपमा विकास गर्न जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ प्रजातिका बिरुवा उत्पादन गरी वृक्षारोपण गर्न अभिप्रेरित गर्ने र जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ वन पैदावारको आपूर्ति र उत्पादनमा अभिवृद्धि भई आयआर्जन तथा जीविकोपार्जनमा सुधार पुऱ्याउने उद्देश्यबाट यो क्रियाकलाप संचालन गरिनेछ । बिरुवा वितरण गर्दा सबै प्रकारका वनहरू जस्तै: सरकारद्वारा व्यवस्थित वन, सामुदायिक वन, निजी वन, कवुलियती वन, संरक्षित वन, साभेदारी वन आदिमा जनसहभागिता परिचालन गरी वृक्षारोपण गर्न अभिप्रेरित गरिनेछ ।

जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ प्रजाति उत्पादन गर्दा उच्च मूल्य, बजारमा माग भएको र स्थानीय किसानको रुचि अनुसारको प्रजातिहरूको सर्भेक्षण गरी सो को सूची बनाई उत्पादन गर्नुपर्नेछ । नर्सरीमा बिरुवा उत्पादन गर्दा स्थानीय आवश्यकता अनुसार तथा व्यवसायिक महत्वपूर्ण जडीबुटी प्रजाति, सुगन्धित घाँस तथा बाँस कलमी बिरुवा उत्पादन गर्नुपर्छ ।

जडीबुटी विकास कार्यक्रमको हकमा फोकल टिमले छनौट गरेको जडीबुटी प्रजातिको बिरुवा उत्पादन गर्नुपर्नेछ । जडीबुटीको खेतीको लागि विशेष क्षेत्र छनौट गरी उक्त क्षेत्रमा वृक्षारोपणको लागि बहुमूल्य र ठाउँ विशेष जडीबुटी जस्तै टिमुर, जैतुन, तेजपात, अमला, घिऊकुमारी आदि जातका बिरुवा उत्पादनमा जोड दिनुपर्नेछ, साथै यसप्रकारका बिरुवाहरू उत्पादन गर्ने सम्भावना नदेखिएमा रुख प्रजातिका गैरकाष्ठ वन पैदावार जस्तै लप्सी, ओखर, लौठसल्ला आदि जस्ता बिरुवाहरू अन्यत्र

नर्सरीबाट खरिद गर्नुपर्नेछ । जडीबुटी प्रजाति उत्पादन गर्दा विशेष किसिमको तालिमको आवश्यकता पर्ने भएमा सो को समेत व्यवस्था मिलाउनुपर्नेछ ।

नेपाल राजपत्र खण्ड ६४, संख्या ११, भाग ५ मिति २०७१/३/३० मा प्रकाशित सूचनामा उल्लेखित तपसीलका प्रजातिहरू उत्पादन गरी वितरण गर्नुपरेमा तपसील बमोजिमको मूल्य लिई मात्र वितरण गर्नुपर्नेछ ।

तपसील

| क्र. सं. | बिरुवाको नाम | शुल्क रु. | कैफियत |
|----------|---------------|-----------|--------|
| १. | गुर्जो | १०/- | |
| २. | अश्वगन्धा | १०/- | |
| ३. | कालमेघ | १०/- | |
| ४. | चित्तु | १०/- | |
| ५. | अर्जुन | १०/- | |
| ६. | नीम | १०/- | |
| ७. | विजयसाल | २५/- | |
| ८. | सितलचीनी | १०/- | |
| ९. | बेल | १०/- | |
| १०. | राजबृक्ष | १०/- | |
| ११. | विष | १५/- | |
| १२. | लघुपत्र | २५/- | |
| १३. | अमला | १०/- | |
| १४. | ओखर | २५/- | |
| १५. | जंगली सयपत्री | १०/- | |
| १६. | रिठा | १५/- | |

| क्र. सं. | बिरुवाको नाम | शुल्क रु. | कैफियत |
|----------|-----------------|-----------|--------|
| १७. | ध्यूकुमारी | १०/- | |
| १८. | केशर (गाना) | १०/- | |
| १९. | स्टेभिया | ५/- | |
| २०. | जमानेमान्द्रो | २५/- | |
| २१. | लौठसल्ला | १०/- | |
| २२. | बेत | २५/- | |
| २३. | कपुर | ५/- | |
| २४. | सतावरी (कुरिलो) | ५/- | |
| २५. | सर्पगन्धा | १५/- | |
| २६. | सेतोमुश्ली | १५/- | |
| २७. | श्रीखण्ड | २५/- | |
| २८. | लप्सी | ५/- | |
| २९. | रुद्राक्ष | २५/- | |
| ३०. | टिमुर | १०/- | |
| ३१. | तेजपात/दालचिनी | ५/- | |

जडीबुटी विकास कार्यक्रम अन्तरगतका देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू पनि माथि उल्लेख भए अनुसार सम्पन्न गर्नुपर्नेछ ।

१. जडीबुटी विरुवा उत्पादन (फोकल टिमले छानेको प्रजाति),
२. विशेष क्षेत्र प्रजाति विशेष जडीबुटी विरुवा उत्पादन (टिमुर, जैतुन, तेजपात, मेन्था, कुरिलो, अमला, घिउ कुमारी आदि समेत),
३. गैरकाष्ठ विरुवा (लप्सी, ओखर, रुद्राक्ष, रिठ्ठा, लौठ सल्ला, जैतुन आदि समेत) उत्पादन र खरिद,
४. जडीबुटी विरुवा खरिद तथा वितरण (कुरिलो, नेपियर, सर्पगन्धा, लेमन ग्रास आदि) ।

४.४. जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ विरुवा रोपण/पुनःरोपण सहयोग (समुदायलाई जडीबुटी विरुवा रोपणमा सहयोग)

पकेट क्षेत्रमा रहेका सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह, कवुलियती वन समूह, सामुदायिक विकास समूह (जलाधार), कृषि समूह तथा अन्य वन विकासमा प्रत्यक्ष रूपमा संलग्न रहेका समूहहरू मध्ये सामुदायिक तथा सार्वजनिक जग्गामा वृक्षारोपणका लागि न्यूनतम साभेदारी गर्न ईच्छुक समूहबाट निवेदन लिई वृक्षारोपण गर्न प्रस्ताव गरिएको स्थानमा जडीबुटी रोपण कार्य गर्नुपर्नेछ । सम्बन्धित समूहलाई निःशुल्क विरुवा उपलब्ध गराउने र रोपणका लागि स्वीकृत बजेटबाट रोपण कार्य पश्चात उपलब्ध गराउने दायित्व सम्बन्धित कार्यालयको हुनेछ भने विरुवा ढुवानी, वृक्षारोपणमा नपुग हुने रकम र संरक्षणको व्यवस्था सम्बन्धित समूहको हुनेछ । रोपण तथा खेतीको लाभांशका लागि समूहभित्रका बढीमा १० जनाको दलित र महिला मूली भएका परिवार, जनजाति तथा छानिएका गरीब परिवारलाई समेटने गरी सानो समूह बनाउनुपर्नेछ ।

४.५. निजी जग्गामा रोपणका लागि कृषक/उद्यमी/गरिव/विपन्न वर्गलाई जडीबुटी विरुवा रोपणमा सहयोग

पकेट क्षेत्रमा निजी जग्गामा जडीबुटी खेती गर्नका लागि ईच्छुक कृषक, उद्यमी, गरिव तथा विपन्न वर्गको पहिचान गरी हरेकको वेगवेग्लै साना समूह बनाई निवेदन लिई उनीहरूले वृक्षारोपण गर्न प्रस्ताव गरिएको निजी जग्गाको निरीक्षण गरी वृक्षारोपणका

लागि सम्भौता गर्नुपर्नेछ । यिनीहरूलाई स्थान अनुसार चरणबद्ध रूपमा विरुवा ढुवानी गर्न लगाई सम्बन्धित सेक्टर वा इलाका वन कार्यालयको सहयोगमा रोपण कार्य सम्पन्न गर्नुपर्नेछ । जडीबुटी रोपण सम्बन्धी तथ्यांक जग्गाधनी अनुसारको विरुवा संख्या र प्रजाति अनुसार वृक्षारोपण भएको ठाउँको अवस्थिति समेत भल्किने गरी GPSबाट waypoints लिई नक्शा समेत तयार गरी भरपर्दो रूपमा digital databaseसम्बन्धित कार्यालयले अद्यावधिक गरी राख्नुपर्नेछ । रोपण तथा पुनःरोपण भएको स्थानको फोटो (जग्गाधनी समेतको फोटो) सहित रोपणकार्य सफल भईसके पछि त्यसको निरीक्षण गरी प्रतिवेदन पेश भए पश्चात निजी कृषक तथा उद्यमीलाई प्रति विरुवा रु.३१- का दरले एवम् गरिव तथा विपन्न वर्गको किसानलाई प्रति विरुवा रु.५१- का दरले वृक्षारोपणको संरक्षणर व्यवस्थापनका लागि अनुदान सहयोग प्रदान गर्न सकिनेछ । निरीक्षण प्रतिवेदनमा फोकल टिमका कम्तीमा २ जना सदस्यको हस्ताक्षर अनिवार्य रूपमा हुनुपर्नेछ । यसरी वृक्षारोपण गरिएको ठाउँमा यी विवरणहरू सहितको एउटा होर्डिङ्ग बोर्ड समेत राख्नुपर्नेछ ।

४.६. जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ विरुवा रोपणमा गोडमेल तथा हुर्काए बापतको रकम अनुदान

अघिल्लो आर्थिक वर्षमा सामुदायिक तथा सार्वजनिक जग्गामा वृक्षारोपण गरिएका (सम्बन्धित कार्यालयमा राखिएको गतवर्षको अभिलेख अनुसारका) जडीबुटीका विरुवाहरू कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्ने निकायको फिल्डस्तरको कर्मचारीले निरीक्षण गरी वार्षिक कार्यक्रममा स्वीकृत प्रति हेक्टर दररेट अनुसार विरुवा गोडमेल, पुनरोपण, अग्नि रेखा निर्माण तथा स्याहार सम्भार बापतको रकम अनुदान दिनसकिनेछ । उक्त अनुदान दिंदा गतवर्षको विरुवा रोपिएको क्षेत्रको तस्वीरसंग तुलना गरी ताजा तस्वीर समेत लिई अभिलेख अद्यावधिक गर्नुपर्नेछ । नक्शांकन गर्दा कति क्षेत्रमा उक्त कार्य सम्पन्न गरिएको हो सो को क्षेत्रफल समेत खुल्ने गरी पठाउनुपर्नेछ ।

यसै गरी निजी जग्गामा गतवर्ष हुर्काइएको जडीबुटी विरुवाको थप स्याहार सम्भारका लागि निजी कृषक, उद्यमी, गरिव तथा विपन्न वर्गलाई प्रति विरुवा रु.३१- का दरले अवसर मूल्य भुक्तानी बापत रकम उपलब्ध गराइनेछ सो को लागि उक्त जग्गामा गतवर्ष वृक्षारोपण भएको विरुवाको रेकर्ड एवम स्थानको अभिलेखसँग भिडान गरी मात्र उपलब्ध गराउनुपर्नेछ । माथिका अनुच्छेदहरूमा उल्लेख भए अनुसार कै प्रक्रिया अपनाई जडीबुटी विकास कार्यक्रममा राखिएका देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू सम्पन्न गर्नुपर्नेछ :

- सामुदायिक तथा सार्वजनिक जग्गामा संघ संस्था तथा व्यक्ति, समुदायलाई ढुवानी, वृक्षारोपण तथा व्यवस्थापन सहयोग अनुदान,
- निजीकृषक तथा उद्यमीलाई प्रति विरुवा रु.३१- का दरले ढुवानी तथा वृक्षारोपण सहयोग अनुदान,
- गत आ.व.मा सामुदायिक तथा सार्वजनिक जग्गामा रोपण भएकोमा गोडमेल स्याहार संभार सहयोग,
- निजी जग्गामा कृषक, उद्यमी, गरिव तथा विपन्न वर्गलाई वचेको विरुवाको थप स्याहार संभारका लागि प्रति विरुवा रु ३ का दरले अवसर मूल्य भुक्तानी ।

४.७. सकटापूर्ण अवस्थामा पुगेका जडीबुटी प्रजातिको वासस्थान संरक्षण (In-situ conservation)

लोप हुन लागेका/सकटापूर्ण अवस्थामा पुगेका जडीबुटी प्रजातिहरूको दिगो संरक्षण तथा व्यवस्थापन गर्नको लागि प्राकृतिक जडीबुटीहरूको वासस्थान संरक्षण, संकलन तथा नियमनमा उल्लेख भएबमोजिम गर्ने ।

४.८. पकेट क्षेत्र पहिचान/प्राविधिक सहायता प्रदान/Contract Farming/पकेट क्षेत्र सुदृढीकरण

जिल्लामा प्रचुर मात्रामा जडीबुटी पाइने तथा खेती सम्भावित क्षेत्रको पहिचान गरि जडीबुटी खेतीको प्रवर्द्धन गर्न तथा विगतका वर्षमा पहिचान भएका जडीबुटी पकेट क्षेत्रको विकास गर्नका लागि जडीबुटीको पकेट क्षेत्र पहिचान गरि प्राविधिक सहायता प्रदान गरि जडीबुटीको त्यस पकेट क्षेत्रमा प्रवर्द्धन गरिनेछ ।

४.९. जडीबुटी नमुना प्लट मर्मत तथा सञ्चालन

जडीबुटी प्रजातीको संरक्षण तथा व्यवस्थापन गर्न स्वीकृत नर्मस बमोजिम नमूना प्लट तयारी तथा पुराना नमूना प्लटहरूको मर्मत गर्नु पर्नेछ।

४.१०. जडीबुटी खेतीकर्ता समूह गठन र रोपण क्षेत्रको सम्भौता र कार्यान्वयन

सामुदायिक तथा निजी वनमा जडीबुटी खेती गर्ने कृषक तथा उपभोक्ता समूहहरूलाई पहिचान गरी तिनीहरूको एक छुट्टै जडीबुटी खेतीकर्ता समूह गठन गर्नुपर्नेछ र सो क्षेत्रको खालि ठाउँमा जडीबुटी वृक्षारोपणको लागि ती समूहहरूसँग सम्भौता गरी जडीबुटी वृक्षारोपण गरिनेछ । जिल्लाको पकेट क्षेत्रमा जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ वन पैदावारको खेती, जडीबुटी संकलन तथा व्यवस्थापनमा संलग्न व्यक्तिहरूको जिल्लास्तरमा एक संजाल स्थापना गनुपर्नेछ, र सो को सुदृढीकरणको लागि सँस्थागत विकासमा जोड दिनुपर्नेछ ।

४.११. जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ वन पैदावारको खेती, संकलन तथा व्यवसायमा संलग्न व्यक्तिहरुको संजाल निर्माण तथा सुदुढीकरण

जिल्लामा जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ वन पैदावारको खेती, संकलन तथा व्यवसायमा संलग्न व्यक्तिहरुको संजाल निर्माण गर्न खर्च गर्न सकिनेछ ।

४.१२. एक पकेट क्षेत्रमा एक प्रजातिको व्यवसायीकरण

जिल्ला वन कार्यालयले दुइ वटा समूहमा त्यहाँका जनताको प्रत्यक्ष सहभागितामा महत्वपूर्ण प्रजातिको छनौट गरी व्यावसायिक खेती/प्रशोधन लगायतका क्रियाकलाप सञ्चालन गर्न यसमा विनियोजित बजेटबाट खर्च गर्न सकिनेछ ।

४.१३. जडीबुटी सूचना केन्द्र विकास कार्यक्रम

यसमा विनियोजित बजेटबाट जिल्लामा उपलब्ध महत्वपूर्ण एवम बहुमूल्य जडीबुटीहरु सम्बन्धी नमुना संकलन, त्यसको उपयोग र संरक्षण सम्बन्धी सामग्रीहरु जनताले प्रष्ट रुपमा बुझ्ने गरी ब्रोसर, लिफलेट, जडीबुटीहरुको मूल्य सूची तथा जडीबुटी सम्बन्धी पुस्तक र अन्य प्रकाशनहरु संकलन गरी लाइब्रेरीको रुपमा विकास हुने किसिमले कार्यक्रम संचालन गर्नु पर्दछ।

४.१४. गैरकाष्ठ वन पैदावारमा आधारित वन उद्यम विकास सहयोग

(सिसु पाउडर, वेतबाँस, निगालो, अम्रिसो, वायो ब्रिकेट, पंखे चुलो, कार्भिड) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट प्राविधिक सहयोग (विज्ञको रायसुभाव परामर्श लिन), उपकरण खरिदको लागि अनुदान तथा सहजीकरणमा खर्च गर्न सकिने छ । यसको लागि जिल्ला वन कार्यालयले संबन्धित पक्षसँग संभौता गरी सोही बमोजिम सहयोग उपलब्ध गराउनेछ ।

४.१५. सूचना प्रवाह तथा पारदर्शिता सवलीकरण

यस कार्यक्रममा जडीबुटी विकास कार्यक्रमको परिचय, उद्देश्यहरु लगायत कार्यक्रम कार्यान्वयनका विभिन्न सूचना तथा जानकारीहरु जिल्लामा रहेका स्थानीय एफ.एम. तथा रेडियोसँग सम्भौता गरी जडीबुटीको दिगो संकलन, व्यवस्थापन, नर्सरी, खेती विस्तार, बजार मूल्य, विरुवा प्राप्त लगायतका चेतनामूलक सूचना सम्प्रेषण गर्ने व्यवस्था मिलाउनु पर्नेछ । जिल्लामा एफ.एम. संचालन नभएको अवस्थामा जिल्ला र क्षेत्रस्तरमा प्रकाशन (तथा उपलब्ध) हुने र पकेट क्षेत्रमा पुग्ने रेडियोबाट गर्नुपर्नेछ । जिल्ला वन कार्यालयबाट पनि उपयुक्त माध्यमबाट निरन्तर सूचना प्रवाहको व्यवस्था मिलाउनु पर्नेछ । यसका अतिरिक्त जिल्ला स्थित कार्यालयमा तथा सार्वजनिक स्थलहरुमा जडीबुटीको मूल्य, उपयोगिता, महत्व र संरक्षण सम्बन्धी जनचेतनामूलक कुराहरु उल्लेख गरी होर्डिङ बोर्ड वा भित्ते लेखनबाट सूचना प्रवाह गर्नुपर्नेछ । यस अन्तर्गत देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरु मार्फत खर्च गर्न सकिनेछ :

- जडीबुटीको संरक्षण, दिगो संकलन, व्यवस्थापन, खेती विस्तार तथा स्थानीय बजारको मूल्य सम्बन्धी चेतनामूलक कार्यक्रम प्रशारण (स्थानीय रेडियो/एफ एम/ चेतनामूलक पर्चा/पम्पलेटबाट),
- जडीबुटी सम्बन्धी होर्डिङ बोर्ड/भित्ते लेखन व्यवस्थापन ।

४.१६. तालिम/गोष्ठी/कोचिङ्ग/बैठक

तालिम संचालन गर्नका लागि संबन्धित कार्यालयले जडीबुटी सम्बन्धी ज्ञान सीप भएको र उपभोक्ताहरूसँग सहजीकरण गर्न सक्ने स्थानीय स्रोत व्यक्तिको रोष्टर तयार गर्नुपर्नेछ । यस्ता स्रोत व्यक्तिहरुमा जिल्ला वन कार्यालयका कर्मचारीका अतिरिक्त कृषक, व्यापारी र अन्य संघसंस्थामा कार्यरत कर्मचारीहरु पनि हुन सक्नेछन् । यस अन्तर्गत रहेका विभिन्न प्रकारका क्रियाकलापहरुमध्ये खेती स्थलमै कोचिङ गरी-गराई खेतीकर्ता किसानलाई सहयोग गर्नुपर्ने र स्थलगत रुपमा संकलनकर्ताहरूसँग अन्तरक्रिया गोष्ठी गर्नुपर्ने हुँदा बढी भन्दा बढी सहभागीलाई लाभान्वित गर्नका लागि स्थलगत अभ्यासमा भाग लिने सहभागीहरुलाई खाजा मात्र प्रदान गर्ने, तर मध्यस्थकर्ता तथा व्यापारी बिच अन्तरक्रिया गोष्ठी अन्य क्षेत्रमा गर्नुपरेको अवस्थामा र बजेटले भ्याउने भएमा सहभागीहरुलाई तोकिएको नर्मस् अनुसारको भत्ता समेत उपलब्ध गराउन सकिनेछ । यी सबै कार्यक्रममा प्रशिक्षकलाई तालिम नर्मसको आधारमा प्रशिक्षण भत्ता उपलब्ध गराउन सकिनेछ ।

कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि हरेक तालिम/गोष्ठीको विस्तृत विवरणहरु स्थान, तालिमको पाठ्यक्रम, सहभागीको विवरण, सहभागीको औचित्यता र कार्यक्रमको प्रभावकारिता बारे पृष्ठपोषण समेत उल्लेख भएको प्रतिवेदन तयार गरी राख्नुपर्ने र सोको सारांश तालुक विभागमा पेश गरिने प्रगतिमा समेत उल्लेख गर्नुपर्नेछ ।

४.१७. फोकल टिमको बैठक (जिल्ला स्तर)

वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालयबाट २०६९ सालमा तयार भएको कार्यविधि अनुसार जिल्लास्तरमा गठन भएको फोकल टिमको बैठक प्रत्येक महिनाको पहिलो हप्ता गर्ने गरी यो रकम खर्च गर्न सकिनेछ ।

४.१८. पकेट क्षेत्रस्तरीय फोकल टिमको बैठक

वन तथा भू-संरक्षण मन्त्रालयबाट २०६९ सालमा तयार भएको कार्यविधि अनुसार पकेट क्षेत्रस्तरमा गठन भएको फोकल टिमको बैठक प्रत्येक महिनाको अन्तिम हप्ता गर्ने गरी यो रकम खर्च गर्न सकिनेछ । यस टिमको बैठकबाट छलफल भएका विषयवस्तुहरु जिल्लास्तरमा छलफल हुने फोकल टिमको बैठकमा समेत छलफल गर्नुपर्नेछ ।

४.१९. कार्यक्रम कम्पाइल/पुनरावलोकन/ पृष्ठपोषण/कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्यविधि तयारी

यस कार्यक्रम संचालनका लागि विभागीय स्तरमा समन्वय गर्ने, संयुक्त रुपमा अन्तर विभागीय बैठकहरु बस्ने, कार्यक्रमको प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि निर्देशिका तथा कार्यविधिहरु तयारी गर्ने, ती निर्देशिका तथा कार्यविधिहरुको अभिमुखीकरण, फिल्ड परीक्षण तथा आवश्यकता अनुरूप परिमार्जन गर्ने, संयुक्त रुपमा कार्यक्रमको अनुगमन तथा प्रभाव अध्ययन गर्ने र तिनका निष्कर्ष तथा सुझावहरु आगामी वर्षहरुका कार्यक्रम तयारीमा उपयोग गरिनेछ ।

४.२०. प्राकृतिक जडीबुटीहरुको बासस्थान संरक्षण, संकलन तथा नियमन

- विभिन्न किसिमका अध्ययन प्रतिवेदनको आधारमा सकंटापन्न र लोपोन्मुख अवस्थामा पुगेका जडीबुटी प्रजातिको पहिचान गर्ने ।
- त्यस्ता प्रजातिको hotspots पहिचान गरी सोको स्वस्थानमा संरक्षण योजना (In-situ conservation plan) तयार गरी सम्बन्धित जिल्ला वन कार्यालयबाट स्वीकृत गरी कार्यालयबाट आफैँ वा नियमानुसार परामर्शदाता मार्फत कार्यान्वयन गर्ने ।
- योजनामा In-situ conservation गरिने प्रजातिको स्रोत सर्वेक्षण, अवस्थाको मूल्यांकन, पाइने क्षेत्रको नक्शांकन, संरक्षणका चुनौतीहरु, संरक्षण व्यवस्था, बासस्थान सुधार, वन पैदावारहरुको संकलन तथा नियमन कार्यक्रम आदि समावेश हुनु पर्नेछ ।
- सामुदायिक वनक्षेत्र भित्र पर्ने भएमा सम्बन्धित समूहहरूसँग सम्झौता गरी कार्य सञ्चालन गर्न सकिनेछ ।
- कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात कार्यस्थलको अनुगमन गरि अवस्थिति (जि.पि.एस), फोटो, सुचक सहितका अन्य उपलब्धि/प्रभावकारिता सहितको प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत गर्नुपर्नेछ ।

४.२१. पकेट क्षेत्रमा जडीबुटी खेती विस्तार

- फोकल टिमले तोकिएको प्रजातिको पकेट क्षेत्र पहिचान गरीपाँच वर्षको व्यवस्थापन योजना तयार गर्ने ।
- यो कार्यक्रम थप भएका नयाँ जिल्लाहरुमा तोकिएको प्रजातिको सम्भाव्यता पकेट क्षेत्रमा खेती विस्तारका लागि अनुभवजन्य सिकाई प्राप्त गर्न सफल खेती भएका स्थान पहिचान गरी (बाहीरी जिल्ला समेत) कार्यक्रममा छनौट भएका किसानलाई अध्ययन भ्रमण गराई सो को सिकाई र प्रतिवेदनका आधारमा पकेट क्षेत्रमा खेती विस्तारका कार्य सञ्चालन गर्ने । अध्ययन भ्रमणमा वढीमा रु.दुई लाख सम्म खर्च गर्न सकिने छ ।
- छानिएका पकेटक्षेत्रमा खेती विस्तार गर्नका लागि पत्रिका, सार्वजनिक जनसम्पर्कका कार्यालय र पकेट क्षेत्रका स्थानीय स्तरका कार्यालयमा १५ देखि ३० दिने सूचना प्रकाशन गरी प्रस्ताव आह्वान गर्ने ।
- इच्छुक उद्यमी, सामुदायिक तथा कवुलियती वन समूह, वा किसानले प्रकाशित सूचना बमोजिम जिल्ला वन कार्यालयमा प्रस्ताव पेश गर्ने ।
- प्रस्ताव छनौटको मापदण्ड तयार गरी फोकल टिमले बढीमा १० वटा सम्म उत्कृष्ट प्रस्ताव छनौट गरी जिल्ला वन कार्यालयलाई सिफारिस गर्ने । मापदण्ड तयार गर्दा व्यावसायिक उत्पादन गर्न सक्ने क्षमता, बजारको पहुँच, प्रस्तावकको लगानी प्रतिशत, वैदेशिक रोजगारीबाट फर्किएका युवा र अनुभव लगायतका विषयलाई ध्यान दिने ।
- फोकल टिमको सिफारिसको आधारमा जिल्ला वन कार्यालयले खेती विस्तारका लागि सम्झौता गर्ने ।
- स्वीकृत प्रस्तावको योजना बमोजिम तोकिएको प्रजातिको विउ वा विरुवा उत्पादन तथा गुणस्तरीय विउ वा विरुवा खरिद गर्न खेतिकर्तालाई जिल्ला वन कार्यालयले सहजिकरण गर्ने ।
- कार्य संचालन गर्न सम्झौतामा उल्लेख गरीकिसानले पाउने कुल अनुमानित रकमको ६० प्रतिशत रकम पहिलो किस्तामा उपलब्ध गराउने, बाँकी रकम कार्य प्रगतिको आधारमा भुक्तानी गर्ने ।
- कार्य सम्पन्न भएपछि कार्यस्थलको फोटो (जग्गाधनी वा सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको हकमा उपभोक्ता समेतको) पश्चात कार्यस्थलको अवस्थिति (जि.पि.एस) नक्सा, सुचक सहितका अन्य उपलब्धि/प्रभावकारिता सहितको आर्थिक र प्राविधिक प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत गर्नुपर्नेछ ।
- प्राविधिक प्रगति प्रतिवेदनमा समावेश हुनपर्ने कुराहरु
 - ✓ जग्गाको कित्ता नं., फिल्डबुक, नक्सा, क्षेत्रफल, GPSwaypoints

✓ वृक्षारोपण गरिएका विरुवा संख्या र प्रजाति

फोकल टिमले कार्यान्वयन कर्ता समेतको सहभागितामा अनुगमन, निरीक्षण गरी प्रतिवेदन दिनु पर्नेछ। कार्यक्रम कार्यान्वयन गरिएको स्थानमामुख्य विवरणहरु सहितको एउटा होर्डिङ्ग बोर्ड समेत राख्नुपर्नेछ।

४.२२. जडीबुटी उद्यम/प्रशोधन प्लाण्ट तथा भण्डारण केन्द्र स्थापना तथा सञ्चालन

- जिल्ला वन कार्यालयले पत्रिका, सार्वजनिक जनसम्पर्कका कार्यालय र पकेट क्षेत्रका गाविसमा १५ दिने सूचना प्रकाशन गरि प्रस्ताव आह्वान गर्ने।
- इच्छुक व्यवसायी, उद्यमी, सहकारी, सामुदायिक तथा कवुलियती वन समूह, वा जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ व्यावसायमा संलग्न किसानले प्रकाशित सूचना बमोजिम व्यावसायिक योजना सहित, प्लाण्ट स्थापना गर्ने क्षेत्रको चारकिल्ला सहित प्रस्ताव जिल्ला वन कार्यालयमा पेश गर्ने।
- प्राप्त प्रस्तावहरुको नियमानुसार मूल्याङ्कन गरी उपयुक्त प्रस्तावको छनौट गर्ने। प्रस्तावहरुको मूल्याङ्कन गर्दा कच्चा पदार्थ उपलब्धताको सुनिश्चितता, जडीबुटीको पकेट क्षेत्रमा उत्पादित पैदावारको प्रशोधन, लाभप्रद व्यावसायिक योजना, प्रस्तावकले कुल लगानीको न्यूनतम २० प्रतिशत वा सो भन्दा बढी लगानी गर्ने प्रस्ताव हुनु पर्ने।
- कार्य संचालन गर्न सम्भौतामा उल्लेखित भएअनुसार किस्तामा रकम अनुदान स्वरुप भुक्तानी गर्ने।
- कार्य सम्पन्न भएपछि प्रगतिमा निम्न कुराहरु समावेश गरिनुपर्नेछः
 - ✓ उद्यम संचालन गर्ने समूह, व्यक्ति, सहकारीको नाम,
 - ✓ स्थापना गरिएको प्लाण्टको फोटो,
 - ✓ उत्पादित सामाग्रीको नमुना,
 - ✓ लागत रकम,
 - ✓ रोजगारी सिर्जना (श्रमदिन),
 - ✓ प्लाण्टको अवस्थिति, जग्गाको कि.नं., जि.पि.एस. लोकेशन।

४.२३. जडीबुटी सम्बन्धी अनुगमन, समन्वय, प्रचार प्रसार

- जिल्लामा व्यावसायिक उत्पादन तथा प्रशोधनका लागि सम्भाव्य जडीबुटी प्रजाति र क्षेत्रको पहिचान (GIS Mapping) र अवस्था उल्लेखित अध्ययन प्रतिवेदन प्रकाशन। यसका लागि विनीयोजित बजेटको कम्तिमा ६० प्रतिशत रकम खर्च गर्ने।
- जडीबुटी उत्पादन, प्रशोधन र व्यवस्थापन सम्बन्धी जनचेतना मुलक सामाग्री प्रकाशन तथा प्रचार प्रसार गर्ने
- सरोकारवालाहरु सँग समन्वय बैठक तथा गोष्ठी सञ्चालन गर्ने।

४.२४. व्यवसायी, विज्ञ तथा लगानीकर्ता संयुक्त अवलोकन भ्रमण, अन्तर्क्रिया

- मूल्य श्रृंखलाका सरोकारवाला उत्पादक किसान/उद्यमी, जडीबुटी व्यवसायी, विज्ञ/प्रतिष्ठान र बजारसँग संयुक्तरुपमा मूल्य श्रृंखलाका तीनवटै क्षेत्र (उत्पादन, सर्कलन तथा प्रशोधन तथा बजार) को अध्ययन गर्ने गरी नेपाल र भारतका विभिन्न स्थानमा भ्रमण गरी सम्भावित साभेदारीमा सञ्चालन हुन सक्ने जडीबुटी उद्योग/परियोजना पहिचान गरी वन विभागमा पेश गर्ने।
- वन विभागले संयुक्त अवलोकन भ्रमण योजना तयार गरी कार्य सञ्चालन गर्ने। योजना तयार गर्दा: जडीबुटी प्रवर्द्धन गर्नका लागि सम्भाव्य सफल र उत्कृष्ट उत्पादन, बजार र प्रविधि, व्यावसायी किसान तथा उद्यमीको पहिचान गरी भ्रमणको लागि सिफारिस गर्ने।
- भ्रमण समाप्त भएपछि प्रतिवेदनमा अध्ययन गरिएका विषयवस्तु, समय तालिका, सहभागीको नामावली र फोटोहरु समावेश गर्ने।

४.२५. महत्वपूर्ण जडीबुटी प्रजातिको स्टार्टस अध्ययन

- वन विभाग, वनस्पति विभाग र त्रिभुवन विश्वविद्यालयको वनस्पतिशास्त्र केन्द्रीय विभागसँगको परामर्शबाट विदेश निकासी हुने, उच्च मूल्यका तथा व्यावसायिक र आर्थिक हिसावले महत्वपूर्ण प्रजातिको एकित गरी परामर्श सेवाबाट स्टार्टस अध्ययन गराई प्रतिवेदन प्रस्तुत गर्ने।
- वन विभागले सार्वजनिक खरिद नियमावली बमोजिमको प्रक्रिया अवलम्बन गरी सेवा प्रदायक संस्था मार्फत कार्यक्रम संचालन गर्ने।

ॡ.२ॢ. उऑऑ हलडलल ऑडीडुटी संकलन/डुरशुधन केनुदुर सुथलडनल
वन वलडुडलले डसकु कुडुडै कलरुडवलधल तडलर गरी सुुही डडुऑऑडड गनुँ ।

ॡ.२ॣ. ऑडीडुटी उऑऑ सुथलडनल (अनुड)

वन वलडुडलले डसकु कुडुडै कलरुडवलधल तडलर गरी सुुही डडुऑऑडड गनुँ ।

५. नेपाल व्यापार एकीकृत रणनीति (वन कार्यक्रम)

५.१. माउ रुख पहिचान र किटान (तेजपात)

माउ रुख छान्नुपर्ने प्रजातिहरू पाइने उपयुक्त ठाँउ र प्रजाति सुहाउदो स्थानको अवलोकन गर्नुपर्ने छ। अवलोकन गरे पश्चात् त्यो ठाँउका प्रजातिहरू माउ रुखका लागि उपयुक्त हुन्छ भन्ने लागेको ठाउँमात्र माउ रुख पहिचानका लागि किटान गर्नुपर्ने छ। माउ रुख पहिचान तथा किटान गर्दा छान्नुपर्ने प्रजातिका रुखहरू mature भएको, टुप्पो नसुकेको, future generation को लागि उपयुक्तभएको (Good seed दिनसक्ने खालको) 5D (dead, diseased, dying, decay, deformed) मुक्त, Physically and genetically superior tree पहिचान तथा किटान गर्नुपर्ने हुन्छ। यसरी पहिचान गरिएका रुखहरूलाई marking गर्नुपर्ने हुन्छ र सम्भव भएसम्म माउ रुखको GPS Point locate गर्नुपर्ने हुन्छ।

५.२. नमुना नतिजा तथा विधि प्रदर्शनीप्लट स्थापना(TSI/SLI)

जिल्ला वन कार्यालयले गै.का.व.पै.को प्रदर्शनी स्थल निर्माण गर्नको लागि गै.का.व.पै. व्यवसायसँग सम्बन्धित सबै सरोकारवालाहरूसँग छलफल गरी प्रदर्शनीस्थल बनाउन उपयुक्त ठाउँ छनौट गर्नुपर्ने छ। सो ठाउँ छनौट गरी सकेपछि प्रदर्शनी स्थल निर्माणका लागि के कस्ता खालका कार्यक्रमहरू गर्नुपर्ने हो सो पनि सरोकारवालाहरूसँगको छलफल पछि तय गर्नुपर्ने हुन्छ। कार्यक्रम पनि तय भइसकेपछि सो क्षेत्रको संरक्षण तथा व्यवस्थापनसँग सम्बन्धित क्रियाकलापहरू सञ्चालन गर्नुपर्ने हुन्छ।

५.३. संजालहरूलाई अनुदान सहयोग

निर्माण भएका संजालहरूले अनुदान प्राप्त गर्न सम्बन्धीत कार्यालयमा प्रस्ताव पेश गर्नुपर्नेछ। प्रस्ताव प्राप्त भए पश्चात् कार्यक्रमको आवश्यकता र औचित्यता हेरेर फोकल टिमको सिफारिसमा प्रस्तावहरू छनौट गर्नुपर्ने छ। यसरी छनौट भएका प्रस्तावहरूलाई अनुदानको रूपमा स्वीकृत कार्यक्रम अनुसार अफिस स्थापना, जनचेतना कार्यक्रम आदिको लागि रकम उपलब्ध गराउन सकिनेछ।

५.४. जडीबुटी भण्डारण अनुदान सहयोग

जडीबुटी भण्डारणको आवश्यक प्रविधि/परामर्श तथा उपकरण खरिदको लागि सम्झौता अनुसार अनुदान दिन सकिनेछ।

५.५. जडीबुटी बजारीकरण अनुदान सहयोग

जडीबुटी बजारीकरणको लागि आवश्यक प्रविधि/परामर्श, उपकरण खरिद तथा प्रचारप्रसारको लागि सम्झौता अनुसार अनुदान दिन सकिनेछ।

५.६. फोकल टिम गठन

जडीबुटी प्रजातिहरूको खेती विस्तार कार्यमा अवसर र सम्भावनाहरू अत्याधिक हुँदाहुँदै पनि यसको जोखिम पक्ष समेत उतिकै भएको हुँदा कुन कुन प्रजातिको खेती विस्तार गर्ने भनी सम्बन्धित क्षेत्रमा विशेष अनुभव प्राप्त बहुसरोकारवाला बीच व्यापक छलफल भई यकिन गर्नुपर्ने भएकाले यसका लागि विशेष ध्यान पुऱ्याई कार्य संचालन गर्ने, कार्यक्रमको नियमित अनुगमन गरी पृष्ठपोषण गर्ने तथा उत्कृष्ट कार्य गर्नेलाई प्रोत्साहन गर्नु अपरिहार्य रहेको सन्दर्भमा कार्यक्रम लागू भएका जिल्लाहरूमा निम्नानुसारका फोकल टिमहरू रहने व्यवस्था गरिएको छ। जिल्ला वन अधिकृतको अध्यक्षतामा जिल्ला विकास समितिको योजना अधिकृत, उद्योग वाणिज्य संघको प्रतिनिधि, घरेलु तथा साना उद्योग कार्यालय/समिति, जिल्ला आयुर्वेद अस्पताल/स्वास्थ्य केन्द्र, जडीबुटी व्यावसायी संघ प्रतिनिधि, सामुदायिक वन उपभोक्ता महासंघ प्रतिनिधि सदस्य र जिल्ला वन कार्यालयका विकास तथा योजना शाखा प्रमुख सदस्य सचिव रहने फोकल टिम गठन गरिनेछ।

६. वन्यजन्तु संरक्षणका लागि क्षेत्रीय सहयोग प्रवर्धन

६.१. बासस्थान प्रवर्धन हुने किसिमको वन व्यवस्थापन र पुनरोत्पादन संरक्षण/बृक्षारोपण कार्यक्रम

बाघको संभावित बासस्थानको पहिचान भएको क्षेत्रमा रहेको विभिन्न प्रजातिको regenerationको संरक्षणको व्यवस्था मिलाउने उक्त क्षेत्रलाई forest fire बाट बचाउनुका साथै सो क्षेत्रमा रहेका unwanted species हरुको व्यवस्थापन गर्ने । बाघ पाइने संभावित वन क्षेत्रमा वा उक्त क्षेत्रको surrounding मा खाली चौर, फाटफुट मात्र रुख विरुवा भएको स्थान (क्षेत्र) भएमा उपयुक्त (रुख विरुवा, घाँस रोपण, अम्रिसो, वाँस, गै.का.व.पै.) विरुवाहरुको उत्पादन गरी बृक्षारोपण गर्ने र सो को संरक्षणको व्यवस्था मिलाउने । यो कार्यक्रम संचालनको लागि आवश्यक बजेट सि.नं. १.१ अर्न्तगत समावेश गरिएको छ । कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात् प्रगतिमा निम्न बमोजिमका बुदांहरु समावेश भएको हुनुपर्नेछ ।

- Regenerationको अवस्था
- क्षेत्रफल, unwanted species
- बृक्षारोपण गरिएको क्षेत्रको नाम, क्षेत्रफल, प्रजातिहरु, नक्शा आदी ।

६.२. अपराधी तथा सन्दिग्ध व्यक्तिहरुको विस्तृत डाटा बेस (सम्भव भएमा फोटो समेत) अध्यावधिक गर्ने

सुराकीहरुको साथै आफ्नै पहलबाट जिल्ला वन कार्यालयहरुले बाघ लगायतका अन्य संरक्षित वन्यजन्तुहरुको चोरी शिकार/ तथा विक्री वितरण (आखेटोपहारहरु) हुने सम्भावित स्थानहरु पत्ता लगाउने र सोको GPS location सहितको digital database तयार गर्ने । प्राप्त सूचनाहरुको आधारमा बाघ लगायतका वन्यजन्तुहरुको चोरी शिकार तथा व्यापारमा संलग्न सन्दिग्ध व्यक्तिहरुको विस्तृत डाटा बेस (सम्भव भएमा फोटो समेत) जि. व. अ. वा निजले तोकेको सहायक वन अधिकृतले गोप्य रुपमा तयार गर्ने । आ.व. २०७०/७१ भन्दा अगाडि तयार भएका डाटाबेसहरुको हकमा सम्भव भएमा फोटो समेत डाटाबेसको अध्यावधिक गरी वन विभागमा उपलब्ध गराउने । यो कार्यक्रम संचालनको लागि आवश्यक बजेट सि.नं. २ अर्न्तगत समावेश गरिएको छ । कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात् प्रगतिमा निम्न बमोजिमका बुदांहरु समावेश भएको हुनुपर्नेछ ।

- जिल्लास्थित बाघको चोरी शिकार तथा व्यापार (आखेटोपहार) हुने स्थानहरुको विवरण (GPS location सहित)
- सन्दिग्ध व्यक्तिहरुको विस्तृत डाटाबेस

६.३. घाइते वन्यजन्तु संरक्षण तथा पुनः स्थापना कार्यक्रम

६.३.१. केज निर्माण

घाइते वन्यजन्तु संरक्षण तथा पुनः स्थापनाका लागि जिल्ला वन कार्यालयले जिल्लाको आवश्यकतानुसार केज निर्माण गर्नुपर्ने छ । कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात् केजको स्पेसिफिकेशन सहितको विवरण प्रगतिमा समावेश भएको हुनुपर्नेछ ।

६.३.२. वन्यजन्तुको लागि पानी पोखरी निर्माण

जिल्ला वन कार्यालयले जिल्लाको आवश्यकता अनुसार वन्यजन्तुको लागि पानी पोखरी निर्माण गर्नुपर्ने छ । कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात् पानी पोखरीको स्पेसिफिकेशन सहितको विवरण प्रगतिमा समावेश भएको हुनुपर्नेछ ।

६.३.३. आकस्मिक उपचार तथा आहार खर्च

जिल्लामा आकस्मिक उपचार तथा आहार खर्च आवश्यकता परेको खण्डमा जिल्ला वन कार्यालयले केन्द्रसँग सम्पर्क गर्नुपर्ने छ । सो को लागि केन्द्रले सम्बन्धित जिल्ला वन कार्यालयलाई वजेट उपलब्ध गराउने छ ।

६.३.४. वन्यजन्तु उद्धार

वन्यजन्तु उद्धारको आवश्यकता परेको खण्डमा जिल्ला वन कार्यालयले क्षेत्रीय वन निर्देशनालयसँग सम्पर्क गर्नुपर्ने छ । सो को लागि केन्द्रले सम्बन्धित जिल्ला वन कार्यालयलाई वजेट उपलब्ध गराउने छ । कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात् उद्धार गरिएका वन्यजन्तुहरुको नाम, संख्या, उद्धार गर्न परेको कारण आदि प्रगतिमा समावेश भएको हुनुपर्नेछ ।

६.४. मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व व्यवस्थापन

वन्यजन्तुबाट हुने क्षतिको राहत सहयोग निर्देशिका, २०६९ (पहिलो संशोधन, २०७२)बमोजिम गर्ने ।

६.५. वन्यजन्तु अपराध नियन्त्रण सम्बन्धी युवाहरुको संजाल निर्माण तथा परिचालन

सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको विधान अनुसार परिचालन हुनेगरी वन्यजन्तु अपराध नियन्त्रण टोली गठन गर्ने । आपसमा जोडिएका छिमेकी सामुदायिक वनका यस्ता टोली आपसमा सहकार्य गरी इलाका वन कार्यालयको समन्वयमा वन्यजन्तु अपराध नियन्त्रण सम्बन्धी क्रियाकलाहरु संचालन गर्ने । यस शीर्षक अन्तर्गत विनियोजित बजेट संयुक्त गस्ति, संचार, बैठक, खाजा, औषधि, टर्च लाइट जस्ता सामाग्रीहरु खरिदमा खर्च गर्न सकिनेछ ।

६.६. आखेटोपहार संरक्षण, भण्डारण तथा व्यवस्थापन

आखेटोपहार संरक्षण, भण्डारण तथा व्यवस्थापन क्रियाकलाप जस्तै आखेटोपहारको उपचार (Taxoderm), सुकाउने, भण्डारण, पूर्वाधार निर्माण/खरिद आदि कार्यहरुमा खर्च गर्ने ।

६.७. सुराकी परिचालन र जानकारी खरिद

सुराकी परिचालन कार्यविधि, २०७२ मा उल्लेख भएका कार्यहरुमा खर्च गर्न सकिनेछ ।

६.८. वनजन्य अपराध, सूचना, दसी प्रमाण संकलन, अनुसन्धान तथा मुद्दा दायरी

वनजन्य अपराध अनुसन्धान र तहकिकातको सिलसिलामा आइपर्ने कार्यहरु र अभियुक्त लाई मुद्दा दायर गर्दा आवश्यक पर्ने मसलन्द खर्च, वन अपराधीलाई पक्राउ गरी ल्याउन लैजान सवारी भाडा, अनुसन्धान खर्च साक्षी बकाउंदा लाग्ने खर्च, वकिलसंग परामर्श गर्दा खाजा जस्ता आर्थिक व्ययभार पर्ने खर्चको लागि जि. व. का. ले रकम उपलब्ध गराउनुपर्नेछ । कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात् प्रगतिमा निम्न बमोजिमका बुदांहरु समावेश भएको हुनुपर्नेछ :

- अभियुक्तहरुको फोटो सहितको विवरण,
- वरामद भएको वन पैदावारहरुको विवरण,
- तहकिकातमा भएको खर्चको विवरण ।

६.९. समन्वय बैठक

वन्यजन्तुहरुकोसंरक्षणको लागि जिल्लास्थित line agencies हरु, वन वन्यजन्तु अपराध नियन्त्रणसंग सम्बन्धित सरोकारवालाहरु, सुरक्षा निकाय, नागरिक समाज, पत्रकार समेतको सहभागितामा समन्वय बैठक सञ्चालन गर्नुपर्नेछ । अन्तर जिल्ला कार्यक्रम तथा सुरक्षा बैठकको हकमा क्षेत्रीय वन निर्देशनालयद्वारा संयोजकको भूमिका निर्वाह हुनेछ ।

६.१०. वन्यजन्तु संरक्षण प्रोत्साहन पुरस्कार

वन्यजन्तु संरक्षण सम्बन्धी कार्यमा उल्लेखनीय कार्य गर्ने कर्मचारी, व्यक्ति, संस्था, समूह लाई योगदानको मूल्यांकन गरी विनियोजित बजेटको परिधिभित्र रही पुरस्कार प्रदान गर्न सकिनेछ ।

विविध

- स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रममा उल्लेखित लक्ष्य र बजेटलाई आधार मानी चौमासिक विभाजन गरिएको छ । वार्षिक लक्ष्य र चौमासिक लक्ष्यमा फरक परेमा वार्षिक लक्ष्य र बजेटको आधारमा कार्यक्रम संचालन गर्ने ।

अनुसूची-१
निजी क्षेत्रमा वृक्षारोपण गर्नेका लागि प्रस्ताव

श्रीमान् जिल्ला वन अधिकृतज्यू ,
.....

विषय: वृक्षारोपणको लागि प्रस्ताव

महोदय,

मैले यस आ.व.....मा निजी वृक्षारोपण गर्ने योजना बनाएको हुँदा तहाँ कार्यालयबाट आवश्यक सहयोगको लागि निम्न विवरण सहितको प्रस्ताव पेश गरेको छु ।

प्रस्ताव विवरण

१. प्रस्तावकको नाम.....ठेगाना: जिल्ला.....गा.वि.स.....वडा नं.....टोल.....

२. वृक्षारोपण गर्ने जग्गाको विवरण:

(क) जग्गाधनीको नाम.....

(ख) जग्गा भएको ठाउँको गा.वि.स.....वडा नं.....

(ग) कित्ता नं.....

(घ) क्षेत्रफल..... वृक्षारोपण गर्न चाहेको क्षेत्रफल.....

३. वृक्षारोपण गर्न चाहेको

| प्रजाति | संख्या |
|---------|--------|
| | |
| | |
| | |

४. वृक्षारोपण अन्तरवालीको रुपमाव लाबन्दीको रुपमा

५. वृक्षारोपणको संरक्षण कसरी गर्ने

तारबार गरेर हेरालु राखेर अन्य व्यवस्था(खुलाउने)

६. वृक्षारोपणको अनुमानित लागत: रु.....

निवेदकको नाम.....

दस्तखत.....

टेलिफोन नं.....

अनुसूची:-२
विरुवा वितरण रजिष्टरको ढाँचा

| विरुवाको माग | | विरुवा वितरण | | | | | | | |
|---|---------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|---|--------------------------------|-----------------------|
| व्यक्ति वा संस्था वा समूहको नाम, ठेगाना | विरुवा संख्या | प्रजाति/संख्या | प्रजाति/संख्या | प्रजाति/संख्या | प्रजाति/संख्या | प्रजाति/संख्या | प्रयोजन (निजी वन, सार्वजनिक वन, नहर सडक किनार वृक्षारोपण) | वृक्षारोपण गर्ने स्थान र कि.नं | विरुवा लानेको फोन नं. |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |

अनुसूची:-३
निजी वन अनुगमन फाराम

१. वनधनीको नाम.....ठेगाना: जिल्ला.....गा.वि.स.....वडा नं.... टोल.....

२. वृक्षारोपण गर्ने जग्गाको विवरण:

(क) जग्गाधनीको नाम..... (ख) जग्गा भएको ठाउँको गा.वि.स.....वडा नं.....

(ग) कित्ता नं..... (घ) क्षेत्रफल..... (ङ) जग्गाधनीको कुल जग्गाको क्षेत्रफल.....

३. वृक्षारोपणको विवरण: क) वृक्षारोपण गरेको वर्ष.....

(ख) वृक्षारोपण भएका

प्रजाति

संख्या

.....

.....

.....

.....

४. वृक्षारोपण अन्तरवालीको रूपमा वा चक्लाबन्दीको रूपमा

५. वृक्षारोपण गरिएका जग्गाको विवरण

(क) वृक्षारोपण गरिएको जग्गा कस्तो हो: खेत (Low land) बारी (Upland) लो पाखो उकास

(ख) वृक्षारोपण गरिएको जग्गाको अन्य विवरण (माटो मलिलो, चिम्टाईलो, बलौटे के हो, जग्गाको अन्य विशेषताहरु)

६. वृक्षारोपणको संरक्षण कसरी गरिएका छ।

(क) तारबार गरेर हेरालु राखेर अन्य व्यवस्था

(ख) बाँचेका विरुवाको संख्या/प्रतिशत...../.....

(ग) वृक्षारोपण संरक्षणको अवस्था कस्तो छ (विवरण उल्लेख गर्ने)

७. वृक्षारोपणको अनुमानित लागत: रु.....

८. वनको वृद्धि तथा गुणस्तर: वनवालीलाई समग्रमा तीन व्यास (डायमिटर) र उचाई श्रेणीमा राखी औषत व्यास र उचाइ उल्लेख गर्ने।

(क) व्यास र उचाईको विवरण

| श्रेणी | औषत व्यास (डायमिटर) | औषत उचाई | रुख/विरुवा संख्या/प्रतिशत | वृक्षारोपणको समग्र गुणस्तर |
|--------|------------------------|----------|------------------------------|-------------------------------|
| उच्च | | | | राम्रो/मध्यम/न्यून |
| मध्यम | | | | |
| निम्न | | | | |

(ख) अवलोकनबाट देखिएका अन्य विवरण (अवलोकनकर्ताको मूल्याङ्कन)

९. जग्गाधनीको धारणा

(क) जग्गाधनीको सन्तुष्टी: सन्तुष्ट सामान्य असन्तुष्ट

(ख) जग्गाधनीको प्रतिक्रिया (जग्गाधनीको चाहना, योजना, समस्या, गुनासाहरु)

१०. अनुगमनकर्ताको निष्कर्ष:

अनुगमनकर्ताको दस्तखत

नाम.....:

पद.....

मिति.....

अनुसूची:-४
विरुवा संरक्षण रजिष्टर

| व्यक्ति वा संस्था वा समूहको नाम | प्राप्त गरेको विरुवा संख्या | प्रयोजन (निजी वन, सार्वजनिक वन, नहर सडक किनार वृक्षारोपण) | वृक्षारोपण गरेको विरुवा संख्या | पहिलो वर्ष बाँचेको विरुवा संख्या | | | | | | दोस्रो वर्ष बाँचेको विरुवा संख्या | | तेश्रो वर्ष बाँचेको विरुवा संख्या | | कैफियत |
|---------------------------------|-----------------------------|---|--------------------------------|----------------------------------|---------|-----|-------|-------|------|-----------------------------------|-----|-----------------------------------|-----|--------|
| | | | | भदौ | कार्तिक | पौष | फागुन | बैसाख | असार | पौष | जेठ | पौष | जेठ | |
| | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | |